इंद्रधनुष

हिंदी, स्तर-3

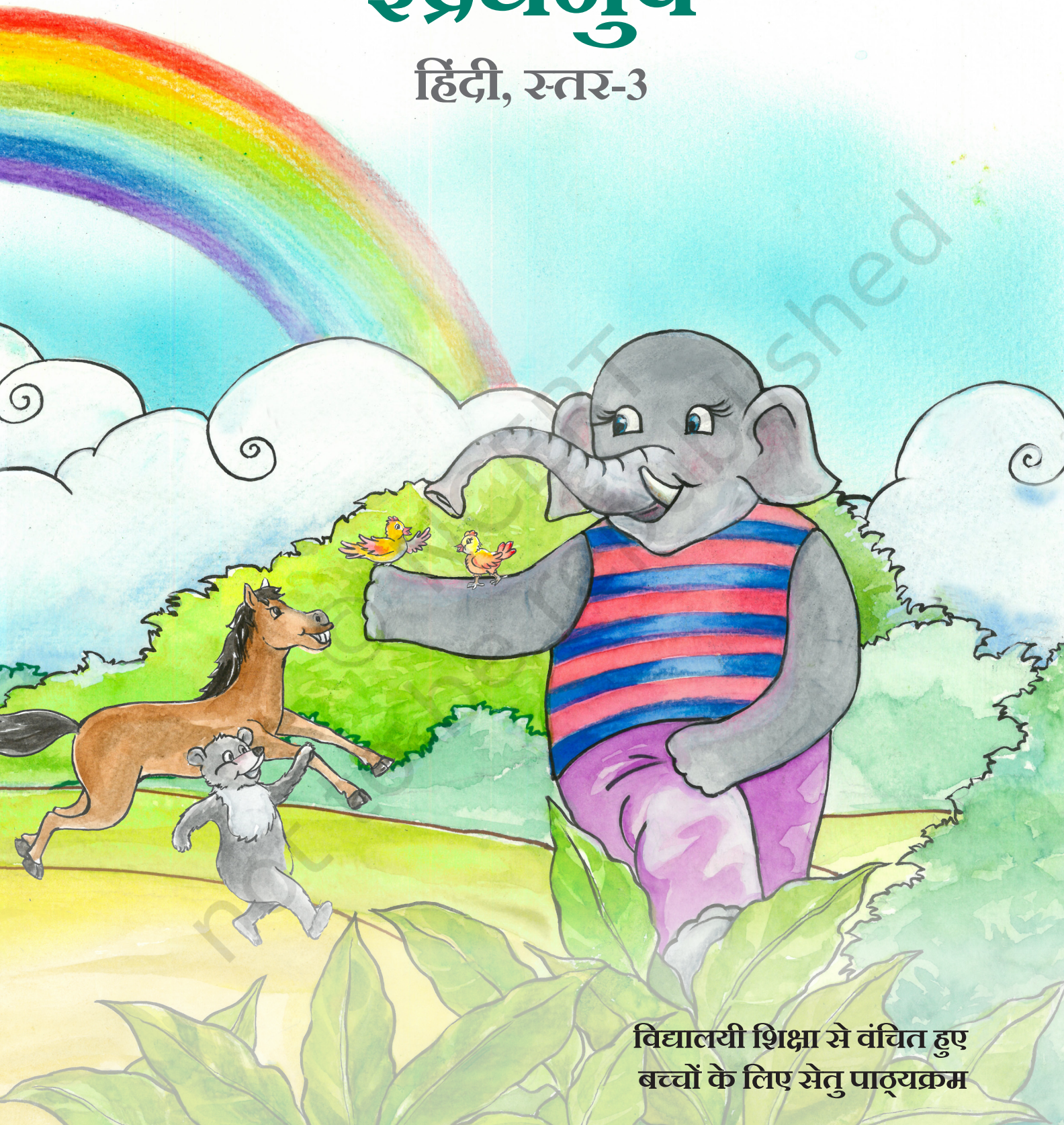

विद्यालयी शिक्षा से वंचित हुए
बच्चों के लिए सेतु पाठ्यक्रम

© NCERT not to be republished

प्यारे बच्चो!

यदि कोई आपको अनुचित ढंग से स्पर्श करे और यह स्पर्श आपको अच्छा न लगे तो, आप चुप न रहें। आप

1. स्वयं को इसका दोष न दें;
2. इस बारे में किसी ऐसे व्यक्ति को बताएँ जिस पर आप भरोसा करते हो;
3. आप **पॉक्सो ई.बॉक्स** के माध्यम से राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग को भी इस बारे में सूचित कर सकते हैं।

जब आपको कोई अनुचित ढंग से स्पर्श करता है तो आपको बुरा लग सकता है, आप दुविधाग्रस्त और असहाय अनुभव कर सकते हैं
आपको ''बुरा'' अनुभव करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आपकी गलती नहीं है

पॉक्सो ई.बॉक्स NCPCR@gov.in पर उपलब्ध है।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

यदि आपकी आयु 18 वर्ष से कम है और आप मुसीबत में हैं अथवा दुविधाग्रस्त हैं अथवा आपके साथ दुर्व्यवहार किया गया है अथवा संकट में हैं अथवा किसी ऐसे बच्चे को जानते हैं...

1098 पर कॉल करें...क्योंकि कुछ अच्छे नंबर जीवन बदल देते हैं।

चाइल्ड लाइन 1098 - विपत्ति में बच्चों के लिए 24 घंटे नि:शुल्क राष्ट्रीय आपातकालीन फ़ोन सेवा, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के सहयोग से चाइल्ड लाइन इंडिया फ़ाउंडेशन की पहल है।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

© NCERT not to be republished

इंद्रधनुष

स्तर-3

© NCERT not to be republished

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

23090 – इंद्रधनुष
हिंदी, स्तर-3, सेतु पाठ्यक्रम

ISBN 978-93-5292-353-3

प्रथम संस्करण
नवंबर 2020 अग्रहायण 1942

PD 2T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2020

₹ 185.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा लक्ष्मी प्रिंट इंडिया, 519/1/23, संसार इंडस्ट्रियल कॉम्पलैक्स, दिलशाद गार्डन, दिल्ली 110 095 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा, उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फ़ीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी) : *विपिन दीवान*
संपादन सहायक : *ऋषिपाल सिंह*
उत्पादन सहायक : *प्रकाश वीर सिंह*

आवरण एवं चित्रांकन
सीमा जबीं हुसैन

© NCERT not to be republished

आमुख

नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के क्रियान्वयन से शिक्षा को देखने और उसके बारे में बात किए जाने की शैली में एक आधारभूत परिवर्तन आया है। इस अधिनियम ने उन सभी बच्चों की अभिलाषाओं और सपनों को पूरा करने का अवसर प्रदान किया है जो या तो कभी स्कूल गए ही नहीं या जिन्होंने किन्हीं कारणों से अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी नहीं की। शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 स्कूली शिक्षा से वंचित ऐसे सभी बच्चों को उनकी आयु के अनुरूप कक्षाओं में प्रवेश के अवसर देता है और प्राथमिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तब तक उनकी सहायता करना जारी रखता है, जब तक वे अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी नहीं कर लेते।

उन सभी बच्चों को जो किसी कारणवश स्कूल से वंचित रह गए या कुछ समय तक विद्यालय जाने के पश्चात विद्यालय छोड़ चुके हैं, विद्यालय के विस्तार क्षेत्र में लाने के लिए शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अनुच्छेद 4 में एक विशेष प्रावधान किया गया है। इस अनुच्छेद में उल्लिखित है — "जहाँ, छह वर्ष से अधिक की आयु के किसी बालक को किसी विद्यालय में प्रवेश नहीं दिया गया है या प्रवेश तो दिया गया है किंतु उसने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी नहीं की है, तो उसे उसकी आयु के अनुसार समुचित कक्षा में प्रवेश दिया जाएगा।" इसी संदर्भ में अनुच्छेद आगे कहता है — "परंतु जहाँ किसी बालक को उसकी आयु के अनुसार समुचित कक्षा में प्रवेश दिया जाता है, वहाँ उसे अन्य बालकों के समान होने के लिए, ऐसी रीति में और ऐसी समय-सीमा के भीतर, जो विहित की जाए, विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने का अधिकार होगा।"

उल्लेखनीय है कि स्कूल से वंचित बच्चों का समूह एक विजातीय समूह है जिनके अधिगम स्तर, आयुवर्ग, सामाजिक, भावनात्मक व पारिवेशिक संदर्भों में विभिन्नता होगी। इस मुद्दे पर ध्यान देने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) ने आदर्श सेतु पाठ्यक्रम विकसित किया है जिसे अलग-अलग राज्य अपने-अपने स्थानीय संदर्भों के अनुकूल अपना सकते हैं।

सेतु पाठ्यक्रम का प्रारूप चार स्तरों पर तैयार किया गया है। स्तर-1 नवारंभ (रेडीनेस भाग 1 एंव भाग 2) है, जो बच्चों को आनंददायक गतिविधियों के द्वारा शुरुआती शिक्षा के लिये तैयार करता है। स्तर-2 में कक्षा 1–2 के अंग्रेज़ी, हिंदी, गणित के अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति हेतु शिक्षण सामग्री का निर्माण किया गया है। स्तर-3 में कक्षा 3–5 के हिंदी, अंग्रेज़ी, गणित और पर्यावरण अध्ययन के अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति हेतु शिक्षण सामग्री

© NCERT not to be republished

का निर्माण किया गया है। स्तर-4 में कक्षा 6 से 8 के सभी विषय क्षेत्रों — अंग्रेज़ी, हिंदी, गणित, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान के अधिगम प्रतिफल के आधार पर शिक्षण सामग्री निर्मित की गयी है।

सेतु कार्यक्रम में प्रयोग की जाने वाली शैक्षणिक पद्धतियाँ विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में बच्चों की भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं पर ध्यान देने का प्रयास करती हैं।

इस पाठ्यक्रम के विकास और विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में इसके पूर्व परीक्षण में शिक्षकों की सहभागिता से ही इस पाठ्यक्रम को उपयोग सुलभ (यूज़र फ्रेंडली) बनाना संभव हो सका है और यह पाठ्यक्रम विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में आने वाले बच्चों की भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं के लिए अधिगम की कमियों को पूरा करने योग्य बन सका है। इस पुस्तक के विकास में सहयोगी सभी विशेषज्ञों के प्रयास प्रशंसनीय है। पुस्तकों के पुन: अवलोकन और सुधार के लिए सुझावों और समीक्षाओं का हम स्वागत करते हैं।

हृषिकेश सेनापति
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

सितंबर 2020
नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

प्राक्कथन

'विद्यालयी शिक्षा से वंचित हुए बच्चे' (OoSC; आउट ऑफ स्कूल चिल्ड्रेन) से तात्पर्य 6–14 वर्ष की आयु के उस बच्चे से है, जिसका कभी किसी प्राथमिक विद्यालय में नामांकन नहीं हुआ हो या नामांकन के पश्चात जो अनुपस्थित रहने के कारणों की बिना किसी पूर्व सूचना के 45 दिन या उससे अधिक दिनों से विद्यालय में अनुपस्थित हो (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)।

बच्चों को उनकी आयु के उपयुक्त कक्षाओं में लाकर शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अनुच्छेद 4 में विशेष प्रशिक्षण के प्रावधान किए गए हैं। शिक्षा का अधिकार अधिनियम कहता है कि विशेष प्रशिक्षण की अवधि कम से कम तीन माह की होगी जिसे अधिकतम दो वर्ष तक बढ़ाया जा सकेगा। विशेष प्रशिक्षण के दौरान बच्चों की अधिगम प्रगति का नियतकालीन आकलन होगा। प्रवेश स्तर का आकलन तथा मानदंड ही प्रत्येक मामले में विशेष प्रशिक्षण की अवधि सुनिश्चित करेगा। तत्पश्चात ही आयु उपयुक्त कक्षा में बैठने की व्यवस्था होगी।

अधिकांश राज्यों ने अपने-अपने राज्यों की भाषा में सेतु पाठ्यक्रमों का निर्माण किया है। शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् से नमूने के तौर पर एक ऐसे सेतु पाठ्यक्रम का निर्माण करने के लिए कहा जो 'स्कूल छोड़ने वाले' और 'कभी स्कूल में नामांकित न होने वाले', दोनों प्रकार के बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके।

नमूने के तौर पर बना सेतु पाठ्यक्रम चार स्तरों में विकसित किया गया है—

स्तर-1 — नवारंभ (रेडीनेस) भाग 1 एवं भाग 2

यह स्तर भाग 1 एवं भाग 2 में विभाजित है जो व्यावहारिक गतिविधियों जैसे— मिलान करना, छाँटना, वर्गीकरण करना, समूह बनाना, तुकबंदी व गीत, कहानी कहना, शैक्षणिक खेल, डॉमिनोज़, फ्लैश कार्ड्स, भाषा और गणित की गतिविधियाँ, चित्र बनाना, छोटे-छोटे परियोजना कार्य आदि के लिए अवसर प्रदान करता है। यह स्तर आनंददायक अधिगम प्रदान करता है और बच्चों को स्वयं को विद्यालय की समय-सारणी के अनुसार ढालने में सहायता करता है। शिक्षकों को भी बच्चों के साथ घनिष्ठता बनाने का समय मिलता है।

© NCERT not to be republished

स्तर-2

इस स्तर में कक्षा 1 से 2 तक के अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति हेतु शिक्षण सामग्री निर्मित की गयी है। इस स्तर में अंग्रेज़ी, हिंदी और गणित तीन विषयों को शामिल किया गया है। यह स्तर भाषा अधिगम और प्रारंभिक गणित के लिए एक आधार प्रदान करता है क्योंकि इसी प्रथम चरण पर आगे की अधिगम प्रक्रिया आधारित होती है। इस स्तर के अंत में विद्यार्थी को कक्षा-2 की मुख्यधारा में लाया जा सकता है।

स्तर-3

इस स्तर में कक्षा 3 से 5 तक के अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति हेतु शिक्षण सामग्री निर्मित की गयी है। इसके अंतर्गत आने वाले विषय हैं— अंग्रेज़ी, हिंदी, गणित और पर्यावरण अध्ययन। इस स्तर के अंत में विद्यार्थी को कक्षा-5 की मुख्यधारा में जोड़ा जा सकता है।

स्तर-4

इस स्तर में कक्षा 6 से 8 के अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति हेतु शिक्षण सामग्री निर्मित की गयी है। इसके अंतर्गत आने वाले विषय हैं— अंग्रेज़ी, हिंदी, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान। इस स्तर के अंत में विद्यार्थी को कक्षा-8 की मुख्यधारा में लाया जा सकता है।

स्तर-1 (नवारंभ) को छोड़कर प्रत्येक स्तर को पाँच भागों नैदानिक परीक्षण, चरण 1— आधारभूत (बेसिक), चरण 2— मध्यवर्ती, चरण 3— स्तर के उपयुक्त तथा आकलन में विकसित किया गया है—

नैदानिक परीक्षण

प्रत्येक स्तर के प्रारंभ में एक नैदानिक परीक्षण होगा जिसके तीन योग्यता चरण होंगे। विद्यार्थी को किस योग्यता चरण में रखा जाए, यह उसके कार्य प्रदर्शन से निश्चित किया जायेगा।

चरण 1— आधारभूत (बेसिक)

आधारभूत चरण का अध्ययन शुरू करने से पूर्व विद्यार्थी को नवारंभ मॉड्यूल का अध्ययन करना होगा। यदि विद्यार्थी नवारंभ मॉड्यूल की समझ रखते हैं, तो इसके पश्चात ही उन्हें आधारभूत चरण से संबंधित विषयवस्तु का अध्ययन कराया जाए। इस चरण को पूर्ण करने के बाद ही मध्यवर्ती चरण की समझ विकसित की जाए।

© NCERT not to be republished

चरण 2— मध्यवर्ती

वे बच्चे जिन्होंने आधारभूत चरण की समझ बना ली है, उन्हें मध्यवर्ती चरण में ऐसी विषयवस्तु से परिचित कराया जाता है जो कक्षानुरूप योग्यता हासिल करने में मदद करती है। एक बार बच्चे इस चरण की विषयवस्तु के प्रति दक्षता प्राप्त कर लेते हैं तो उन्हें स्तर के उपयुक्त चरण की ओर अग्रसर किया जाता है।

चरण 3— स्तर के उपयुक्त

यह चरण बच्चे को उसकी आयु अनुरूप कक्षा में पहुँचाने के लिए सहायक होता है। इस चरण में अध्ययन के पश्चात बच्चे को आयु अनुरूप/मुख्यधारा की कक्षा में भेजा जाता है। अत: इस स्तर के अंत तक बच्चे को संबंधित स्तर की योग्यताएँ प्राप्त हो जाती हैं।

आकलन

हर विषय के अंत में यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चे ने कक्षा उपयुक्त स्तर में सीखने के प्रतिफल प्राप्त कर लिये हैं, एक आकलन प्रपत्र दिया गया है।

अधिगम प्रतिफल ही सेतु कार्यक्रम के विकास का आधार है। प्रत्येक स्तर में शिक्षकों के लिए सुझाव और आकलन के तरीके भी निहित हैं।

सुनीति सनवाल
प्रोफ़ेसर एवं *विभागाध्यक्ष*
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
रा.शै.अ.प्र.प.

यह सेतु पाठ्यक्रम, यद्यपि शिक्षा के अधिकार अधिनियम, 2009 के अंतर्गत विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों के लिए विकसित किया गया है, किंतु इस सेतु पाठ्यक्रम का उपयोग कोविड-19 की परिस्थितियों के बाद विद्यालय आने वाले बच्चों के सीखने के स्तर में आए अंतराल (लर्निंग गैप) को पूरा करने के लिए भी किया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में** व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

© NCERT not to be republished

शिक्षकों से संवाद

अध्यापक साथियो, हिंदी की पाठ्य सामग्री आपके हाथ में है। यह सामग्री बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने एवं अन्य भाषायी कौशल विकसित करने के लिए सहायक सामग्री के रूप में है। इसे उपयोग में लाने से पहले भाषा शिक्षण संबंधी कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों को दोहराना बहुत ज़रूरी है, जैसे कि—

- नये शब्दों और मुहावरों का बोलचाल की भाषा में प्रयोग करने से भाषा समृद्ध होगी।
- बच्चे अपनी कल्पना से कहानी एवं कविताएँ लिखें। इसके लिए उनके स्तर से जुड़े विषय देकर उन्हें लिखने के लिए प्रेरित करें।
- पाठ का वाचन विराम चिह्नों को ध्यान में रखकर करें। इस पर बल दें।
- समय-समय पर पाठ्यपुस्तक के पाठों से व्याकरण बिंदु पहचानने को कहें, जिससे व्यावहारिक व्याकरण की पकड़ अच्छी होगी।
- पाठ से संबंधित अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने के लिए समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ व अन्य पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करें।
- विभिन्न गतिविधियों द्वारा भाषा को रुचिकर बनाने का प्रयास करें। बच्चे खेल-खेल में सीखेंगे।
- नये शब्दों के अर्थ जानने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करने को प्रेरित करें।
- हिंदी भाषा में वर्तनी और उच्चारण का महत्वपूर्ण स्थान है, अत: वर्णों/शब्दों के शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। वर्तनी के प्रति सचेत रहें।
- पाठ पर आधारित प्रश्नों के उत्तर पहले मौखिक रूप से फिर लिखित रूप से करवाएँ।
- बच्चों को अपने विचार व अनुभव व्यक्त करने का पर्याप्त अवसर दें। अपने परिवेश से सीखे शब्दों का प्रयोग करने की स्वतंत्रता देने से विचार प्रवाह में बाधा उत्पन्न नहीं होगी।
- सहज, सरल और शिष्ट भाषा का प्रयोग करने से व्यक्तित्व का विकास होगा।

प्रस्तुत सामग्री उपर्युक्त सभी सिद्धांतों पर विश्वास रखती है। इसलिए यह ज़रूरी है कि पठन-लेखन कौशलों के विकास के लिए जो भी तकनीकें, युक्तियाँ अपनायी जाएँ, उनमें इन सभी सिद्धांतों का पूरी तरह से ध्यान रखा जाए।

© NCERT not to be republished

यह पठन सामग्री पठन कौशल विकसित करने की इस बहुप्रचलित प्रणाली का विरोध करती है कि चार्ट पेपर या किसी कायदे की सहायता से बच्चों से वर्णमाला का वाचन करवाया जाएँ, फिर एक-एक अक्षर कॉपी में कई-कई बार लिखवाया जाए। यह सामग्री माँग करती है कि बच्चों को उनके अपने परिवेश में उपलब्ध संदर्भों, चित्रों और मुद्रित/लिखित सामग्री से परिचित करवाया जाए। उनके अंदर अपने विचार और अनुभव साझा करने की जो उत्सुकता है, उसे जगाया जाए और अवसर देकर संतुष्ट किया जाए। उनमें दूसरों की बात सुनने और दूसरों से सुनी गई बातों पर अपनी टिप्पणी देने के लिए परिवेश सृजित किया जाए। इस सामग्री में आप पाएँगे कि प्रारंभिक पृष्ठों पर कुछ चित्र दिए गए हैं। ये चित्र बच्चों के अवलोकन, संवाद, प्रश्न-उत्तर करने के कौशलों को विकसित करेंगे और कब सहजता व सरलता से पढ़ने-लिखने की दुनिया में प्रवेश करा देंगे कि पता ही न चलेगा। हम यह जानते हैं कि 'पढ़ना' महज लिखे हुए का उच्चारण करना ही नहीं, बल्कि उसके अर्थ को समझना और उससे जुड़ना भी है।

यह सामग्री माँग करती है कि दिए गए चित्रों पर मुक्त रूप से बात करने के असीमित अवसर दिए जाएँ और उन्हें आधार बनाते हुए पढ़ने-लिखने की दुनिया में औपचारिक रूप से कदम रखवाया जाए। यहाँ पर 'औपचारिक' शब्द का इस्तेमाल इसलिए किया गया है कि बच्चे अपने घर, गली, मोहल्ले में तरह-तरह की छपी/लिखी सामग्री देखते हैं, जैसे— विज्ञापन, किताबें, पैम्फ़लेट, मसालों-दवाइयों आदि पर लिखित सामग्री। कई शब्दों-वाक्यों को तो वे 'पढ़ना' सीखने से पहले ही पढ़ना जान चुके होते हैं, जैसे— घर के पास बने 'सार्वजनिक शौचालय' शब्द को जब वे बार-बार देखते हैं, लोगों के मुँह से सुनते हैं तो जान जाते हैं कि अमुक स्थान पर 'सार्वजनिक शौचालय' लिखा है। इस तरह वे अनेक शब्दों को पढ़ने की क्षमता न रखते हुए भी पढ़ना जानते हैं। लेखन भी उनके जीवन में पहले से ही शामिल होता है। वे तरह-तरह के चित्र उकेरते हैं, अपनी बात कहने के लिए तरह-तरह की आड़ी-तिरछी लकीरें खींचते हैं, फिर उन्हें देखकर कुछ-कुछ बोलते भी हैं। उनकी यह शैली संकेत करती है कि 'लिखने' का भाव भी उनके भीतर पहले से ही मौजूद है।

अब वापस हम चित्रों पर आते हैं। इन चित्रों पर संवाद, वर्णन आदि करते हुए वाक्यों और शब्दों पर आइए। यह सामग्री आपका ध्यान इस तरफ दिलाना चाहेगी कि बच्चों को कहानी, कविता, पहेली आदि की मदद से पढ़ना सिखाएँ। रोचक कहानी-कविताएँ पढ़ना, सीखने के लिए अपने-आप में पर्याप्त कलेवर प्रस्तुत करता है।

© NCERT not to be republished

शिक्षकों के लिए सुझाव

शिक्षकों से यह सुनिश्चित करने की अपेक्षा की जाती है कि—

- बच्चे की गोपनीयता एवं निजता का अधिकार सुरक्षित रहे। बच्चों की निजी पृष्ठभूमि एवं क्षमता के प्रति संवेदनशीलता बरतते हुए उनके द्वारा साझा की गई बातों व परिस्थितियों को सार्वजनिक रूप से व्यक्त करने से बचें।
- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बालक-बालिका (छात्र-छात्रा) को समान रूप से अवसर उपलब्ध हों।
- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चे विभिन्न जीवन-कौशलों से परिचित हों। कक्षा में प्रत्येक बच्चा चर्चा में शामिल हो और उसे खुद को अभिव्यक्त करने का अवसर मिले। कक्षा-कक्ष में ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करें जिससे बच्चों में निर्णय लेने की क्षमता, समीक्षात्मक विचार की अभिव्यक्ति, सृजनात्मक कार्यों को प्रोत्साहन मिले तथा उनमें समानुभूति, परस्पर सम्मान देने की भावना का विकास हो।
- शिक्षण प्रक्रिया में ऐसी गतिविधियाँ सम्मिलित की जाएँ जिससे प्रत्येक बच्चा विषयानुरूप सीखने के प्रतिफल को प्राप्त कर सके।
- नैदानिक परीक्षण पूर्ण रूप से कागज़-कलम पर ही आधारित न होकर अन्य आकलन विधाओं (मौखिक, अवलोकन, चर्चा आदि) को भी अपने में शामिल करता हो।
- प्रत्येक विषय में बच्चे के स्तर की पहचान के लिए नैदानिक परीक्षण अथवा परीक्षा-पूर्व जाँच की विधियों का प्रयोग किया जाए। मान्यताओं या पूर्व-धारणाओं के आधार पर बच्चों के स्तरों का निर्धारण करने के बजाय प्रत्येक बच्चे के नैदानिक परीक्षण द्वारा उसके स्तर का निर्धारण किया जाना बेहतर होगा।
- प्रत्येक बच्चे के सीखने के आधार पर उनके प्रोफ़ाइल तैयार कर, उसमें समय-समय पर बच्चे द्वारा अर्जित की गई उपलब्धियों को दर्ज करें।
- शिक्षक इस बात पर ध्यान दें कि बच्चे विभिन्न विषयों में अलग-अलग स्तरों पर पाये जा सकते हैं। अत: विषयानुरूप विभिन्न स्तरों के आधार पर कक्षा-कक्ष में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को अपनाया जाना बेहतर होगा।

© NCERT not to be republished

पढ़ूँगी, बढ़ूँगी, सपनों के आसमान में
ऊँची उड़ूँगी, बस मौका चाहिए मुझे,
अपनी राह खुद चुनूँगी

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

सदस्य

शारदा कुमारी, *प्रधानाध्यापक*, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के. पुरम, नयी दिल्ली

सदस्य समन्वयक

सुनीति सनवाल, *प्रोफ़ेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, उन सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं की आभारी है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में योगदान दिया। विद्यालयी शिक्षा अधूरी छोड़कर विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में वापस प्रवेश लेने वाले बच्चों के बीच इस पुस्तक का क्षेत्र परीक्षण करके इसमें आवश्यक सुधार किये गए। हम उन सभी विद्यालयों, शिक्षकों और विद्यार्थियों का आभार प्रकट करते हैं जिनकी वजह से पुस्तक की गुणवत्ता में सुधार संभव हुआ।

परिषद्, पुस्तक विकास कार्यशाला में योगदान एवं चर्चा के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के विषय विशेषज्ञों — ऊषा शर्मा, *प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग; मंजुला माथुर, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), सी.आई.ई.टी.; माधवी कुमार, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), सी.आई.ई.टी.; सरला वर्मा, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, सोनिका कौशिक, *सीनियर कंसल्टेंट*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग; तथा अक्षय दीक्षित, *अध्यापक*, दिल्ली प्रशासन; कुसुम लता अग्रवाल, *अध्यापिका* (सेवानिवृत्त), दिल्ली प्रशासन; एवं रमा गुप्ता, *अध्यापिका* (सेवानिवृत्त), सरदार पटेल विद्यालय; के योगदान के प्रति आभार प्रकट करती है।

परिषद्, उन रचनाकारों के प्रति भी आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ इस पुस्तक में शामिल की गई हैं। एकलव्य प्रकाशन, भोपाल और एस.सी.ई.आर.टी.; दिल्ली की पुरानी किताबों से भी इस पुस्तक में रचनाएँ ली गई हैं, इसके लिए परिषद् उनकी आभारी है।

पुस्तक विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए परिषद् अक़्सा, वसुधा शर्मा, श्रुति महाजन, *जे.पी.एफ.*; और हिमांशु मलिक, चंचल रानी, सपना विश्वास *टाइपिस्ट*; प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के प्रति आभार व्यक्त करती है। पुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए परिषद् अपने प्रकाशन प्रभाग एवं अतुल मिश्र, *सहायक संपादक* (संविदा); और सुरेंद्र कुमार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. सेल; मोहम्मद आतिर, नेहा नयाल, मंजू, मोहम्मद वसी, अरुण वर्मा एवं नितिन तँवर, डी.टी.पी. *ऑपरेटर* (संविदा) के प्रति आभार ज्ञापित करती है।

© NCERT not to be republished

विषय-सूची

आमुख *iii*

प्राक्कथन *v*

शिक्षकों से संवाद *ix*

नैदानिक परीक्षण **1**

आधारभूत 2

मध्यवर्ती 8

स्तर के उपयुक्त 13

चरण 1— आधारभूत **19**

अध्याय

1. चार चने 19
2. अनोखी दावत 23
3. कौआ और मुर्गी 29
4. मेरी किताब 36

चरण 2— मध्यवर्ती **42**

अध्याय

1. दो मित्र 42
   - नाव बनाओ, नाव बनाओ 46

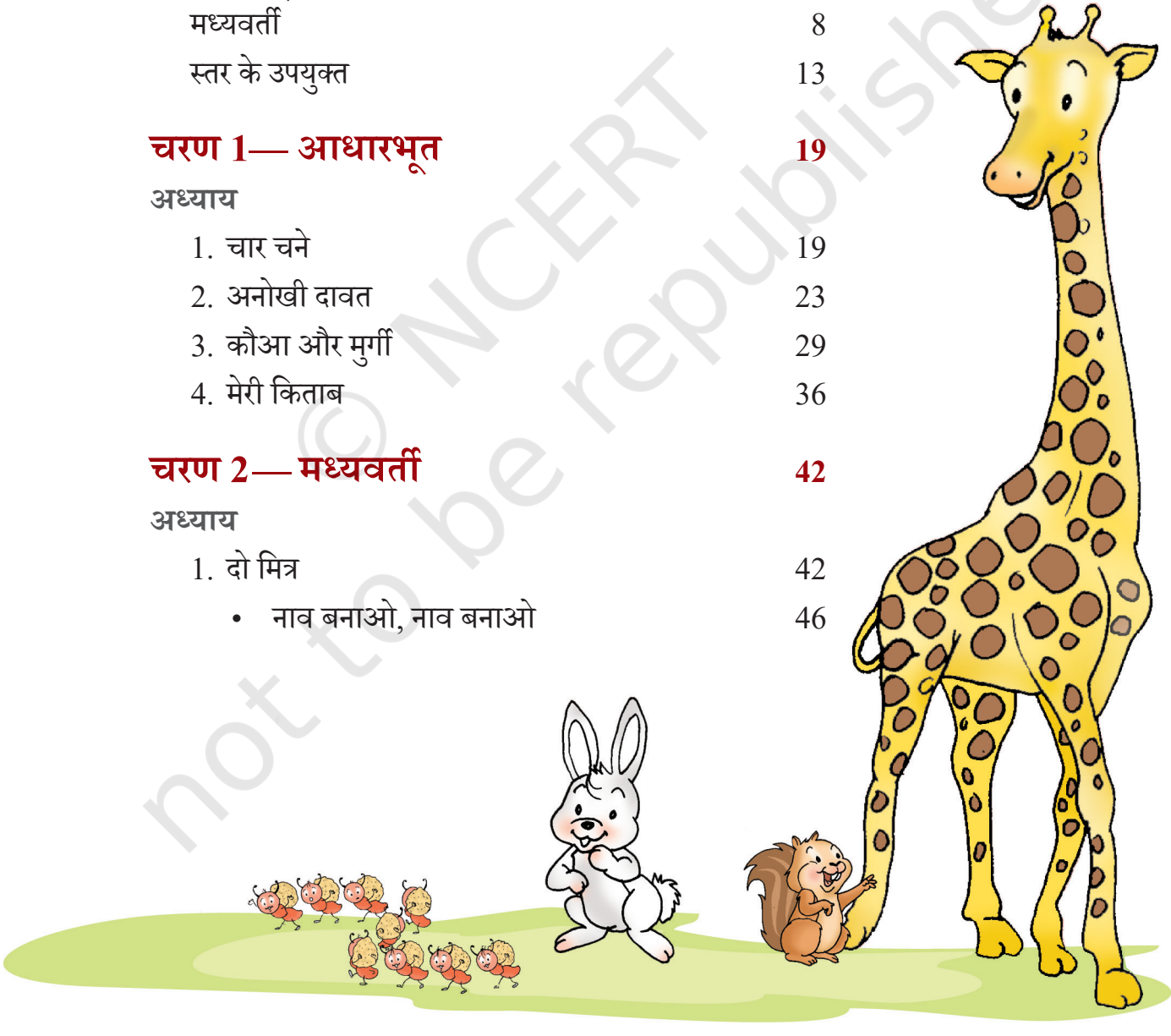

© NCERT not to be republished

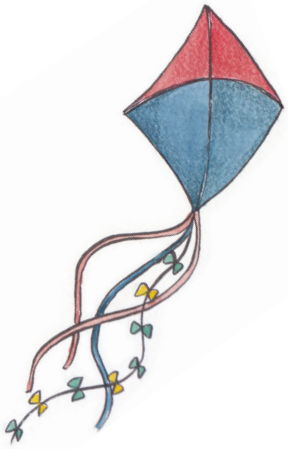

2. बिल्ली कैसे रहने आयी मनुष्य के संग 48
3. कठपुतली का राजा 56
4. क्यूँ-क्यूँ छोरी 63
5. उड़ने वालों के घर 73
   - पहेलियाँ 79

चरण 3— स्तर के उपयुक्त 81

अध्याय

1. जीव-जंतुओं का अद्भुत संसार 81
2. स्वतंत्रता की ओर 87
3. पानी रे पानी! 101
4. सुनीता की पहिया कुर्सी 113

आकलन 122

© NCERT not to be republished

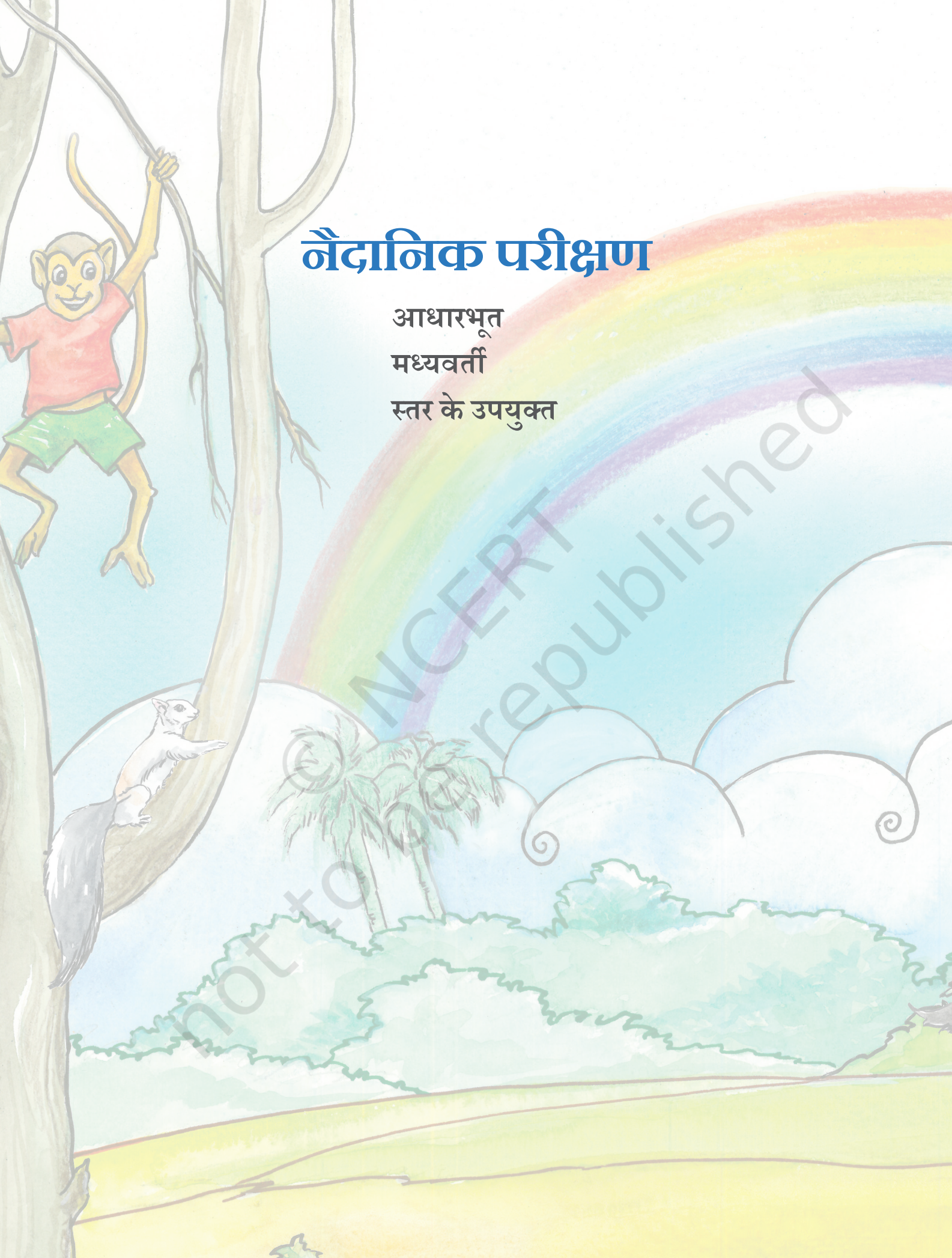

नैदानिक परीक्षण

आधारभूत

मध्यवर्ती

स्तर के उपयुक्त

© NCERT not to be republished

आधारभूत
चित्र पठन

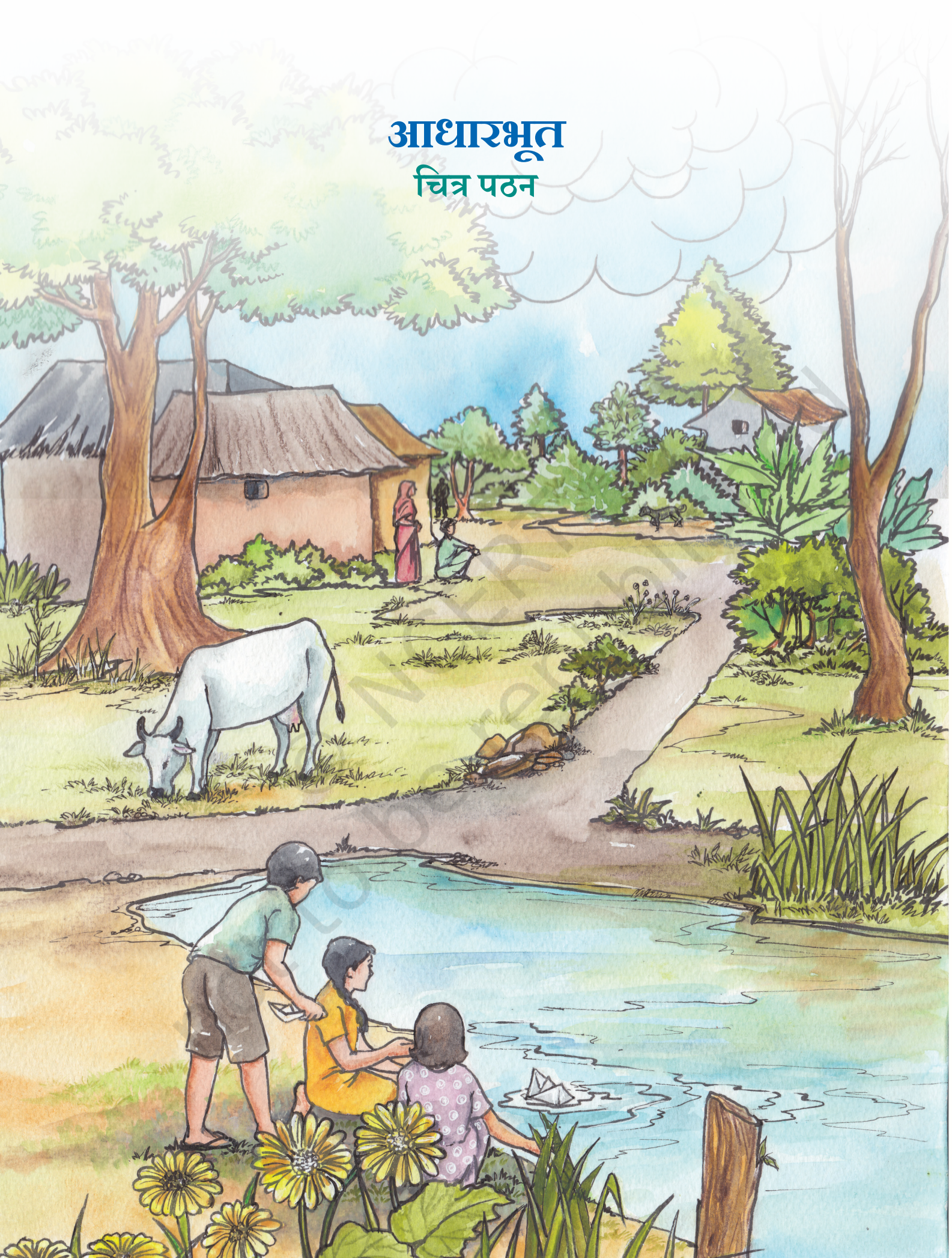

शिक्षक संकेत

- बच्चों को दिया गया चित्र ध्यान से देखने के लिए कहें।
- देखने के लिए कम से कम 5 मिनट का समय अवश्य दें।
- अब उनसे नीचे दिए गए प्रश्न मौखिक रूप से पूछें।

1. चित्र पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दो।

(क) इस चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?

(ख) चित्र में कितने बच्चे हैं?

(ग) बच्चे क्या कर रहे हैं?

2. अभी आपने जो चित्र देखा है, उससे जुड़े कुछ प्रश्न नीचे दिए गए हैं। प्रश्नों के सही उत्तर पर गोला बनाओ।

(क) इस चित्र में इनमें से कौन नहीं है?

- चिड़िया
- बच्चे
- गाय

(ख) यह चित्र कहाँ का हो सकता है?

- किसी स्कूल का
- जंगल का
- गाँव का

(ग) इस चित्र में कौन-कौन एक से अधिक नहीं हैं?

- गाय
- घर
- बच्चे

© NCERT not to be republished

(घ) बच्चे क्या कर रहे हैं?

- नहा रहे हैं
- नाव तैरा रहे हैं
- नाच रहे हैं

3. पठन कौशल

शिक्षक संकेत

- बच्चों से नीचे दिया गया अनुच्छेद पढ़वाएँ।
- यह अनुच्छेद उनकी पठन क्षमता का आकलन करने के लिए है।
- बच्चों को सहज होने दें और किसी प्रकार की शीघ्रता न करें।

बहुत समय पहले की बात है। उस समय मनुष्य के पास धान नहीं था। सबसे पहले मनुष्य ने धान का पौधा एक पोखरी के बीच में देखा। धान की बालियाँ झूम-झूमकर जैसे मनुष्य को बुला रही थीं। पर गहरे पानी के कारण धान तक पहुँचना कठिन था।

मनुष्य सोचता हुआ खड़ा ही था कि वहीं पर एक मूस दिखलायी पड़ा। मनुष्य ने मूस को पास बुलाया और कहा— "मूस भाई, पोखरी के बीच में देखो उस धान की प्यारी बालियों को। क्या तुम उन्हें लाकर दे दोगे?"

4. श्रवण कौशल

शिक्षक संकेत

बच्चों को नीचे दी गई छोटी-सी कहानी सुनाएँ और कहानी के अंत में दिए गए प्रश्न पूछें।

एक बार की बात है। झमाझम बारिश हो रही थी। रमन को बहुत मज़ा आ रहा था। रमन को बारिश में भीगना और नहाना बहुत अच्छा लगता है। रमन धीरे से उठी। उसने खिड़की खोली। उसने देखा, उसके बहुत से दोस्त

© NCERT not to be republished

मैदान में खेल रहे हैं। वे पानी में छप-छप कर रहे हैं, गेंद उछाल रहे हैं, और पकड़म-पकड़ाई भी खेल रहे हैं। रमन ने मन में कहा, "ये कैसे दोस्त हैं? मेरे बिना खेल रहे हैं? इन्होंने मुझे क्यों नहीं बुलाया!" यह सोचते-सोचते रमन ने दरवाज़ा खोला और घर के बाहर आ गई। वह भी अपने दोस्तों के साथ गेंद खेलना चाहती थी। वह मैदान की तरफ थोड़ा आगे बढ़ी कि उसका पैर फिसल गया। वह रोने लगी। तभी उसने महसूस किया कि कोई उससे कुछ कह रहा है। उसकी आँखें खुली, उसने देखा, उसकी माँ उसे उठा रही थीं।

अब बताओ —

(क) रमन को बारिश में क्या-क्या करना अच्छा लगता है?

(ख) रमन के दोस्त मैदान में क्या-क्या कर रहे थे?

(ग) दोस्तों को खेलते देखकर रमन के मन में क्या विचार आया?

(घ) क्या रमन वास्तव में फिसलकर गिर गई थी?

(ङ) रमन का सपना अपनी जुबानी सुनाओ।

5. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो।

(क) आपकी माता का क्या नाम है?

.....

.....

(ख) आपको कौन-कौन से रंग सबसे अधिक पसंद हैं?

.....

.....

(ग) आपको क्या-क्या खाना बहुत अच्छा लगता है?

.....

.....

© NCERT not to be republished

6. नीचे लिखे शब्द ध्यान से देखो और पढ़ो। जो शब्द अलग है, उसके नीचे रेखा खींचो। एक उदाहरण करके दिया गया है।

(क)	कद्दू	ककड़ी	खीरा	<u>आम</u>
(ख)	कौआ	हिरन	कबूतर	कोयल
(ग)	चीता	भेड़िया	तोता	शेर
(घ)	चाकू	पेन	पेंसिल	कलम
(ङ)	तवा	चकला	बेलन	कुर्सी

7. चित्रों का नाम लिखकर कहानी पूरी करो और सुनाओ।

एक ..... था। ..... पर एक ..... ने ..... बनाया।

..... ने ..... में तीन ..... दिए। .... की रखवाली करती थी। एक दिन ..... में से ..... निकल आए। ..... उन्हें देखकर बहुत खुश हुई।

संकेत — चित्र वाले सभी नाम शब्द हैं।

© NCERT not to be republished

8. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरो।

वह	उस	उसका	उसे	वे	हम

एक लड़की थी। ..... नाम मोनी था। ..... दूसरी कक्षा में पढ़ती थी। ..... हिंदी की किताब बहुत पसंद थी।

संकेत — ये सभी शब्द नाम की जगह आए हैं।

9. नीचे लिखे शब्दों में सही जगह पर अनुस्वार (ं) या चंद्रबिंदु (ँ) लगाओ।

धुआ	कुआ	फूक	कहा
स्वतत्र	बाध	मा	गाव
बदगोभी	इतज़ार	पसद	

10. नीचे लिखे उदाहरणों की मदद से नीचे दी गई जगह में सही शब्द लिखो।

नाना	नानी	बहन	भाई
काका	.....	मौसी	.....
मामा	.....	बेटी	.....
चाचा	.....	माता	.....

© NCERT not to be republished

मध्यवर्ती

1. नीचे दिए चित्रों को ध्यान से देखो। 'अ' और 'ब' में क्या-क्या हो रहा है, नीचे दिए गए स्थान पर लिखो।

(अ) .....

.....

.....

.....

(ब) .....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

2. नीचे लिखे वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाओ।

(क) उफ़ कितनी गरमी है

(ख) ये आम कितने के हैं

(ग) मैं जानती हूँ कि नाटक कितने बजे शुरू होगा

(घ) उसने हींग जीरा और धनिया से सब्ज़ी में छौंक लगाया

(ङ) क्या बारिश अभी भी हो रही है

3. बॉक्स में दिए हुए शब्दों से नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करो।

- जा रही हैं।
- खेल रहे हैं।
- कर रहा है।
- दौड़ रहा है।
- पढ़ा रहे हैं।
- पढ़ रही है।
- उड़ा रही हैं।
- चर रही हैं।
- चला रहा है।
- धो रहा है।

(क) लड़की पुस्तक .....।

(ख) माली क्यारी में सिंचाई .....।

(ग) किसान खेत में हल .....।

(घ) गायें घास .....।

(ङ) लड़कियाँ विद्यालय .....।

(च) धोबी कपड़े .....।

(छ) अध्यापक कक्षा में .....।

(ज) घोड़ा .....।

(झ) लड़के हॉकी .....।

(ञ) लड़कियाँ पतंग .....।

© NCERT not to be republished

4. नीचे दिए गए वाक्यों में सही सर्वनाम लिखो।

मैं	उसके	वे	तुम सब	तुम	उन्हें

एक किसान था। ..... तीन बेटे थे। ..... आपस में झगड़ते रहते थे। एक दिन किसान ने ..... अपने पास बुलाया और कहा, "देखो, अब ..... बड़े हो गए हो। ..... चाहता हूँ कि ..... अपनी जिम्मेदारी समझो।"

5. दिए गए शब्दों के सही रूप लिखकर वाक्य पूरे करो।

(क) इस मेज़ की ..... नापो। (चौड़ा)

(ख) कुएँ की ..... देखकर मैं डर गई। (गहरा)

(ग) लोगों की ..... करना मेरी आदत नहीं है। (बुरा)

(घ) समर को ..... से कूदने में मज़ा आता है। (ऊँचा)

(ङ) ..... जानने के लिए पुलिस ने खोजबीन शुरू कर दी। (सच्चा)

(च) गुरमीत की और मेरी ..... में दो इंच का अंतर है। (लंबा)

6. नीचे दिए हुए शब्दों के विलोम शब्द लिखो।

आदर	.....
सबल	.....
सजीव	.....
धनी	.....
दयालु	.....

© NCERT not to be republished

7. नीचे दी गई तालिका पूरी करो। संख्याओं को शब्दों में लिखो।

प्रश्न	वर्ष (अंकों में)	वर्ष (शब्दों में)
भारत कब आज़ाद हुआ?	1947	उन्नीस सौ सैंतालीस
तुम्हारे जन्म का वर्ष	.....	.....
अभी जो वर्ष चल रहा है	.....	.....
चार साल पहले का वर्ष	.....	.....
पाँच साल बाद का वर्ष	.....	.....

8. कोष्ठक में दिए गए निर्देश के अनुसार लिखो।

(क) मछली ..... (बहुवचन)

(ख) पुत्री ..... (पुल्लिंग)

(ग) अंधकार ..... (विलोम)

(घ) पुस्तकें ..... (एकवचन)

(ङ) वृक्ष ..... (समानार्थी)

9. नीचे लिखे शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द पर गोला बनाओ।

(क) धरती – ज़मीन आसमान मिट्टी

(ख) पानी – पन्नी जल दूध

(ग) पुस्तक – कॉपी पन्ना किताब

© NCERT not to be republished

10. नीचे दिए गए वर्णों के मेल से बनने वाले शब्द लिखो।

(क) ड़ स क – .....

(ख) ल बा द – .....

(ग) का न म – .....

(घ) र सू ज – .....

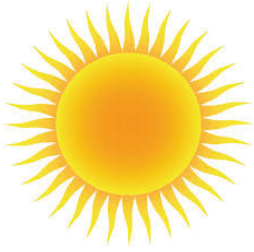

(ङ) र ज़ा वा द – .....

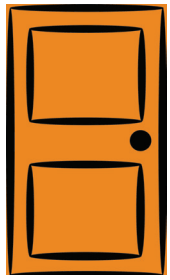

© NCERT not to be republished

स्तर के उपयुक्त

1. कोष्ठक में दिए गए शब्द से प्रश्न बनाकर लिखो।

उदाहरण — उसका नाम मालती है। (क्या)

उसका नाम <u>क्या</u> है?

(क) मीना शिमला जा रही है। (कहाँ)

.....

(ख) यह गेंद रवि ने फेंकी है। (किसने)

.....

(ग) विकास रो रहा है। (क्यों)

.....

(घ) माँ सुरभि को बुला रही हैं। (किसको)

.....

2. मेहनत और कोशिश से जुड़े कुछ मुहावरे नीचे लिखे हैं। इनका वाक्यों में प्रयोग करो।

(क) दिन-रात एक करना

.....

.....

(ख) पसीना बहाना

.....

.....

(ग) एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना

.....

.....

© NCERT not to be republished

3. संकेत के अनुसार रेखांकित शब्दों का रूप बदलकर वाक्य फिर से लिखो।

(क) मेरा जूता टूट गया है। (बहुवचन)

.....

(ख) रात हो रही है। (विलोम)

.....

(ग) बगीचे में दो-दो माली थे। (स्त्रीलिंग)

.....

(घ) कल रात बहुत सर्दी थी। (विलोम)

.....

(ङ) माँ ने रोटियाँ बनायीं। (एकवचन)

.....

4. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो।

(क) दिन ..... ही सब घर लौट आए।

(टलते/ढलते)

(ख) बच्चों ने जल्दी-जल्दी ..... बस में रख दिया।

(समान/सामान)

(ग) घर पहुँचकर उसने चैन की ..... ली।

(सास/साँस)

(घ) किसान ..... उगाने के लिए कठोर परिश्रम करता है।

(अन्न/अन्य)

(ङ) माँ की आँखों से आँसू ..... उठे।

(छलक/झलक)

© NCERT not to be republished

5. अपने घर में आपकी मर्ज़ी के बिना रहने वाले किसी जीव के बारे में छह पंक्तियाँ लिखो। चित्र भी बनाओ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

6. जिस इमारत में तीन मंज़िलें हों, उसे तिमंज़िली इमारत कहते हैं। बताओ, इन्हें क्या कहेंगे?

(क) जिस मकान में दो मंज़िलें हों

.....

(ख) जिस स्कूटर में दो पहिए हों

.....

(ग) जिस झंडे में तीन रंग हों

.....

(घ) जिस जगह पर चार राहें मिलती हों

.....

(ङ) जिस पशु के चार पैर हों

.....

7. पढ़ो और दिए हुए प्रश्नों के सही उत्तर पर गोला लगाओ।

गोपाल सुपर बाज़ार **समय – सुबह 9:00 से रात्रि 8:00** **सोमवार से रविवार**			
फल	**मूल्य**	**सब्ज़ी**	**मूल्य**
सेब	₹ 80 किलो	गोभी	₹ 45 किलो
संतरे	₹ 45 किलो	मूली	₹ 20 किलो
अमरूद	₹ 55 किलो	आलू	₹ 25 किलो
अंगूर	₹ 70 किलो		

© NCERT not to be republished

(क) सबसे सस्ता फल कौन-सा है?

- सेब
- संतरा
- अमरूद

(ख) सबसे महँगी सब्ज़ी कौन-सी है?

- गोभी
- मूली
- आलू

(ग) सुपर बाज़ार में क्या बिक रहा है?

- चार प्रकार की सब्ज़ियाँ और तीन प्रकार के फल
- तीन प्रकार की सब्ज़ियाँ और चार प्रकार के फल
- पाँच प्रकार की सब्ज़ियाँ और दो प्रकार के फल

(घ) किस फल की कीमत अंगूर से अधिक है?

- सेब
- अमरूद
- संतरा

(ङ) कौन-सी दो चीज़ों की कीमत एक-सी है?

- संतरा और अमरूद
- गोभी और संतरा
- मूली और आलू

(च) सुपर बाज़ार सप्ताह में कितने दिन खुला है?

- पाँच दिन
- छह दिन
- सात दिन

© NCERT not to be republished

8. चमाचम थी सड़कें..., इस पंक्ति में 'चमाचम' शब्द आया है। नीचे लिखे शब्दों को पढ़ो और दिए गए वाक्यों में ये शब्द भरो।

पटापट	चकाचक	फटाफट	झकाझक	चटपट

(क) आँधी के कारण पेड़ से ..... फल गिर रहे हैं।

(ख) हंसा अपना सारा काम ..... कर लेती है।

(ग) आज रहमान ने ..... सफ़ेद कुर्ता-पाजामा पहना है।

(घ) कुसुम ने ..... सारे लड्डू खा डाले।

(ङ) सारे बर्तन धुलकर ..... हो गए।

9. पत्र लेखन

आपको पतंग उड़ाने का शौक है। यह बात अपने मित्र को पत्र लिखकर बताओ और उसे पतंग उड़ाने के लिए बुलाओ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

चरण 1 — आधारभूत

अध्याय-1

चार चने

पैसा पास होता तो चार चने लाते,
चार में से एक चना तोते को खिलाते।
तोते को खिलाते तो टाँय-टाँय गाता,
टाँय-टाँय गाता तो बड़ा मज़ा आता।

पैसा पास होता तो चार चने लाते,
चार में से एक चना घोड़े को खिलाते।
घोड़े को खिलाते तो पीठ पर बिठाता,
पीठ पर बिठाता तो बड़ा मज़ा आता।

पैसा पास होता तो चार चने लाते,
चार में से एक चना चूहे को खिलाते।
चूहे को खिलाते तो दाँत टूट जाता,
दाँत टूट जाता तो बड़ा मज़ा आता।

© NCERT not to be republished

कविता में से

1. कविता में 'चार चने' कितनी बार आया है?

.....

.....

2. किन-किन बातों पर बड़ा मज़ा आने की बात कही गई है?

.....

.....

.....

.....

3. चार में से एक चना किस-किस को खिलाया जाता, क्रम से बताओ?

.....

.....

.....

.....

4. पंक्तियाँ पूरी करो।

(क) तोते को खिलाते तो .....

(ख) घोड़े को खिलाते तो .....

(ग) चूहे को खिलाते तो .....

© NCERT not to be republished

कविता के आगे

5. कविता में पैसे से चार चने लाने की बात कही गई है। तुम पैसों से क्या-क्या खरीदते हो और क्या-क्या खरीदना चाहोगे?

.....

.....

.....

.....

6. 'टाँय-टाँय' जैसे ही आवाज़/ध्वनियों से जुड़े कुछ शब्द तुम भी लिखो और बोलो।

उदाहरण — भौं-भौं

....

....

7. लाते-खिलाते, गाता-आता जैसे तुकबंदी वाले शब्द बनाओ।

चार	पैसा	टूट	तोता
बार	जैसा	बूट	रोता
हार	.....	.....	.....
मार	.....	.....	.....
पार	.....	.....	.....

शिक्षक संकेत

- बच्चों से तुकबंदी मिलाने की गतिविधि हर अध्याय के अंत में करा सकते है।
- बच्चों से शब्द-दीवार भी बनवायी जा सकती है।

© NCERT not to be republished

8. नीचे चूहे के बारे में कुछ बातें लिखी हैं—

चूहे का रंग भूरा

चूहे की एक लंबी पूँछ

चूहा एक छोटा-सा जीव

चूहे के दाँत पैने।

अब इन्हीं बातों से वाक्य बनाकर लिखे गए हैं। जैसे—

चूहा एक छोटा-सा जीव है। चूहे की पूँछ लंबी होती है। उसके दाँत पैने और रंग भूरा होता है।

चूहे की तरह घोड़े के बारे में भी कुछ बातें लिखी हैं—

घोड़ा एक चार पैर वाला पशु

घोड़े का रंग भूरा, काला, सफ़ेद

घोड़े की तेज़ चाल

चलने पर टप-टप आवाज़

घोड़े का भोजन चना

अब इन बातों से घोड़े पर कुछ वाक्य लिखो।

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

अध्याय-2

अनोखी दावत

भोर होते ही सबके सब आ जाते हैं। ठीक साढ़े पाँच बजे, हमारे घर की छत पर। एक मिनट इधर न उधर। हमारे घर की छत पर सुबह ठीक साढ़े पाँच बजे इनका फुदकना और चहकना शुरू हो जाता है। समय के इतने पाबंद हैं ये कि अम्मी एक पल की भी ढिलाई नहीं कर सकतीं।

एक दिन अम्मी को एक मिनट की देरी हो गई थी। चीं-चीं और काँव-काँव, इतना हल्ला मचाया कि अम्मी ने उनके आगे हाथ जोड़कर माफ़ी माँगी कि आगे से देरी न होगी। न जाने, इनको समय का कैसे पता चल जाता है। लगता है, जैसे सभी ने अपने हाथ में घड़ी बाँध रखी हो। अब तो अम्मी इनके आने से पहले ही छत पर पहुँच जाती हैं। चींटियों के लिए बूरा और आटा, गौरैयों के लिए बाजरा और कौवों के लिए रोटी के टुकड़े और सब कुछ लेकर।

अम्मी को देखते ही सबके सब उनके आगे-पीछे फुदकने लगते हैं। अम्मी मीठी-सी झिड़की देकर बोलेंगी— "अरे! पैरों में तो न आओ रे। तनिक पीछे को हो लो रे।" अम्मी की झिड़की सुनते ही सबके सब अपनी-अपनी जगह पहुँच लेते हैं। चीटियों को दक्षिण वाला कोना, गौरैयों को पूरब वाला कोना और कौओं को उत्तर वाला कोना। सबको उनका हिस्सा बाँटने के बाद अम्मा टेर लगाती हैं, "ऐ री शबनम! ऐ असलम! दाना तो हो गया, अब पानी कौन लावेगा?"

हम दोनों बहन-भाई दौड़कर छत पर अपने इन मेहमानों के लिए पानी लेकर पहुँच जाते हैं, और इस दावत के साथ होती है, हमारे दिन की शुरुआत।

© NCERT not to be republished

नवीन शब्द

शब्द		अर्थ
1. भोर	=	सुबह
2. फुदकना	=	कूदना/उछलना
3. चहकना	=	चिड़ियों का चह-चह की आवाज़ करना/ खुशी में खिलकर बोलना
4. पाबंद	=	नियम का पालन करना
5. ढिलाई	=	सुस्ती
6. झिड़की	=	डाँट-फटकार
7. टेर	=	पुकार

पाठ से

1. "भोर होते ही सबके सब आ जाते हैं।" इस वाक्य में 'सबके सब' किन प्राणियों के लिए आया है? सही चित्र के आगे सही का निशान लगाकर उनका नाम लिखें।

☐ .....

☐ .....

☐ .....

© NCERT not to be republished

☐ .....

☐ .....

2. "ठीक साढ़े पाँच बजे हमारे घर की छत पर"।

(क) पाठ के अनुसार 'साढ़े पाँच बजे' सुबह के हैं या शाम के?

.....

.....

(ख) 'हमारे घर की छत पर' में 'हमारे' में कौन-कौन लोग हो सकते हैं?

.....

.....

3. "समय के इतने पाबंद हैं ये कि अम्मी एक पल की भी ढिलाई नहीं कर सकतीं"।

(क) ऊपर लिखे वाक्य में 'ये' किनके लिए आया है?

.....

.....

(ख) इस वाक्य का अर्थ अपने शब्दों में बताओ।

.....

.....

© NCERT not to be republished

4. अम्मी छत पर आने वाले मेहमानों के लिए क्या-क्या सामान लेकर छत पर जाती हैं? नीचे दी गई सूची में से उस सामान को छाँटकर नीचे बनी डलिया में लिखो।

दाल, मक्खन, पालक, चने, बूरा, गेहूँ, रोटी, बाजरा, बिस्कुट, आटा

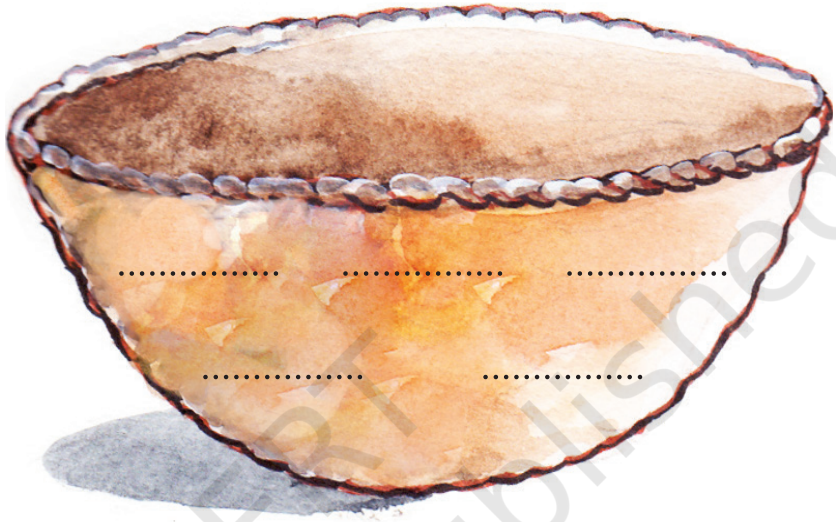

5. नीचे कुछ पशु-पक्षियों और कीटों के नाम लिखे गए हैं, उन्हें सही जगह पर लिखें।

बिल्ली, कोयल, घोंघा, कुत्ता, चींटी, मुर्गा, गौरैया, मोर, कौआ, बकरी, छिपकली, मकोड़ा, गाय

पशु	पक्षी	कीट
बिल्ली	कोयल	घोंघा
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

© NCERT not to be republished

6. छत पर तीन दिशाओं के कोनों पर खाने का प्रबंध किया जाता है। एक दिशा कौन सी छूट गई। नाम लिखें।

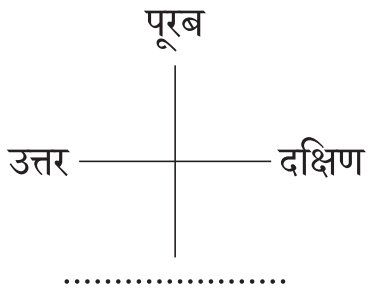

....

7. चित्रों को देखकर उनके नाम लिखें और उन्हें उनकी आवाज़ से मिलाएँ।

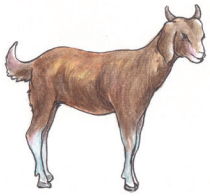

	बकरी	भौं-भौं-भौं
	....	भिन-भिन-भिन
	....	में-में-में
	....	काँव-काँव-काँव
	....	चीं-चीं-चीं

© NCERT not to be republished

8. साढ़े पाँच बजे यानी कि पाँच बजकर तीस मिनट (5:30)। नीचे दिए गए समय को कैसे लिखा जाएगा?

(क) ढाई बजे .....

(ख) साढ़े तीन बजे .....

(ग) सवा एक बजे .....

(घ) डेढ़ बजे .....

(ङ) पौने पाँच बजे .....

9. नीचे दिए गए वाक्यों का आप क्या अर्थ निकाल रहे हैं?

(क) भोर होते ही सबके सब आ जाते हैं।

.....

.....

(ख) तनिक पीछे को हो लो रे!

.....

.....

(ग) अम्मी टेर लगाती हैं।

.....

.....

10. अगर अम्मी छत की जगह अपने घर के बाहर पशु-पक्षियों की दावत करें तो चींटी, गौरैया और कौए के साथ-साथ और कौन-कौन दावत में आ सकते हैं?

....

....

© NCERT not to be republished

अध्याय-3

कौआ और मुर्गी

खाली जगह भरकर कहानी पूरी करो। अब पढ़ो और साथियों को सुनाओ।

कौआ और मुर्गी दोनों एक घर में ..... थे। ..... दाना लाता था। ..... भी दाना लाती थी। ऐसा करते-करते घर में बहुत ..... जमा हो गया।

एक दिन कौए ने ..... "मैं चावल लेने ..... हूँ, तू घर का ..... बंद रखना, नहीं तो कोई ..... ले .....।"

© NCERT not to be republished

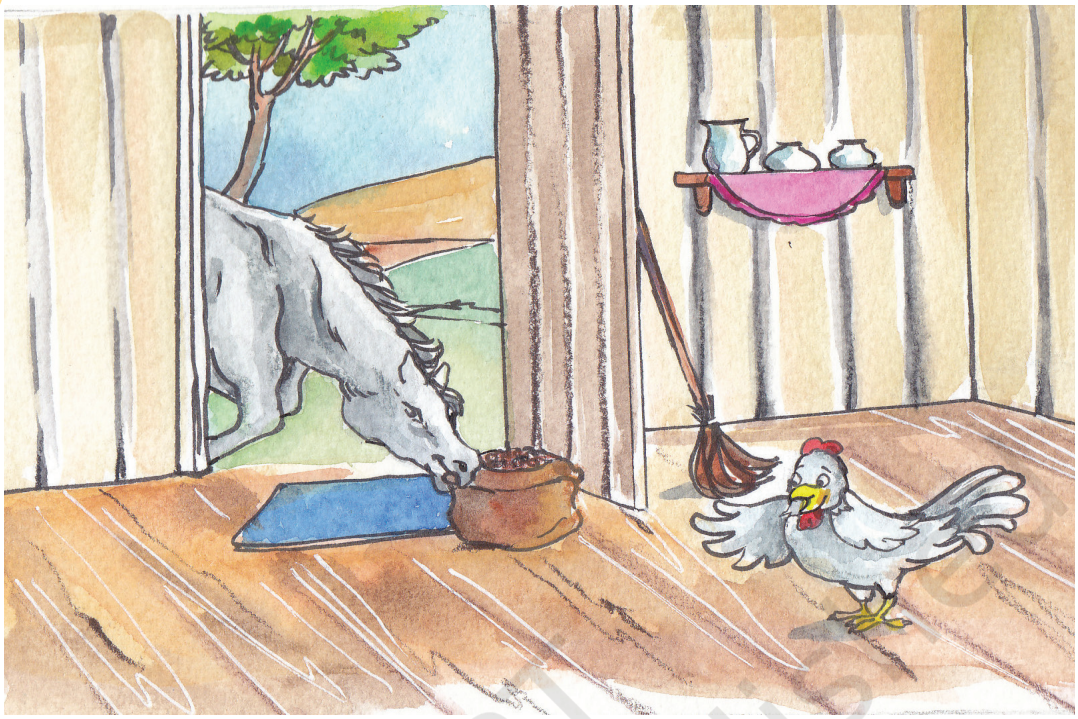

थोड़ी देर बाद एक घोड़ा ..... । ..... ने कहा, "मुर्गी-मुर्गी, दरवाज़ा ..... और मुझे दाना दे।"

..... ने कहा, "नहीं, मैं दाना ..... ।"

..... ने कहा, "मुर्गी, मुझे .....दे, मुझे बहुत ..... लगी है।"

मुर्गी को दया आ गई। उसने सारा दाना ..... को दे दिया।

अब ..... सोचने लगी, कौआ दाना माँगेगा तो मैं कहाँ से दूँगी। मुर्गी बहुत .....गई।

जब कौआ ..... लेकर घर लौटा, तब मुर्गी चक्की के पीछे छिप गई। कौए ने आवाज़ लगाई, "....., ..., तू ..... ?" डर के मारे ..... चुप रही। एक आवाज़ भी नहीं निकाली।

© NCERT not to be republished

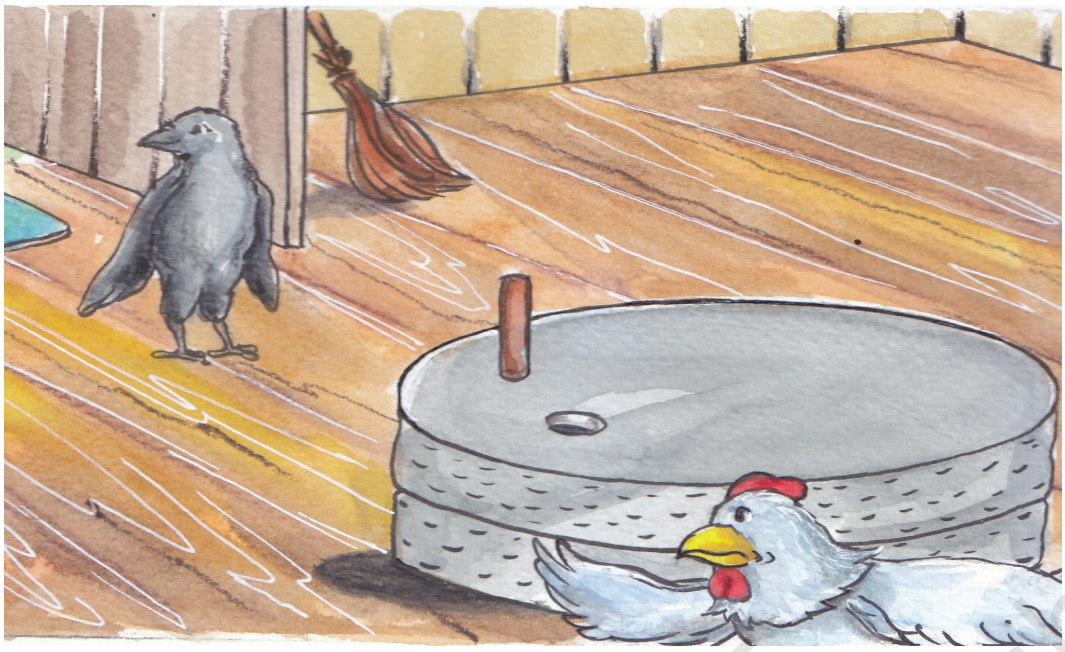

उसी समय एक बिल्ली घर में आयी। बिल्ली ने कहा, "मुर्गी, मुझे अपनी चक्की दे। मुझे दाना ..... है।" कौए ने कहा "मुर्गी तो घर में ..... है। तू अपना ..... यहीं लाकर पीस ले।" ..... दाना ले आयी और पीसने को बैठी।

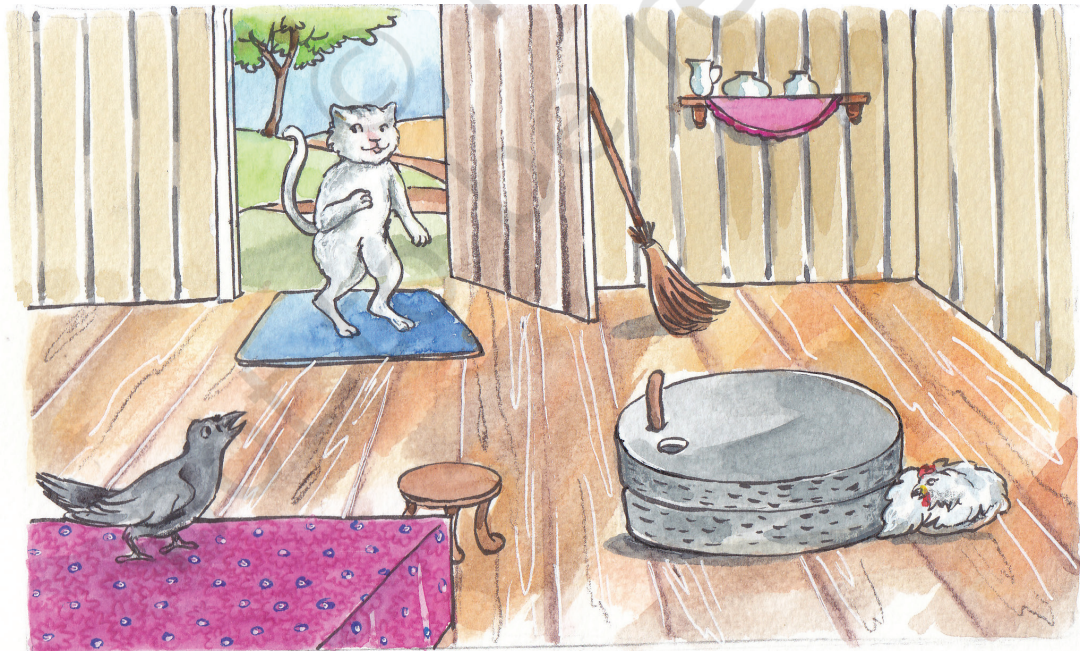

© NCERT not to be republished

बिल्ली ने दाना ..... में डाला। मुर्गी ने चट उसे मुँह में भर लिया। ..... ने और दाना ..... में डाला। ..... ने उसे भी चट .....।

बिल्ली ..... लगी पर आटा न निकला। ये देख बिल्ली बहुत ..... हुई।

..... ने सारी बात कौए को बतायी। कौआ भी बहुत चकित हुआ। कौआ सोचने लगा कि दाना कहाँ होगा। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उसने चक्की के पीछे .....। वहाँ मुर्गी मुँह में ..... भरे बैठी थी। उसका मुँह दाने से एकदम फूल गया था।

© NCERT not to be republished

उसे देख कौआ हँसा। उसे देख बिल्ली भी बहुत .....। दोनों हँसे तो मुर्गी को भी ज़ोर की ..... आयी। वह हँसी और उसके मुँह से सारे ..... निकल पड़े।

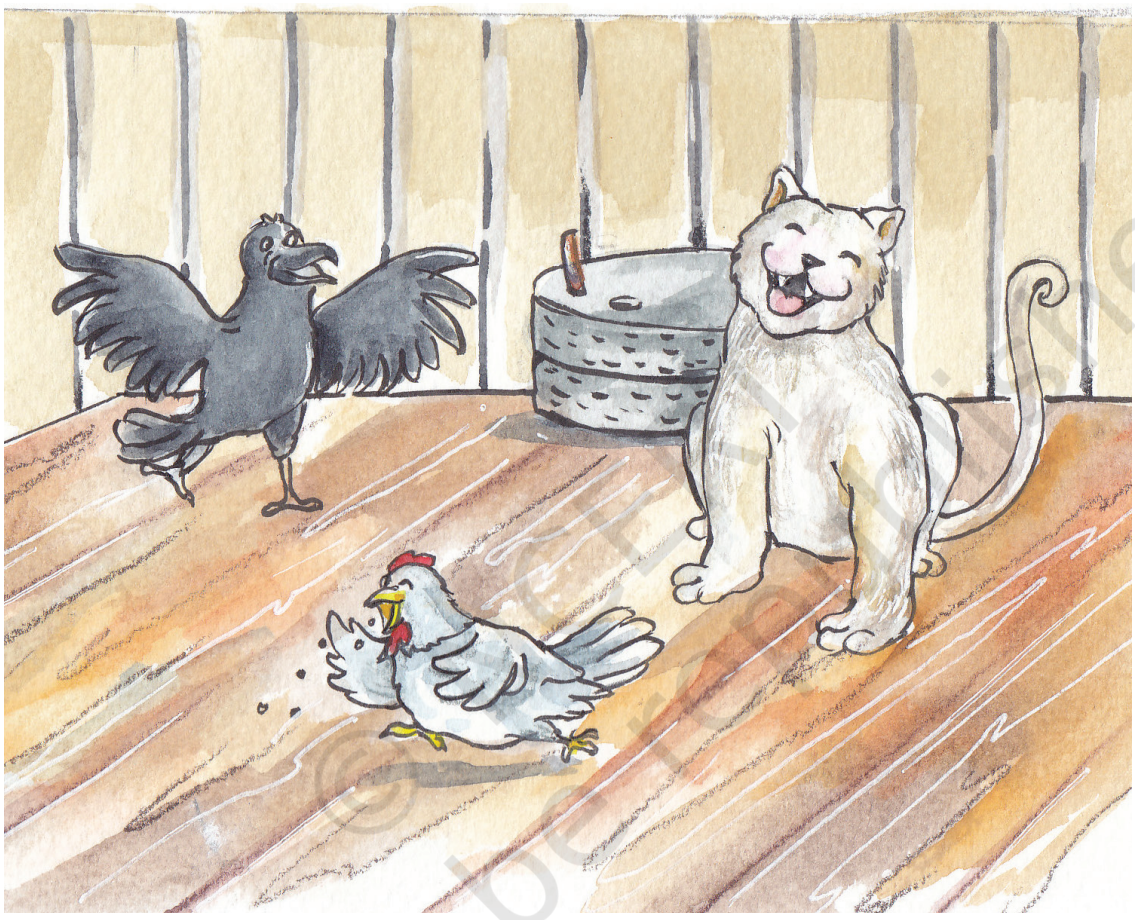

© NCERT not to be republished

पाठ से

1. मुर्गी चक्की के पीछे क्यों छिप गई थी?

.....

.....

.....

2. कौआ क्या लेने बाहर गया था?

.....

.....

.....

3. मुर्गी ने दाना किसको दिया था?

.....

.....

.....

4. चक्की में दाना पीसने कौन आया?

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

5. कहानी में कौन-कौन से जानवर आए हैं, उनके नाम लिखो।

.....

.....

.....

कल्पना से

1. आप मुर्गी की जगह होते तो क्या करते?

.....

.....

.....

.....

2. जिस तरह मुर्गी ने घोड़े को दाना देकर उसकी मदद की, क्या आपने भी कभी किसी की मदद की है? अपने शब्दों में बताओ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

अध्याय-4

मेरी किताब

माँ ने वीरू को एक संदेश देकर अपनी बहन के पास भेजा। मौसी ने प्यार से वीरू को अंदर बुलाया और बैठक में ले गई। बैठक में कदम रखते ही वीरू अचरज से ठिठक गई। उसने सोचा — बाप रे! इतनी सारी किताबें!

वहाँ नीचे से ऊपर तक किताबों से भरी लंबी अलमारियाँ दीवार में बनी हुई थीं। वह आँखें फाड़े देखती रही।

अंत में उसने साहस करके पूछा— "क्या आपके पास बच्चों के लिए भी किताबें हैं?"

मौसी ने कहा— "हाँ, यह देखो, ये रखी हैं।" वीरू ने हैरानी से कहा— "इतनी ढेर सारी किताबें! मेरे पास तो इतनी किताबें नहीं हैं।"

मौसी ने कहा— "यदि तुम चाहो तो मैं पढ़ने के लिए तुम्हें कुछ किताबें दे सकती हूँ। तुम्हें किस तरह की किताबें सबसे अधिक पंसद हैं?"

वीरू ने धीरे से कहा— "मुझे मालूम नहीं।"

मौसी ने एक किताब निकाल कर वीरू को पकड़ायी और कहा— "तुम यह किताब पढ़कर देखो।" वीरू घबराकर पीछे हटी और बोली— "बाप रे! यह तो बहुत मोटी है।"

मौसी ने सुझाव दिया— "अच्छा, तो फिर शायद यह वाली ठीक रहेगी।" वीरू बोली— "यह बहुत बड़ी है, मेरे बस्ते में नहीं आएगी।"

मौसी ने एक तीसरी किताब दिखायी— "और इसके बारे में क्या ख्याल है?"

© NCERT not to be republished

वीरू ने किताब के पन्ने पलटे और यह फैसला किया — "इसमें पढ़ने के लिए बहुत कम है, इतनी छोटी-छोटी तस्वीरें! और यह किताब बहुत पतली है।" मौसी ने कहा — "वीरू, मुझे तो लगता है कि मैं तुम्हारे लिए किताब नहीं चुन सकती। ऐसा करना, अगली बार जब तुम आओ तो अपने साथ एक फुट्टा लेती आना।" वीरू ने पूछा — "फुट्टा, क्यों?"

मौसी ने हँसकर कहा — "तुम्हें जितनी मोटी किताब चाहिए, तुम नापकर ले लेना। ठीक है न!" वीरू ने माँ के भेजे हुए कागज़ को मेज़ पर रखा और भाग खड़ी हुई।

नवीन शब्द

शब्द		अर्थ
1. संदेश	=	खबर
2. अचरज	=	हैरान रह जाना
3. ठिठकना	=	चकित होकर रुक जाना
4. साहस	=	हिम्मत

पाठ से

1. क्या तुमने भी बहुत सारी किताबें एक साथ देखी हैं? कहाँ?

.....

.....

2. तुम्हारे बस्ते में भी बहुत सारी किताबें होंगी। उन सभी किताबों में से तुम्हारी मनपसंद किताब कौन-सी है? क्यों?

.....

.....

© NCERT not to be republished

3. यहाँ कुछ किताबों के मुख्य पृष्ठ के चित्र दिए हैं और उनके नाम लिखे हैं। तुम भी किन्हीं चार किताबों के नाम लिखो। तुम इनमें से कौन-सी किताब पढ़ना चाहोगे? क्यों?

.....

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

नाप-तौल

4. मौसी ने वीरू को फुट्टा लाने के लिए क्यों कहा?

.....

.....

5. अलग-अलग चीज़ों को नापने या तौलने के लिए अलग-अलग चीज़ों का इस्तेमाल करते हैं। तुम नीचे दी गई चीज़ों को किन चीज़ों से मापोगे?

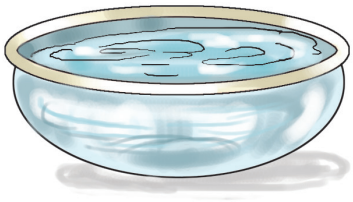

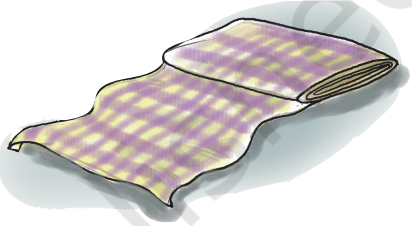

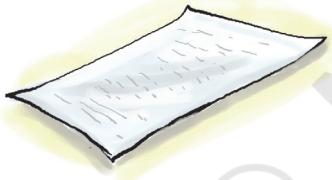

(क) कपड़े को .....

(ख) आम को .....

(ग) मेज़ को .....

(घ) कागज़ को .....

(ङ) पानी को .....

शिक्षक संकेत

मापने की अलग-अलग इकाइयों के विषय में चर्चा करें।

© NCERT not to be republished

आओ खेलें अंत्याक्षरी

अब तक तो तुमने बहुत सारे शब्द सीख लिए होंगे। आओ शब्दों की अंत्याक्षरी खेलें। देखें, तुम कितने शब्द बना पाते हो। शुरुआत हम कर देते हैं

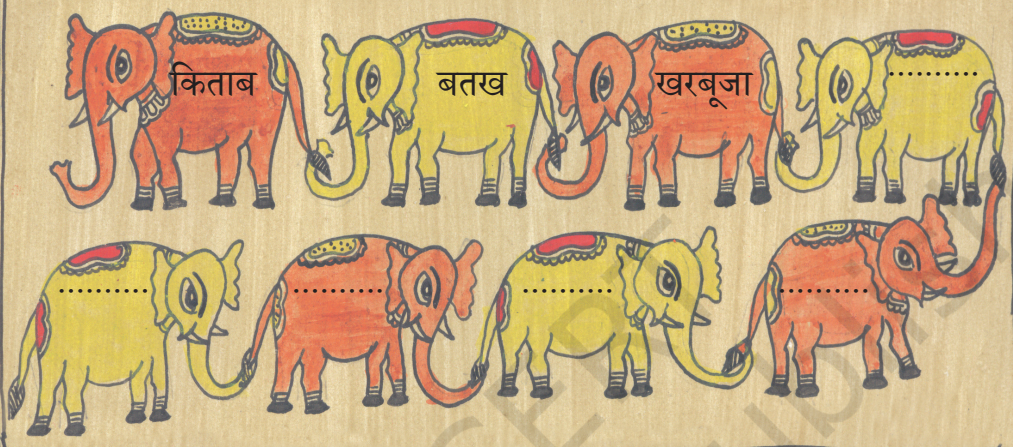

पसंद-नापसंद

6. वीरू को मौसी ने किताबें चुनने के लिए कहा तो वह नहीं चुन पायी। तुम्हें अपनी पसंद की चीज़ें चुनने को कहा जाए तो तुम कौन-कौन सी चीज़ें चुनोगे?

....

....

....

© NCERT not to be republished

चरण 2 — मध्यवर्ती

अध्याय-1

दो मित्र

चित्र से

1. चित्र को देखो। इसमें कौन-कौन से दो जीव हैं?

.....

.....

2. चित्र को देखकर कहानी सुनाओ, जैसे —

एक बार की बात है। एक पेड़ पर एक बंदर .....

.....

© NCERT not to be republished

.....

.....

3. अपनी कहानी पर कोई पाँच प्रश्न बनाकर लिखो, जैसे —

(क) फल खाने के लिए बंदर ने क्या किया?

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

(ङ) .....

(च) .....

4. साँप बहुत ही लंबा था। तुमने अपने आस-पास बहुत-सी लंबी चीज़ें देखी होंगी, किन्हीं छह चीज़ों के नाम लिखो।

....

....

5. बंदर ने फल उठाने के लिए साँप को नीचे लटकाया। वह और क्या-क्या कर सकता था? सोचो और लिखो।

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

6. 'साँप' शब्द में 'सा' के ऊपर चन्द्रबिंदु (ँ) है और 'बंदर' में 'ब' के ऊपर अनुस्वार (ं) है, जिससे इनकी ध्वनि में फ़र्क आता है। नीचे दिए गए शब्दों में किस पर क्या लगेगा?

चाद

घटी

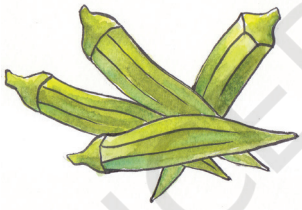

भिडी

ऊट

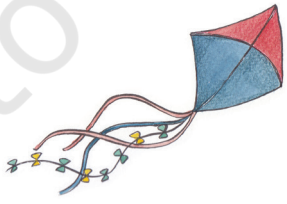

पतग

मूछ

© NCERT not to be republished

7. देखो, समझो और लिखो।

(क) लटका — लटके

(ख) रखा — रखे

(ग) गया — .....

(घ) आया — .....

(ङ) उड़ा — .....

(च) खिला — .....

(छ) बैठा — .....

8. ऊपर लिखे शब्दों को लेकर वाक्य बनाओ।

(क) .....

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

(ङ) .....

(च) .....

(छ) .....

© NCERT not to be republished

केवल पठन हेतु

नाव बनाओ, नाव बनाओ

नाव बनाओ, नाव बनाओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।।

वह देखो, पानी आया है,
घिर-घिर कर बादल छाया है,
सात समुंदर भर लाया है,

तुम रस का सागर भर लाओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।।

पानी सचमुच खूब पड़ेगा,
लंबी-चौड़ी गली भरेगा,
लाकर घर में नदी धरेगा,

ऐसे में तुम भी लहराओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।।

गुल्लक भारी, अपनी खोलो,
हल्की मेरी, नहीं टटोलो,
पैसे नये-नये ही रोलो,

© NCERT not to be republished

फिर बाज़ार लपक तुम जाओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।।

ले आओ कागज़ चमकीला,
लाल-हरा या नीला-पीला,
रंग-बिरंगा खूब रंगीला,

कैंची, चुटकी, हाथ चलाओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।।

छप-छप कर कूड़े से अड़तीं,
बूँदें-लहरें लड़ती-बढ़तीं,
सब की आँखों चढ़ती-गढ़तीं

नाव तैरा मुझको हर्षाओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।

क्या कहते? मेरे क्या बस का?
क्यों? तब फिर यह किसके बस का?
खोट सभी है बस आलस का,

आलस छोड़ो सब कर पाओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।।

– हरिकृष्णदास गुप्त

© NCERT not to be republished

अध्याय-2

बिल्ली कैसे रहने आयी मनुष्य के संग

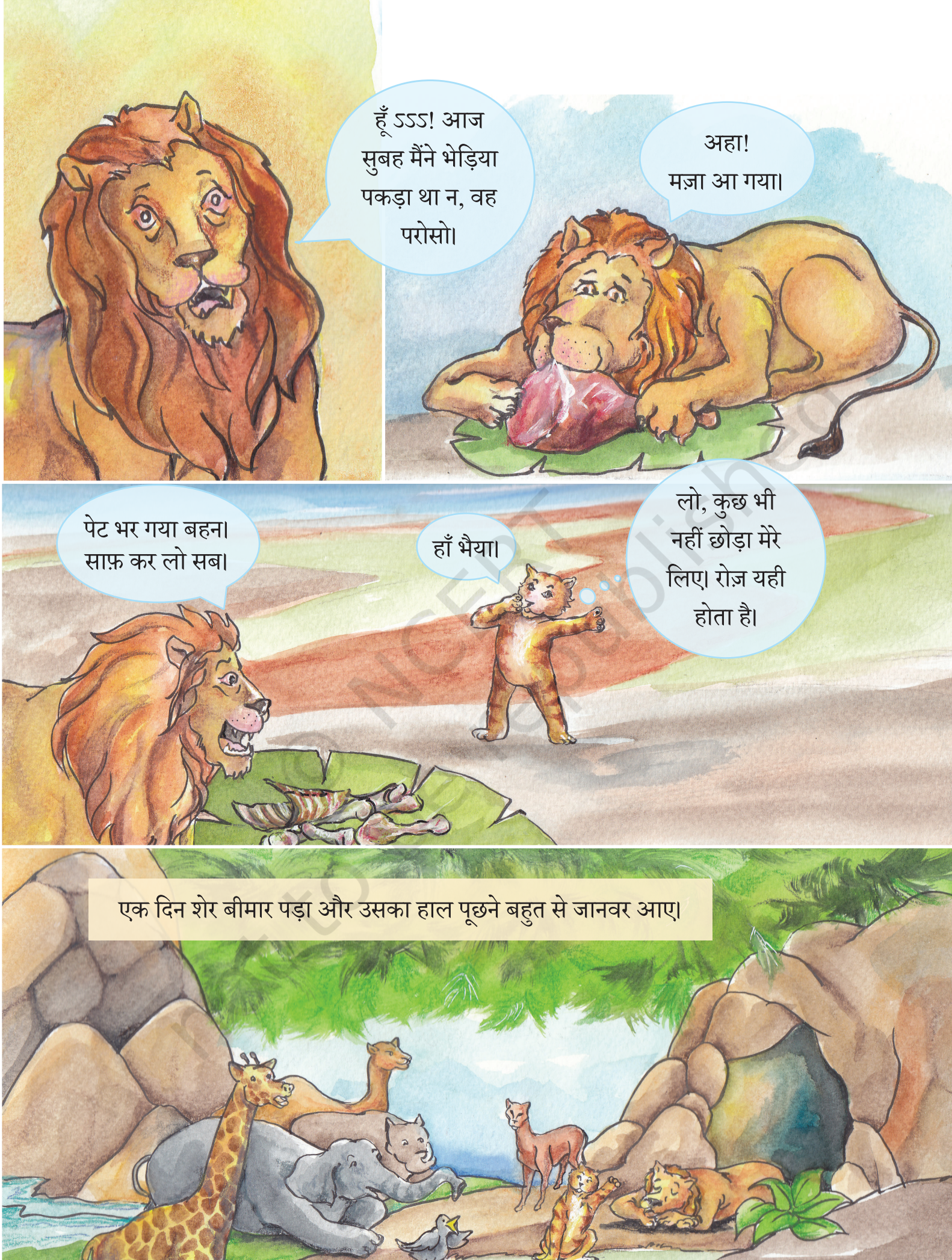
हूँ ऽऽऽ! आज सुबह मैंने भेड़िया पकड़ा था न, वह परोसो।
अहा! मज़ा आ गया।
पेट भर गया बहन। साफ़ कर लो सब।
हाँ भैया।
लो, कुछ भी नहीं छोड़ा मेरे लिए। रोज़ यही होता है।
एक दिन शेर बीमार पड़ा और उसका हाल पूछने बहुत से जानवर आए।

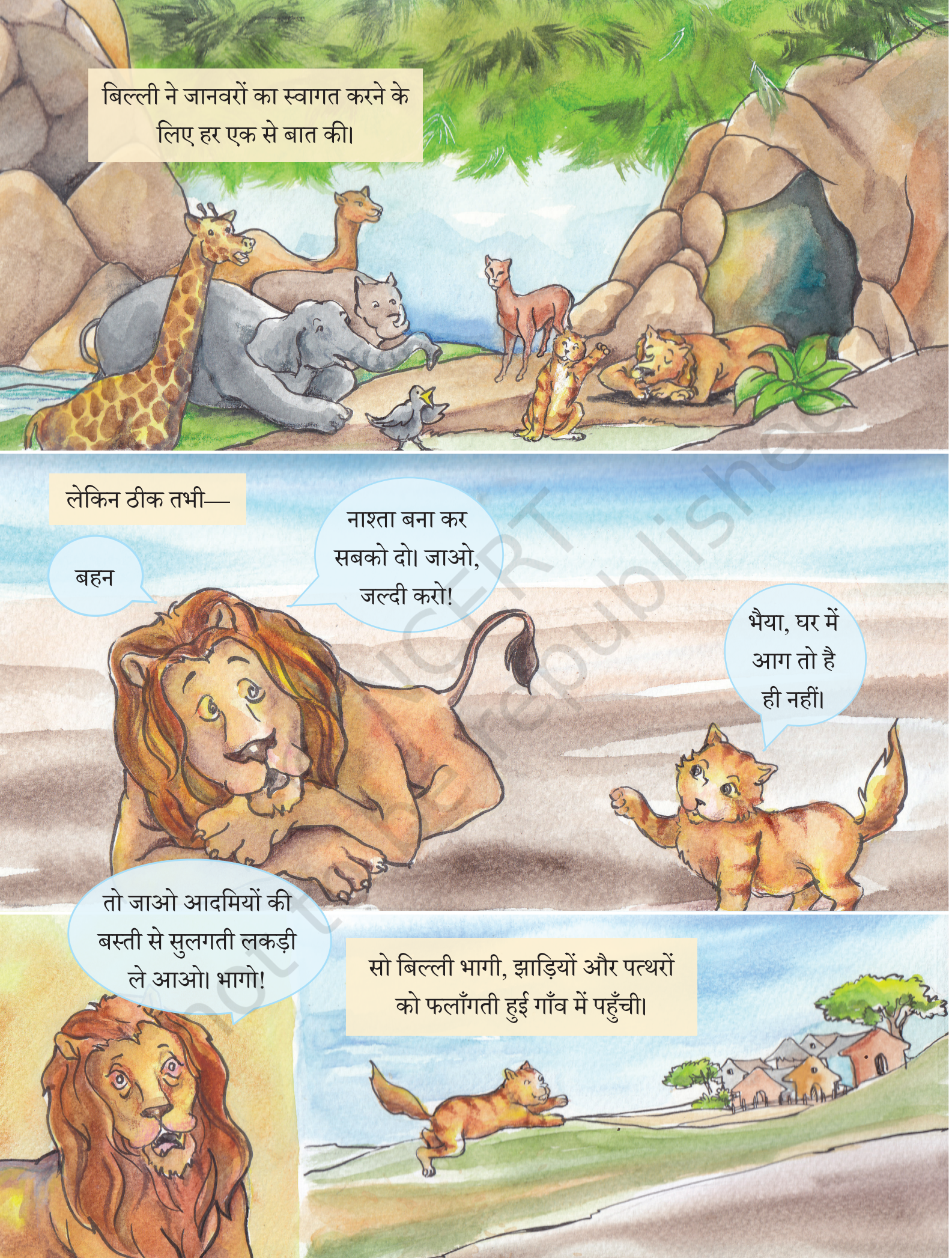
बिल्ली ने जानवरों का स्वागत करने के लिए हर एक से बात की।
लेकिन ठीक तभी—
बहन
नाश्ता बना कर सबको दो। जाओ, जल्दी करो!
भैया, घर में आग तो है ही नहीं।
तो जाओ आदमियों की बस्ती से सुलगती लकड़ी ले आओ। भागो!
सो बिल्ली भागी, झाड़ियों और पत्थरों को फलाँगती हुई गाँव में पहुँची।

वहाँ देखो।
कितनी मुलायम और रेशमी!
डरो नहीं। हम तुम्हें कुछ करेंगे नहीं।
मुझे कभी किसी से इतना प्यार नहीं मिला।
जिस काम से बिल्ली आयी थी, उसे भूल कर बहुत देर तक बच्चों से लाड़ करवाती रही।
गर्र... ईरर sssssss
अचानक, ज़ोर की दहाड़ से जंगल काँप उठा।
यह शेर की दहाड़ थी।
हाय रे, मुझे सुलगती लकड़ी ले जानी थी! मैं भूल कैसे गई?
बिल्ली एक घर में घुसी और एक सुलगती लकड़ी उठा कर झाड़ियों और पत्थरों को फलाँगती हुई भागी।

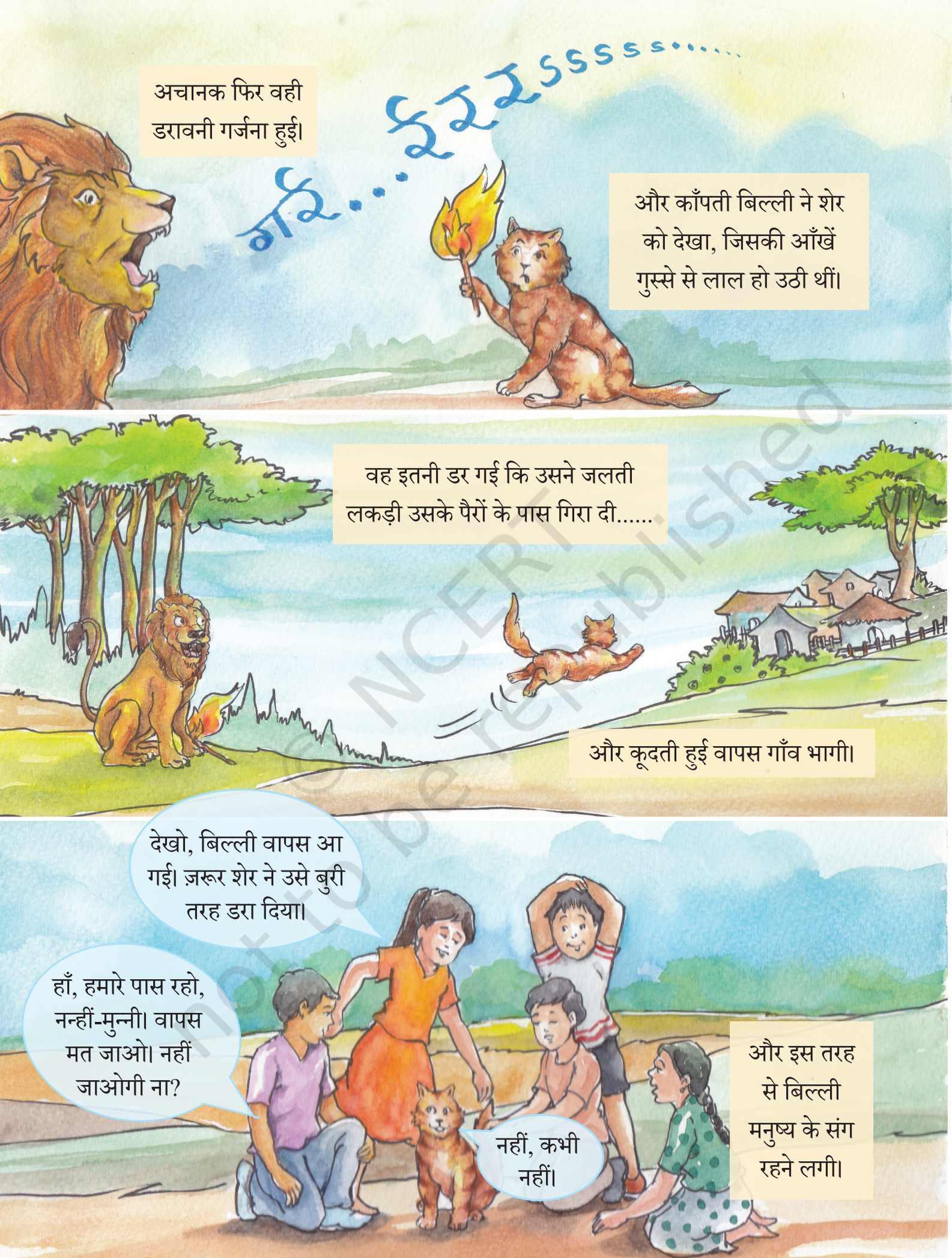

© NCERT not to be republished

पाठ से

1. प्रश्नों के उत्तर बताओ।

(क) बिल्ली जंगल में किसके साथ रहती थी?

.....

.....

(ख) बिल्ली खुश क्यों नहीं थी?

.....

.....

(ग) जानवर शेर के घर क्यों आए?

.....

.....

(घ) बिल्ली बस्ती में क्यों गई?

.....

.....

(ङ) बिल्ली जंगल वापस क्यों नहीं जाना चाहती थी?

.....

.....

2. खाली जगह में सही शब्द छाँटकर लिखो।

(क) शेर बिल्ली का ..... भाई था। (चचेरा/मौसेरा)

(ख) बिल्ली और शेर एक ..... महल में रहते थे। (छोटे/बड़े)

(ग) बिल्ली शेर के साथ बहुत ..... थी। (दुखी/खुश)

(घ) बिल्ली ने शेर के सामने ..... का पत्ता बिछा दिया।
(आम/केले)

(ङ) शेर की आँखें गुस्से से ..... थीं। (लाल/पीली)

© NCERT not to be republished

3. नीचे दी गई हर पंक्ति में एक ऐसा शब्द है जो बाकी दो शब्दों से अलग है। अलग शब्द के नीचे रेखा खींचो।

(क)	बकरी	बिल्ली	बया
(ख)	गाजर	गुलाब	गोभी
(ग)	कानपुर	कोलकाता	ककड़ी
(घ)	खरगोश	खजूर	खरबूजा
(ङ)	हाथी	हिरण	हलवाई

4. पहले वर्ण से शुरू होने वाले दो-दो शब्द और लिखो।

साथ	साग	साल
बहन	.....	.....
आज	.....	.....
पत्ता	.....	.....
लकड़ी	.....	.....

5. उदाहरण के अनुसार नए शब्द बनाते हुए आगे बढ़ाओ।

केला	आयी	शेर
मेला	पायी	बेर
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

© NCERT not to be republished

6. अचानक, ज़ोर की दहाड़ से जंगल काँप उठा — गर्र...र्र र रऽऽऽऽ। जिस तरह शेर दहाड़ता है या ऊँट बलबलाता है, उसी तरह नीचे दिए जानवरों के लिए लिखो।

(क) कुत्ता ....

(ख) गाय ....

(ग) हाथी ....

(घ) बकरी ....

(ङ) मेंढक ....

7. समझो और लिखो।

(क) जंगल में एक शेर रहता था।

जंगल में दो शेर रहते थे।

(ख) जंगल में एक बिल्ली रहती थी।

जंगल में दो ....।

(ग) बिल्ली ने एक बच्चा देखा।

बिल्ली ने तीन ....।

(घ) बिल्ली ने एक सुलगती लकड़ी उठायी।

बिल्ली ने पाँच ....।

(ङ) शेर का हाल जानने एक जानवर आया।

शेर का हाल जानने कई ....।

(च) बिल्ली के रास्ते में एक झाड़ी आयी।

बिल्ली के रास्ते में अनेक ....।

© NCERT not to be republished

अध्याय-3

कठपुतली का राजा

ताकर-ताकर तबला बजता,
कठपुतली का राजा सजता;
पैरों को लहँगे से ढकता,
धागा फिर पगड़ी से लगता।

जंग चढ़ाई पर है जाना,
दुश्मन को है मज़ा चखाना।

तिक्कड़-तिक्कड़ चाल बताकर,
कठपुतली की रानी आती;
लक्कड़ का वह हाथ हिलाती,
भरसक गुस्से में चिल्लाती,

"अरे सोचता क्या है तू,
सज-धज कर क्या खूब लड़ेगा?
आएगा जब दुश्मन तेरा,
क्या वो तेरे पाँव पड़ेगा?"

जंग चढ़ाई पर है जाना,
दुश्मन को है मज़ा चखाना।

ताकर-ताकर तबला बजता,
कठपुतली का राजा सजता;
पैरों को लहँगे से ढकता,
लेकर घोड़ा आगे बढ़ता।

© NCERT not to be republished

जंग चढ़ाई पर है जाना,

दुश्मन को है मज़ा चखाना।

निकल गया जब घुड़सवार,

उधर से आयी एक पुकार;

"भूल गए हो तुम तलवार

भाला रह गया, रह गई ढाल

भाला रह गया, रह गई ढाल।"

ताकर-ताकर तबला बजता,

कठपुतली का राजा चलता;

निकल पड़ा है रूप सँवार,

नहीं है सुनता चीख-पुकार।

जंग चढ़ाई पर है जाना,

दुश्मन को है मज़ा चखाना।

तुमने कभी कठपुतली का नाटक देखा है? कठपुतलियाँ छोटी गुड़ियों जैसी होती हैं। उन्हें एक मेज़ के बराबर मंच पर धागों से नचाया जाता है। कठपुतली से जुड़े धागे कठपुतली नचाने वाले की उँगलियों पर बँधे होते हैं। कठपुतली नचाने वाला ही कठपुतली की तरह आवाज़ निकाल कर बोलता है। कभी कठपुतली तुम्हारे गाँव या मोहल्ले में आए तो ज़रूर देखना।

(मंच बहुत ज़्यादा बड़ा नहीं है। गुरुजी की मेज़ जितना है।)

कठपुतली का राजा घोड़े पर बैठा जा रहा है। वह रंगीन कपड़े और पगड़ी पहने हुए है और उसका घोड़ा फुदक- फुदक कर और ऊँचा उछल कर चल रहा है।

© NCERT not to be republished

तभी सामने से दुश्मन आता है। दुश्मन ने काले कपड़े पहने हैं और उसकी बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। उसके एक हाथ में तलवार है और दूसरे हाथ में काले और सुनहरे रंग की ढाल। बात करते समय दोनों अपनी गर्दन ज़ोर-ज़ोर से हिलाते हैं।)

राजा – (राजा की आवाज़ ऊँची और पतली-सी है। ऐसा लगता है कि वह अपनी नाक से बोल रहा है) दुश्मन आ गया! अरे, मैं तो अपनी तलवार भूल आया। अरे, मैं तो अपना भाला और ढाल भी भूल आया। बाबा रे, अब क्या होगा? बाबा रे!

दुश्मन – (दुश्मन की आवाज़ भारी-भरकम है और जब वो बोलता है तो उसकी मूँछ खूब हिलती है। वो हँसता है) हा! हा! हा! तूने क्या सोचा था? तू दुश्मन से बच निकलेगा? हा! हा! हा!

राजा – दुश्मन भैया, दुश्मन भैया, मैं तुम्हें मज़ा चखाने थोड़े ही निकला था। देखो न, मैं तो तलवार-भाला तक नहीं लाया। मैं तो सिर्फ़ चेहरा देखने वाला शीशा ही लेकर निकला हूँ।
(राजा दुश्मन को शीशा दिखाता है)

दुश्मन – तो क्या हुआ, ले सँभाल!
(और दुश्मन राजा के ऊपर टूट पड़ता है। तलवार उठा कर राजा पर वार करने लगता है।)

राजा – रुको!
(दुश्मन वार करता है। राजा वार बचाता हुआ बीच-बीच में बोलता रहता है।)

राजा – सुनो भाई! अरे रुको तो सही! दुश्मन भैया, रुको! वह देखो...
अभी देखना मेरी तलवार क्या मज़ा चखाती है, तुझे और तेरे शेर को।
(तभी शेर ज़ोर से दहाड़ता है। दुश्मन मुड़ कर देखता है कि शेर एकदम उसके पीछे खड़ा है।)

© NCERT not to be republished

दुश्मन – अरे बाप रे, शेर! बचाओ, शेर आ गया! अरे, बचाओ रे बचाओ!

(दुश्मन लपक कर राजा के पीछे दुबक जाता है।)

राजा – मेरा शीशा कहाँ गया रे?

(राजा झट से चेहरा देखने वाला शीशा निकालता है। शेर उसमें अपना चेहरा देख कर डर के मारे कूद पड़ता है। राजा फिर उसे शीशा दिखाता है।) भागो रे भागो! इस आदमी की मुट्ठी में एक और शेर है। मेरा तो कचूमर ही निकाल देगा। भागो!

(शेर भाग जाता है। दुश्मन धीरे-धीरे राजा के पीछे से निकलता है।)

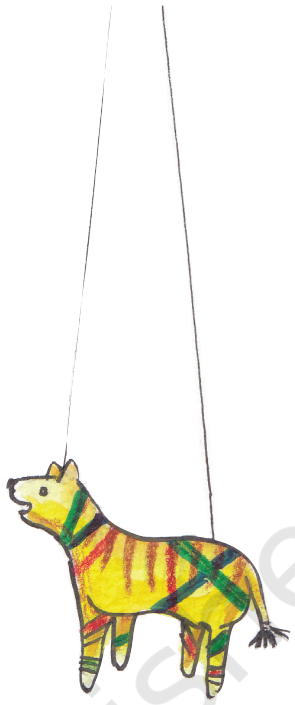

दुश्मन – वाह, राजा भैया! कुछ तो हिम्मत तुममें भी है। दिमाग भी है। मानना पड़ेगा। चलो, करो दोस्ती।

राजा – हाँ, दुश्मन भैया! कुछ तो डरपोकपन तुममें भी है। चलो, मिलाओ हाथ।

(पीछे से)

ताकर-ताकर तबला बजता,
कठपुतली का राजा उठता;
पैरों को लहँगे से ढकता,
पीठ से उसकी झाड़न लगता।
दुश्मन को वह जोड़ चुका है,
जंग लड़ाई छोड़ चुका है।
दुश्मन को वह जोड़ चुका है,
जंग लड़ाई छोड़ चुका है।

© NCERT not to be republished

नवीन शब्द

शब्द		अर्थ
1. भरसक	=	जितनी शक्ति हो सकती है, उतनी का उपयोग करते हुए
2. जंग	=	लड़ाई/युद्ध
3. मज़ा चखाना	=	किसी को उसके किए गए अपराध का दंड देना
4. साहस	=	हिम्मत
5. अधिक	=	बहुत

पाठ से

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो।

(क) राजा ने लड़ाई पर जाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ कीं?

.....

.....

(ख) रानी, राजा पर क्यों चिल्लाई?

.....

.....

(ग) राजा लड़ाई पर कैसे निकला?

.....

.....

(घ) दुश्मन जब राजा के सामने आया तो राजा क्यों घबराया?

.....

.....

© NCERT not to be republished

(ङ) राजा ने अपने आप को दुश्मन से कैसे बचाया?

.....

.....

(च) राजा ने अपने आप को और दुश्मन को शेर से कैसे बचाया?

.....

.....

(छ) दुश्मन राजा का दोस्त कैसे बन गया?

.....

.....

2. इस कविता और नाटक को ध्यान से अपने-अपने मन में पढ़ो। इसके बाद—

- हाव-भाव के साथ पढ़ो।
- नाटक और कविता में कई पात्र हैं। यहाँ सभी पात्रों के नाम लिखो।

  .....

  .....

  .....

- आपस में पात्र तय कर लो। कोई राजा बन जाए, कोई दुश्मन। और भी पात्र चुन लो। अब आप में से कोई एक हाव-भाव के साथ कविता पढ़े। जैसा कविता में लिखा है, वैसा हर पात्र करता जाए। जब नाटक आएगा तो हर पात्र को अपना-अपना संवाद (डायलॉग) पढ़ना है और वैसा ही स्वांग करना है।

© NCERT not to be republished

नाटक खेलने की तैयारी

3. क्या तुमने कठपुतली का खेल देखा है? अगर हाँ, तो लिखो कि उसमें क्या-क्या देखा था।

.....

.....

.....

.....

.....

4. यहाँ हम कठपुतली बनाने के लिए ज़रूरी वस्तुओं के नाम लिख रहे हैं। तुम इनकी मदद से कठपुतलियाँ बनाओ और अध्यापक की मदद से इनके साथ नाटक भी खेलो।

घास, रस्सी, पेंसिल, क्रेयॉन या होली के रंग, गोंद, सूई, कैंची, लकड़ी या बाँस, कागज़, पुरानी कॉपी का कवर।

© NCERT not to be republished

अध्याय-4

क्यूँ-क्यूँ छोरी

छोटी-सी लड़की थी, क़रीब दस साल की। एक बड़े से साँप का पीछा कर रही थी। मैं उसके पीछे भागी और उसकी चोटी पकड़ कर उसे ले आयी।

“ना, मोइना, ना।” मैं उस पर चिल्लाई।

“क्यूँ?” उसने पूछा।

“वह कोई धामन-वामन नहीं है, नाग है, नाग।” मैंने उससे कहा।

“तो! नाग को क्यूँ न पकड़ूँ?”

“क्यों पकड़ो?” मैंने कुछ नाराजगी के साथ पूछा।

“पता है, हम साँप खाते हैं। मुंडी काट दो, चमड़ा बेच दो, माँस पकाकर खा लो।” उसने बड़े भोलेपन से उत्तर दिया।

“नहीं, इसे नहीं।” मैंने उसे समझाते हुए कहा। “तुम्हें ऐसा नहीं करना है।”

“हाँ, हाँ, करूँगी।” उसने हठपूर्वक कहा।

© NCERT not to be republished

"पर क्यों ऐसा करोगी?" मैं उसे शबर सेवा समिति के दफ़्तर तक ले आयी। उसकी माँ खीरी वहाँ एक टोकरी बुन रही थी। "चलो थोड़ा आराम कर लो।" मैंने कहा।

"क्यूँ?" उसने फिर कहा।

"क्यों नहीं? थकी नहीं हो क्या?" मैंने पूछा।

मोइना ने नकारते हुए अपना सिर हिलाते हुए कहा— "बाबू की बकरियाँ कौन घर लाएगा? और लकड़ी लाना, पानी लाना, चिड़िया पकड़ने का फंदा लगाना, ये सब कौन करेगा?"

उसके इन प्रश्नों को सुन कर मैं कुछ सोचने लगी।

खीरी ने उससे कहा— "बाबू ने जो चावल भेजा है, उसके लिए उन्हें धन्यवाद देना न भूलना।"

"क्यूँ? क्यूँ दूँ उसे धन्यवाद? उसकी गोशाला धोती हूँ, हज़ारों काम करती हूँ उसके लिए। कभी धन्यवाद देता है मुझे? मैं क्यूँ उसे धन्यवाद दूँ?"

मोइना अपने काम पर भाग गई। खीरी सिर हिलाती रह गई। फिर मुझसे बोली— ऐसी लड़की नहीं देखी कभी। बस क्यूँ-क्यूँ की रट लगाए रहती है। गाँव के पोस्टमास्टर ने तो इसका नाम ही "क्यूँ-क्यूँ" छोरी" रख दिया है।"

"मोइना मुझे तो अच्छी लगती है।" मैंने खीरी से कहा।

"इतनी ज़िद्दी है कि एक बात पकड़ ले तो उससे हटती नहीं।" खीरी ने कहा।

मोइना आदिवासी लड़की थी। शबर जाति की। शबर लोग गरीब और भूमिहीन थे। पर शबर कभी शिकायत करते सुनायी नहीं देते थे। सिर्फ़ मोइना ही थी जो सवाल पर सवाल करती जाती।

"क्यूँ, मुझे मीलों चलना पड़ता है नदी से पानी लाने के लिए? क्यूँ रहते हैं हम पत्तों की झोंपड़ी में? हम दिन में दो बार चावल क्यों नहीं खा सकते?"

मोइना गाँव के संपन्न लोगों की बकरियाँ चराया करती थी। पर न तो वह अपने को दीन-हीन समझती थी, न ही मालिकों का अहसान मानती।

© NCERT not to be republished

वह अपना काम करती, काम खत्म होने पर घर आ जाती और बुदबुदाती रहती—

"क्यूँ, उनका बचा-खुचा खाऊँ मैं? मैं तो बढ़िया खाना खाऊँगी। शाम को हरे पत्ते वाली भाजी (साग) और चावल और केकड़े मिर्ची वाले। सभी घरवालों के साथ बैठ कर खाऊँगी।"

वैसे शबर अपनी लड़कियों को आमतौर पर काम पर नहीं भेजते। पर मोइना की माँ खीरी एक पाँव से लँगड़ी थी। वह ज़्यादा चल-फिर नही सकती थी। उसके पिता काम की तलाश में दूर जमशेदपुर गए थे और उसका भाई गोरो जलाऊ लकड़ी लेने जंगल जाता था। सो मोइना को भी काम करना पड़ता था।

उस अक्टूबर में मैं 'शबर सेवा समिति' के दफ़्तर में पूरा एक माह रुकी। एक सुबह मोइना ने घोषणा की कि वह समिति वाली झोंपड़ी में मेरे साथ रहेगी।

"बिल्कुल नहीं।" खीरी ने कहा।

"क्यूँ नहीं? इतनी बड़ी झोंपड़ी है। एक बुढ़िया के लिए कितनी जगह चाहिए?"

"तुम्हारे काम का क्या होगा?" मैंने उससे पूछा।

"काम के बाद आया करूँगी।" उसने तुरंत ही अपना निर्णय सुना दिया। और वह एक जोड़ी कपड़े तथा एक नेवले के साथ आ पहुँची। "यह बस ज़रा-सा खाता और बुरे साँपों को दूर भगा आता है।" उसने कहा।

"अच्छे वाले साँपों को मैं पकड़ कर माँ को दे देती हूँ। क्या बढ़िया तरी वाला साँप बनाती है माँ। तुम्हारे लिए भी थोड़ा लाऊँगी।"

समिति के विद्यालय की शिक्षिका मालती ने मुझसे कहा— "आप तो तंग आ जाएँगी इसकी क्यूँ-क्यूँ सुनते-सुनते।"

और वाकई, वह अक्टूबर ऐसा बीता कि पूछो मत। "क्यूँ, मुझे बाबू की बकरियाँ चरानी पड़ती हैं? उसके लड़के खुद क्यूँ नहीं चराते? मछलियाँ बोल क्यूँ नहीं पाती? अगर कई तारे सूरज से बड़े हैं तो वे इतने छोटे क्यूँ

© NCERT not to be republished

नज़र आते हैं?" और हर रात को— "तुम सोने के पहले किताबें क्यूँ पढ़ती हो?"

"इसलिए कि किताबों में तुम्हारी क्यूँ-क्यूँ के जवाब मिलते हैं।" मैंने उसे उत्तर दिया।

यह सुन वह चुप रही। उसने कमरा ठीक-ठाक किया। फूलों वाले पौधे को पानी दिया, नेवले को मछली दी। फिर उसने कहा — "मैं पढ़ना सीखूँगी और अपने सारे सवालों के जवाब खुद ढूँढ़ निकालूँगी।"

जो-जो वह मुझसे सीखती, वह बकरियाँ चराते समय दूसरे बच्चों को बताती। "कई तारे तो सूरज से भी बड़े हैं। सूरज पास है, इसलिए बड़ा दिखता है। मछलियाँ हमारी तरह बातें नहीं करतीं। मछलियों की अपनी भाषा है, जो सुनायी नहीं देती। तुम्हें पता है, पृथ्वी गोल है?"

एक साल बाद जब मैं उस गाँव में दुबारा पहुँची, तो सबसे पहले मोइना की आवाज़ ही सुनायी दी।

"स्कूल क्यूँ बंद है?" समिति के स्कूल के अंदर एक मिमियाती बकरी को अपने साथ घसीटते हुए वह मालती से ललकारने जैसी आवाज़ में पूछ रही थी।

© NCERT not to be republished

"क्या मतलब है तुम्हारा, "क्यों बंद है", कहने का?"

"मैं भी क्यूँ न पढ़ूँ?" उसका दूसरा प्रश्न था।

"तो तुम्हें रोक कौन रहा है?"

"पर कोई कक्षा ही नहीं लगी। कहाँ पढ़ूँ?"

"स्कूल का समय पूरा हो चुका है।"

"क्यूँ?" उसने फिर प्रश्न किया।

"तुम जानती हो मोइना, मैं सुबह नौ बजे से ग्यारह बजे तक कक्षा लगाती हूँ।"

मोइना ने पाँव पटकते हुए कहा— "तुम समय बदल क्यूँ नहीं देती? मुझे बाबू की बकरियाँ चरानी होती हैं, सुबह! मैं तो केवल ग्यारह बजे के बाद ही आ सकती हूँ। तुम पढ़ाओगी नहीं तो मैं सीखूँगी कहाँ से? मैं बूढ़ी माँ को बता दूँगी कि बकरी चराने वाले या गाय चराने वाले, हम लोगों में से कोई भी नहीं आ सकेगा, अगर स्कूल का समय नहीं बदला तो।"

तभी उसने मुझे देखा और अपनी बकरी ले नौ-दो-ग्यारह हो गई।

शाम को घूमते-घूमते मैं मोइना की झोंपड़ी पर गई। मोइना चौके के पास मज़े से बैठी, अपनी छोटी बहन और बड़े भाई को बता रही थी— "एक पेड़ काटो तो दो पेड़ लगाओ। खाने के पहले हाथ धोओ, जानती हो क्यूँ? पेट दर्द हो जाएगा, अगर नहीं धोओगे तो। तुम कुछ नहीं जानते। जानते हो क्यूँ? क्योंकि तुम स्कूल नहीं जाते।"

गाँव में जब प्राइमरी स्कूल खुला तो उसमें दाखिल होने वाली पहली लड़की मोइना थी।

मोइना अब बीस साल की है। वह समिति के स्कूल में पढ़ाती है। अगर तुम उसके स्कूल के पास से गुजरो तो निश्चित ही तुम्हें उसकी आवाज़ सुनायी देगी—

"आलस मत करो। मुझसे सवाल करो। पूछो, क्यों मच्छरों को खत्म करना चाहिए? ध्रुव तारा हमेशा उत्तर की ओर के आकाश में ही क्यों रहता हैं? पेड़ क्यों नहीं काटने चाहिए?"

© NCERT not to be republished

और दूसरे बच्चे भी अब पूछना सीख रहे हैं — "क्यों ?"

वैसे मोइना को पता नहीं है कि उसकी कहानी लिखी जा रही है। अगर उसे पता चल जाए तो कहेगी "क्यूँ? मेरे ही बारे में क्यूँ?"

महाश्वेता देवी

नवीन शब्द

	शब्द		अर्थ
1.	नकारते	=	मना करते
2.	गोशाला	=	गायों के रहने का स्थान
3.	भूमिहीन	=	जिनके पास ज़मीन न हो
4.	निर्णय	=	फैसला
5.	संपन्न	=	जिनके पास धन-दौलत हो

पाठ से

1. मोइना को काम क्यों करना पड़ता था?

.....

.....

.....

2. मोइना स्कूल का समय क्यों बदलवाना चाहती थी?

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

3. मोइना क्या-क्या काम करती थी?

.....

.....

.....

4. मोइना साँप को क्यों पकड़ना चाहती थी?

.....

.....

.....

मोइना का दिन, तुम्हारा दिन

5. सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक तुम्हारा दिन कैसे बीतता है?

(क) अपनी दिनचर्या के बारे में एक अनुच्छेद लिखो।

.....

.....

.....

.....

(ख) बताओ कि तुम्हारी दिनचर्या मोइना की दिनचर्या से किस प्रकार अलग है?

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

भाषा की बात

6. "मुझे बाबू की बकरियाँ क्यों चरानी पड़ती हैं?" मोइना प्राय: 'क्यों' वाले प्रश्न पूछा करती थी। हिंदी में अन्य प्रश्नवाचक शब्द हैं— क्या, कौन, कब, कहाँ, किसलिए, कैसे आदि। प्रत्येक से दो-दो वाक्य बनाओ।

- क्या

  .....

  .....

- कौन

  .....

  .....

- कब

  .....

  .....

- कहाँ

  .....

  .....

- किसलिए

  .....

  .....

© NCERT not to be republished

- कैसे

  .....

  .....

मोइना कैसी है?

7. मोइना के बारे में कोई पाँच विशेषण लिखो, जैसे—

- मोइना बहुत फुर्तीली है।
- .....
- .....
- .....
- .....

कहानी का नाम

8. इस कहानी को 'क्यूँ-क्यूँ छोरी' के बजाय कोई और नाम दो।

.....

अंकों के मुहावरे

9. अंकों से संबंधित कुछ मुहावरे नीचे दिए गए हैं। इनका अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करो।

नौ दो ग्यारह होना

.....

तीन-पाँच करना

.....

© NCERT not to be republished

एक अनार सौ बीमार

.....

एक पंथ दो काज

.....

10. चित्र पहचान कर उसके तीन-तीन पर्यायवाची लिखो और किसी एक शब्द का वाक्य में प्रयोग करो।

....

.....

....

.....

....

.....

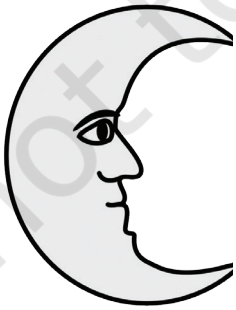

....

.....

© NCERT not to be republished

अध्याय-5

उड़ने वालों के घर

हर जाति के पक्षी के रहने का अपना खास स्थान होता है। जिन्हें पक्षियों और उनकी आदतों को देखने-पहचानने का शौक होता है, उन्हें 'पक्षी-निरीक्षक' कहते हैं। अनुभवी पक्षी-निरीक्षक किसी जंगल, घास के मैदान, झील, दलदल या खेत को देखकर लगभग ठीक-ठीक बता देगा कि वहाँ पर कौन-कौन से पक्षी मिलेंगे। कुछ पक्षियों की प्रजाति पूरे संसार में पायी जाती है और कुछ पक्षी सिर्फ़ खास क्षेत्रों में। इनके अलावा कुछ ऐसे पक्षी भी हैं जो ठंड से बचने और भोजन की तलाश में एक से दूसरे देश में पहुँच जाते हैं। वसंत में जब उनके अपने क्षेत्र में मौसम फिर से अच्छा होता है, तो वापस लौट जाते हैं।

© NCERT not to be republished

पक्षियों के आकार पर इस बात का बहुत असर पड़ता है कि उनके रहने का स्थान समुद्र-तल से कितनी ऊँचाई पर है। हिमालय तथा अन्य पर्वतों पर अधिक ऊँचे ठंडे भागों में पक्षी ज़्यादा बड़े होते हैं तथा पहाड़ियों में छोटे होते हैं। जलवायु का असर पक्षियों के रंग पर भी पड़ता है।

जलवायु के बाद जिस महत्वपूर्ण चीज़ का पक्षियों के जीवन पर असर पड़ता है, वह है वहाँ की वनस्पति; और वनस्पति भी विषुवत-रेखा से दूरी, तापमान, वर्षा और जगह आदि पर निर्भर करती है। खेतों, बाग-बगीचों और उद्यानों की अपेक्षा जंगलों की वनस्पति अलग प्रकार की होती है।

हमारे जंगलों में भड़कीले पक्षियों की भरमार है, जैसे — बड़ा धनेश जो काला और सफ़ेद होता है; सुनहरे रंग के पीलक; लाल, काले और पीले रंग के लालचश्म; रुपहले सफ़ेद पर और पताका की तरह लटकती हुई पूँछ वाले दूधराज। साथ ही बैंगनी, हरे, लाल और पीले रंगों के शकरखोरे तथा धानी रंग के हरेवा, चटकीले रंगों के मोर आदि।

गाँवों और बाग-बगीचों में पाए जाने वाले पक्षियों से हम ज़्यादा परिचित हैं, जैसे गौरैया। वह हमारे नज़दीक ही रहना चाहती है, क्योंकि वह जानती है कि उसे इस तरह काफ़ी कुछ खाने को मिलेगा। साथ ही आपको भूरे-भूरे रंग की मैनाएँ मिलेंगी जो कभी झुकी-झुकी चलती हैं और कभी अकड़-अकड़ कर, और पेड़ों में घूमता हुआ फुर्तीला काले-पीले रंग का रंगगंगरा भी मिलेगा।

© NCERT not to be republished

दूर-दूर तक खेती वाली भूमि में आपको थल-पक्षी ज़्यादा मिलेंगे, क्योंकि वहाँ वृक्ष कम होते हैं। चंडूलों, पिद्दों तथा लाल-भूरे रंग के बगोड़ियों का यही आवास होता है।

कुछ पक्षी घास के मैदानों, दलदलों, झीलों, झरनों और नदियों के किनारों के समीप रहना पसंद करते हैं।

नवीन शब्द

शब्द		अर्थ
1. दलदल	=	भूमि का वह हिस्सा जो बहुत नीचे तक गीला और मुलायम होता है और जिसमें कोई जीव-जंतु नीचे तक धँसते जाते हैं।
2. प्रजाति	=	एक ही जाति के जीव-जंतुओं के समान गुणों के आधार पर किया गया उनका वर्गीकरण
3. वसंत	=	एक ऋतु का नाम
4. जलवायु	=	स्थान विशेष का मौसम
5. वनस्पति	=	पेड़-पौधे
6. विषुवत रेखा	=	ग्लोब को दो बराबर भागों उत्तरी और दक्षिणी गोलार्ध में बाँटने वाली काल्पनिक रेखा
7. परिचित	=	जाना-पहचाना
8. आवास	=	रहने का स्थान

पाठ से

1. खेतों, बाग-बगीचों और उद्यानों की अपेक्षा जंगलों की वनस्पति अलग प्रकार की होती है। दिए गए शब्दों और उदाहरणों से

© NCERT not to be republished

वनस्पति का क्या अर्थ समझ में आता है? नीचे दी गई खाली जगह में एक-एक उदाहरण और जोड़ो।

खेत	गेहूँ	.....	.....
बाग-बगीचे	आम	.....	.....
उद्यान	गुलाब	.....	.....
जंगल	सागौन	.....	.....

2. 'पक्षी-निरीक्षक' का क्या काम होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3. किसी भी पक्षी के आकार पर किस बात का सबसे ज़्यादा असर पड़ता है? अपने उत्तर के समर्थन में पाठ में से कारण खोज कर लिखो?

.....

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

एक ऐसा पक्षी

4. नीचे दी गई जगह में पक्षी का नाम लिखो। यह भी बताओ कि तुमने वह पक्षी देखा है या नहीं?

पक्षी की विशेषता	नाम	क्या तुमने देखा है?
रात में जागता हो		
बारिश में नाचता हो		
सुबह जगाता हो		
अपने अंडे किसी दूसरे पक्षी के घोंसले में दे		
बिल्ली को देखकर आँखे बंद कर ले		

भाषा की बात

5. पाठ में पक्षियों के रूप-रंग के लिए 'भड़कीले' और 'चटकीले' शब्दों का प्रयोग हुआ है। अपने आस-पास ऐसी चीज़ें ढूँढ़ो जो भड़कीली या चटकीली हों।

....

....

6. सुनहरा और बैंगनी रंगों का नाम किन चीज़ों के रंग पर आधारित है?

.....

.....

© NCERT not to be republished

7. दिए गए शब्दों का रूप बदलकर खाली जगह भरो।

(क) दूर आकाश में एक ..... तारा था। (नन्ही)

(ख) गिलहरी छोटे फल ..... थी। (खाता)

(ग) सरसों के साग के साथ मक्के की रोटी चाव से ..... जा सकती है। (खाना)

(घ) पेड़ के पत्ते नीचे गिर ..... । (गया)

(ङ) गौरैया बारिश में ..... हो गई। (गीला)

पत्र

8. अपने मित्र को पत्र लिखकर बताओ कि पक्षियों को बचाने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है।

9. नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य लिखो।

(क) थोड़ा-थोड़ा— .....
.....

(ख) हल्का-हल्का— .....
.....

(ग) साथ-साथ— .....
.....

(घ) धीरे-धीरे— .....
.....

(ङ) अभी-अभी— .....
.....

© NCERT not to be republished

पहेलियाँ

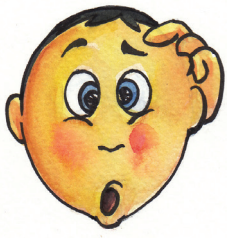

नीचे दी गई पहेलियाँ बूझो। इनके उत्तर इस पुस्तक में ही कहीं न कहीं मिल जाएँगे।

1. लाल लाल तवा, सोने से मढ़ा
   पूरब से आया, पश्चिम को गया।

.....

2. बादल लेकर उड़ती हूँ
   हर साँस में सबके आती,
   न ही किसी को दिखती हूँ
   पर जीवन सबको देती।

.....

3. आसमान से टपका हूँ
   ज़्यादा देर न टिकता हूँ,
   जल्दी करके मुझको पकड़ो
   नहीं तो फिर मैं गलता हूँ।

.....

© NCERT not to be republished

4. बीन बजाता आता है,
खून पी उड़ जाता है।

.....

5. खट्टे-खट्टे रसवाला मैं
चीज़ इक अनमोल,
पीला-पीला छिलका मेरा
ऊपर से मैं गोल-मटोल।

.....

© NCERT not to be republished

चरण-3 — स्तर के उपयुक्त

अध्याय-1

जीव-जंतुओं का अद्भुत संसार

चूहे के सामने के दाँत कभी भी बढ़ना बंद नहीं करते। इसलिए चूहों को लगातार सख्त चीज़ों को कुतरना पड़ता है, ताकि ये दाँत लगातार घिसते रहें। इसलिए उन्हें जो कुछ भी मिलता है, चाहे प्लास्टिक या सीमेंट, वे कुतरते रहते हैं। अगर वे नहीं कुतरें तो उनके दाँत इतने बड़े हो जाएँगे कि वे अपना मुँह भी बंद नहीं कर सकेंगे।

उआँ! मेरे दाँत इतने लंबे हो गए हैं कि मैं कुछ नहीं खा सकता।

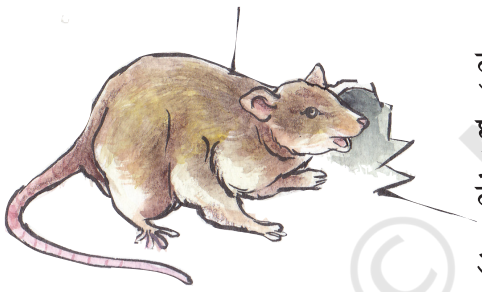

जब कोई चूहा किसी चीज़ को कुतरता है तो उसके ऊपरी दाँत चीज़ में घुसकर उसे कसके नीचे दबाते हैं। नीचे के दाँत उसे आगे की ओर धक्का देते हैं और साथ ही खाने का कुछ हिस्सा छील भी लेते हैं। चूहों के दाँत इतने ज़्यादा मज़बूत होते हैं कि वे सीमेंट और धातु जैसी चीज़ों को भी कुतर सकते हैं। इसलिए चूहों को सीमेंट के ज़रिए सुरंग बनाने से रोकने के लिए सीमेंट में काँच के तीखे टूटे टुकड़े मिलाए जाते हैं।

चूहे रस्सियों पर चल सकते हैं। संतुलन बनाने के लिए वे अपनी लंबी पूँछ का इस्तेमाल करते हैं।

चूहे सँकरी से सँकरी जगह में से रेंग कर जा सकते हैं। अगर वे किसी तरह अपना सिर घुसा लें, तो बाकी शरीर अंदर पहुँच ही जाता है।

© NCERT not to be republished

जब वे अपने पिछले पैरों पर खड़े होते हैं, वे अपने शरीर को पूँछ की मदद से सहारा देते हैं।

चूहों की आँखें कमज़ोर होती हैं। वे ढूँढ़ने के लिए दीवार या ज़मीन को अपनी लंबी मूँछों से छूकर महसूस करते रहते हैं।

चूहे सड़ा हुआ खाना खाने पर बीमार नहीं पड़ते।

चूहों को ठंड से भी कोई फ़र्क नहीं पड़ता।

खरगोश और गिलहरियाँ भी दो ऐसे जीव (rodents) हैं जिनके दाँत हमेशा बढ़ते रहते हैं। इसलिये ये भी चूहों की तरह हमेशा कुतरते रहते हैं, ताकि इनके दाँत छोटे रहें।

जंगल में चूहों को कम ताकतवर खाना मिलता है, इसलिए वे लगातार कुछ-न-कुछ खाते रहते हैं। जब चूहे इंसानों के आस-पास होते हैं, उनका भोजन बेहतर होता है, इसलिए वे कम खाते हैं।

नवीन शब्द

शब्द		अर्थ
1. अद्‌भुत	=	अनोखा/आश्चर्यजनक
2. सँकरी	=	तंग/संकीर्ण
3. उद्यान	=	बाग/बगीचा
4. परिचित	=	जिसकी जानकारी हो चुकी है

© NCERT not to be republished

पाठ से

1. चूहों को लगातार सख्त चीज़ों कों क्यों कुतरना पड़ता है?

.....

.....

2. किस बात से पता चल रहा है कि चूहों के दाँत बहुत मज़बूत होते हैं?

.....

.....

3. चूहे सुरंग न बना सकें, इसके लिए सीमेंट में क्या मिलाया जाता है?

.....

.....

4. चूहों को बेहतर भोजन कहाँ पर मिलता है?

.....

.....

5. चूहों की तरह चीज़ें कुतरने वाले और जीवों के नाम बताओ।

.....

.....

6. चूहों की आँखें कमज़ोर होती हैं। वे जगह का अनुमान लगाने के लिए क्या करते हैं?

.....

.....

© NCERT not to be republished

पाठ से आगे

7. इस पाठ से आपको चूहों के बारे में मज़ेदार जानकारी मिली। आपने अपने घर, आस-पड़ोस या विद्यालय में चूहों को देखा होगा और उनके बारे में सुना भी होगा। अपनी देखी-सुनी बातें या कोई कहानी लिखो और सुनाओ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8. आप अपने आस-पास रहने वाले किसी पशु-पक्षी जैसे कुत्ता, बिल्ली, गाय, मुर्गी आदि के बारे में बहुत कुछ जानते होंगे। उसका चित्र बनाओ और उससे संबंधित जानकारी लिखो।

© NCERT not to be republished

जानकारी—

.....

.....

.....

9. आपने चूहे और बिल्ली के आपसी संबंध के बारे में कविता, कहानी सुनी और पढ़ी होगी, कोई एक कक्षा में सुनाओ।

भाषा की बात

10. रेखांकित शब्द अपने आगे वाले शब्द की विशेषता बता रहे हैं। इन्हें 'विशेषण' कहा जाता है। जैसे—

- सख्त चीज़
- बड़े दाँत
- मज़बूत दाँत
- लंबी पूँछ

अब नीचे लिखे शब्दों के लिए विशेषण छाँटकर लिखो।

सँकरी	तीखे	पिछले	ताकतवर

- ..... दाँत
- ..... दरवाज़े
- ..... गली
- ..... खाना

© NCERT not to be republished

12. नीचे दिए गए चित्रों को पहचानो और उनके लिए उचित विशेषण लिखो।

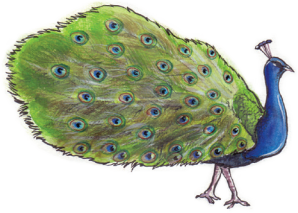

.....

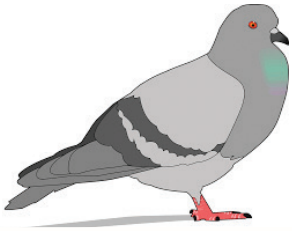

.....

.....

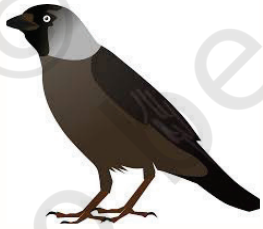

.....

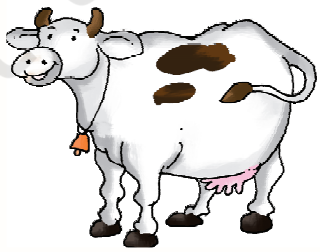

.....

© NCERT not to be republished

अध्याय-2

स्वतंत्रता की ओर

धनी को पता था कि आश्रम में कोई बड़ी योजना बन रही है, पर उसे कोई कुछ न बताता। "वे सब समझते हैं कि मैं नौ साल का हूँ, इसलिए मैं बुद्धू हूँ। पर मैं बुद्धू नहीं हूँ!" धनी मन ही मन बड़बड़ाया।

धनी और उसके माता-पिता बड़ी खास जगह में रहते थे— अहमदाबाद के पास, महात्मा गाँधी के साबरमती आश्रम में, जहाँ पूरे भारत से लोग रहने आते थे। गाँधी जी की तरह वे सब भी भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे थे। जब वे आश्रम में ठहरते तो चरखों पर खादी का सूत कातते, भजन गाते और गाँधी जी की बातें सुनते।

साबरमती में सबको कोई न कोई काम करना होता— खाना पकाना, बर्तन धोना, कपड़े धोना, कुएँ से पानी लाना, गाय और बकरियों का दूध दुहना और सब्ज़ी उगाना। धनी का काम था बिन्नी की देखभाल करना। बिन्नी, आश्रम की बकरी थी। धनी को अपना काम पसंद था, क्योंकि बिन्नी उसकी सबसे अच्छी दोस्त थी। धनी को उससे बातें करना अच्छा लगता था।

उस दिन सुबह, धनी बिन्नी को हरी घास खिला कर, उसके बर्तन में पानी डालते हुए बोला, "कोई बात ज़रूर है बिन्नी! वे सब गाँधी जी के कमरे में बैठकर बातें करते हैं। कोई योजना बनायी जा रही है। मैं सब समझता हूँ।"

बिन्नी ने घास चबाते हुए सिर हिलाया, जैसे कि वह धनी की बात समझ रही हो। धनी को भूख लगी।

© NCERT not to be republished

कूदती-फाँदती बिन्नी को लेकर वह रसोईघर की तरफ़ चला। उसकी माँ चूल्हा फूँक रही थीं और कमरे में धुआँ भर रहा था।

"अम्मा, क्या गाँधी जी कहीं जा रहे हैं?" उसने पूछा।

खाँसते हुए माँ बोलीं, "वे सब यात्रा पर जा रहे हैं।"

"यात्रा? "कहाँ जा रहे हैं?" धनी ने सवाल किया। "समुद्र के पास कहीं। अब सवाल पूछना बंद करो और जाओ यहाँ से धनी! अम्मा ज़रा गुस्से से बोलीं, "पहले मुझे खाना पकाने दो।"

धनी सब्ज़ी की क्यारियों की तरफ़ निकल गया जहाँ बूढ़ा बिंदा आलू खोद रहा था। "बिंदा चाचा," धनी उनके पास बैठ गया, "आप भी यात्रा पर जा रहे हैं क्या?" बिंदा ने सिर हिलाकर मना किया। उसके कुछ बोलने से पहले धनी ने उतावले होकर पूछा, "कौन जा रहे हैं? कहाँ जा रहे हैं? क्या हो रहा है?" बिंदा ने खोदना रोक दिया और कहा, "तुम्हारे सब सवालों के जवाब दूँगा, पर पहले इस बकरी को बाँधो! मेरा सारा पालक चबा रही है!"

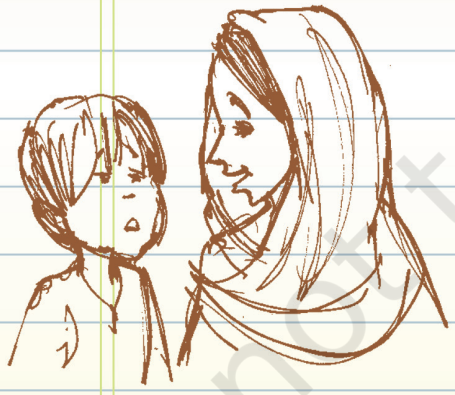

धनी बिन्नी को खींच कर ले गया और पास के नींबू के पेड़ से बाँध दिया। फिर बिंदा ने उसे यात्रा के बारे में बताया। गाँधी जी और उनके कुछ साथी गुजरात में पैदल चलते हुए, गाँवों और शहरों से होते हुए पूरा महीना चलेंगे। दांडी पहुँच कर वे नमक बनाएँगे।

© NCERT not to be republished

नमक! धनी चौंक कर उठ बैठा, "नमक क्यों बनाएँगे? वह तो किसी भी दुकान से खरीदा जा सकता है !

"हाँ, मुझे मालूम है।" बिंदा हँसा, "पर महात्मा जी की एक योजना है। यह तो तुम्हें पता ही है कि वह किसी बात के विरोध में ही यात्रा करते हैं या जुलूस निकालते हैं, है न?"

"हाँ, बिल्कुल सही। मैं जानता हूँ। वे अंग्रेज़ सरकार के खिलाफ़ सत्याग्रह के जुलूस निकालते हैं जिससे कि उनके खिलाफ़ लड़ सकें और भारत स्वतंत्र हो जाए। पर नमक को लेकर विरोध क्यों कर रहे हैं? यह तो समझदारी वाली बात नहीं है।"

"बिल्कुल, धनी! क्या तुम्हें पता है कि हमें नमक पर 'कर' देना पड़ता है?"

"अच्छा।" धनी हैरान रह गया।

"नमक की ज़रूरत सभी को है ..... इसका मतलब है कि हर भारतवासी, गरीब से गरीब भी, यह कर देता है", बिंदा चाचा ने आगे समझाया।

"लेकिन यह तो सरासर अन्याय है।" धनी की आँखों में गुस्सा था।

"हाँ, यह अन्याय है। इतना ही नहीं, भारतीय लोगों को नमक बनाने की मनाही है। महात्मा जी ने ब्रिटिश सरकार को कर हटाने को कहा पर उन्होंने यह बात ठुकरा दी। इसलिए उन्होंने निश्चय किया है कि वे दांडी चल कर जाएँगे और समुद्र के पानी से नमक बनाएँगे।"

© NCERT not to be republished

"एक महीने तक पैदल चलेंगे!" धनी सोच कर परेशान हो रहा था। "गाँधी जी तो थक जाएँगे। वे दांडी बस या ट्रेन से क्यों नहीं जा सकते?"

"क्योंकि, यदि वे इस लंबी यात्रा पर दांडी तक पैदल जाएँगे तो यह खबर फैलेगी। अखबारों में फ़ोटो छपेगी, रेडियो पर जाएगी! और पूरी दुनिया के लोग जान जाएँगे कि हम अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं। और अंग्रेज़ सरकार के लिए यह बड़ी शर्म की बात होगी।"

"गाँधी जी, बड़े ही अक्लमंद हैं, हैं न? धनी की आँखे चमकीं।

बिंदा ने हँसकर कहा, "हाँ, वह तो हैं ही।"

दोपहर को जब आश्रम में थोड़ी शांति छाई, धनी अपने पिता को ढूँढ़ने निकला। वह एक पेड़ के नीचे बैठकर चरखा कात रहे थे।

"पिता जी, क्या आप और अम्मा दांडी यात्रा पर जा रहे हैं? धनी ने सीधे काम की बात पूछी।

© NCERT not to be republished

"मैं जा रहा हूँ। तुम और अम्मा यहीं रहोगे।"

"मैं भी आपके साथ चल रहा हूँ।"

"बेकार की बात मत करो धनी! तुम इतना लंबा नहीं चल पाओगे। आश्रम के नौजवान ही जा रहे हैं।"

धनी ने हठ पकड़ ली, "मैं नौ साल का हूँ और आपसे तेज़ दौड़ सकता हूँ।"

धनी के पिता ने चरखा रोक कर बड़े धीरज से समझाया, "सिर्फ़ वे लोग जाएँगे जिन्हें महात्मा जी ने खुद चुना है।"

"ठीक है! मैं उन्हीं से बात करूँगा। वह ज़रूर हाँ कहेंगे!" धनी खड़े होकर बोला और वहाँ से चल दिया।

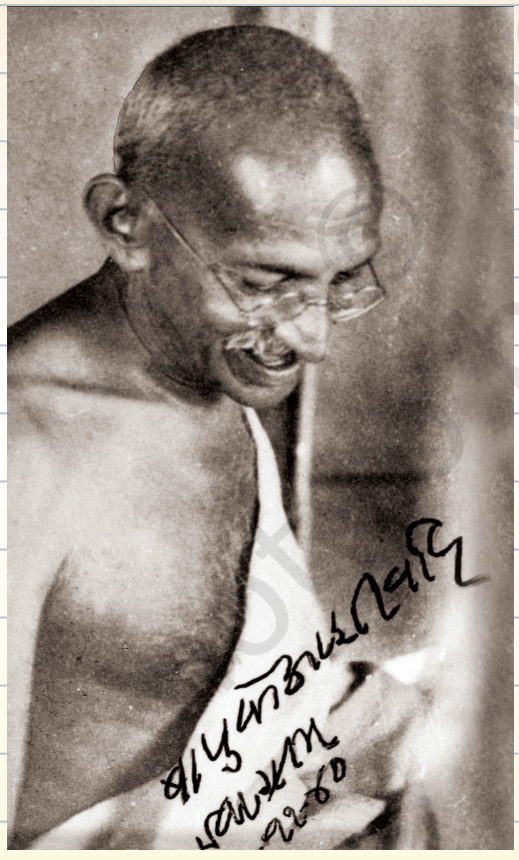

गाँधी जी बड़े व्यस्त रहते थे। उन्हें अकेले पकड़ पाना आसान नहीं था। पर धनी को वह समय मालूम था जब उन्हें बात सुनने का समय होगा— रोज़ सुबह, वह आश्रम में पैदल घूमते थे।

अगले दिन जैसे ही सूरज निकला, धनी बिस्तर छोड़कर गाँधी जी को ढूँढ़ने निकला। वे गौशाला में गायों को देख रहे थे। फिर वह सब्ज़ी के बगीचे में मटर और बंदगोभी देखते हुए बिंदा से बात करने लगे। धनी और बिन्नी लगातार उनके पीछे-पीछे चल रहे थे।

अंत में, गाँधी जी अपनी झोंपड़ी की ओर चले। बरामदे में चरखे के पास बैठ कर उन्होंने धनी को पुकारा, "यहाँ आओ, बेटा!"

धनी दौड़कर उनके पास पहुँचा। बिन्नी भी साथ में कूदती हुई आयी।

"तुम्हारा क्या नाम है, बेटा?"

"धनी, बापू।"

"और यह तुम्हारी बकरी है?"

"जी हाँ, यह मेरी दोस्त बिन्नी है, जिसका दूध आप रोज़ पीते हैं", धनी गर्व से मुस्कराया, "मैं इसकी देखभाल करता हूँ।"

"बहुत अच्छा! गाँधी जी ने हाथ हिलाकर कहा, "अब यह बताओ धनी कि तुम और बिन्नी सुबह से मेरे पीछे क्यों घूम रहे हो?"

"मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था", धनी थोड़ा घबराया। "क्या मैं आपके साथ दांडी चल सकता हूँ?" हिम्मत करके उसने कह डाला।

गाँधी जी मुस्कुराए, "तुम अभी छोटे हो बेटा! दांडी तो बहुत दूर है। सिर्फ़ तुम्हारे पिता जैसे नौजवान ही मेरे साथ चल पाएँगे।"

"पर आप तो नौजवान नहीं हैं", धनी बोला, "आप नहीं थक जाएँगे?"

"मैं बहुत अच्छे से चलता हूँ", गाँधी जी ने कहा।

© NCERT not to be republished

"मैं भी बहुत अच्छे से चलता हूँ", धनी भी अड़ गया।

"हाँ, ठीक बात है", कुछ सोचकर गाँधी जी बोले, "मगर एक समस्या है। अगर तुम मेरे साथ जाओगे तो बिन्नी को कौन देखेगा? इतना चलने के बाद, मैं तो कमज़ोर हो जाऊँगा। इसलिए, जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा, जिससे कि मेरी ताकत लौट आए।"

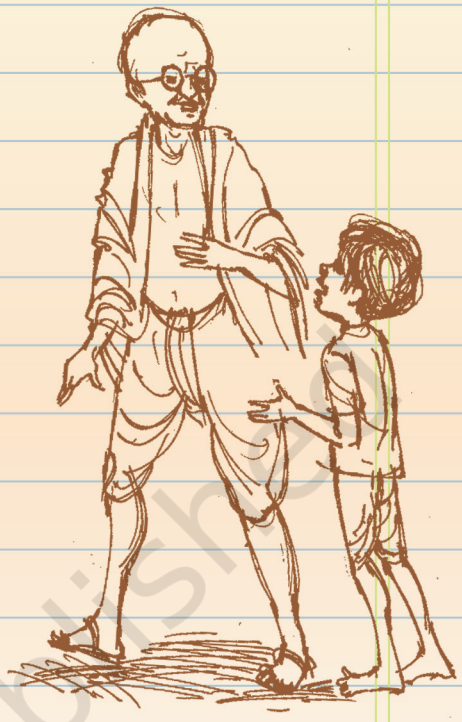

"हूँ..... यह बात तो ठीक है, बिन्नी तभी खाती है, जब मैं उसे खिलाता हूँ", धनी ने प्यार से बिन्नी का सिर सहलाया, "और सिर्फ़ मैं जानता हूँ कि इसे क्या पसंद हैं।"

"बिल्कुल सही। तो क्या तुम आश्रम में रहकर मेरे लिए बिन्नी की देखभाल करोगे? गाँधी जी प्यार से बोले।

"जी, हाँ, करूँगा", धनी बोला, "बिन्नी और मैं आपका इंतज़ार करेंगे।"

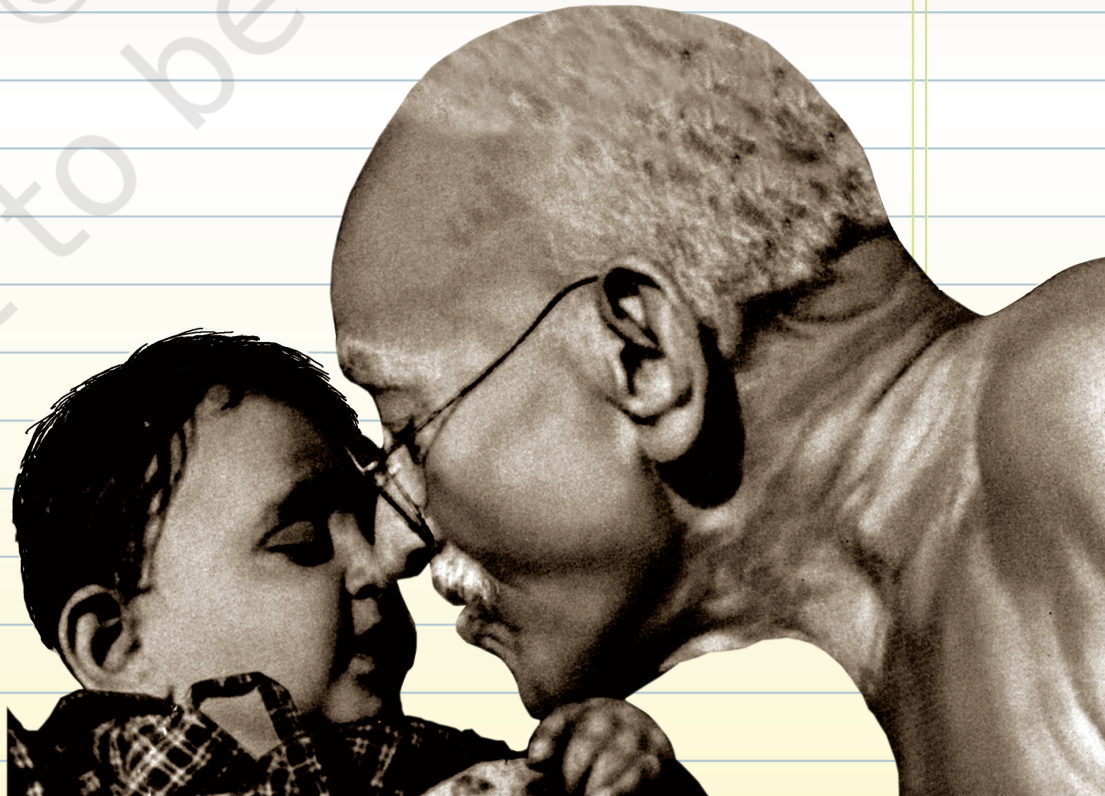

© NCERT not to be republished

नवीन शब्द

	शब्द		अर्थ
1.	स्वतंत्रता	=	आज़ादी
2.	उतावला	=	जल्दबाज़
3.	सत्याग्रह	=	सत्य के लिए आग्रह
4.	अन्याय	=	न्याय न करना/ऐसा कार्य जो न्यायसंगत न हो
5.	अक्लमंद	=	समझदार
6.	हठ	=	ज़िद
7.	गौशाला	=	गायों को रखने का स्थान

प्यारे बापू

1. इस कहानी को पढ़कर तुम्हें बापू के बारे में कई बातें पता चली होंगी। उनमें से कोई तीन बातें यहाँ लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

चूल्हा

धनी की माँ चूल्हा फूँक रही थीं।

2. धनी की माँ खाना पकाने के लिए चूल्हे का इस्तेमाल करती थीं। नीचे कुछ चित्र बने हैं। इनके नाम पता करो और लिखो।

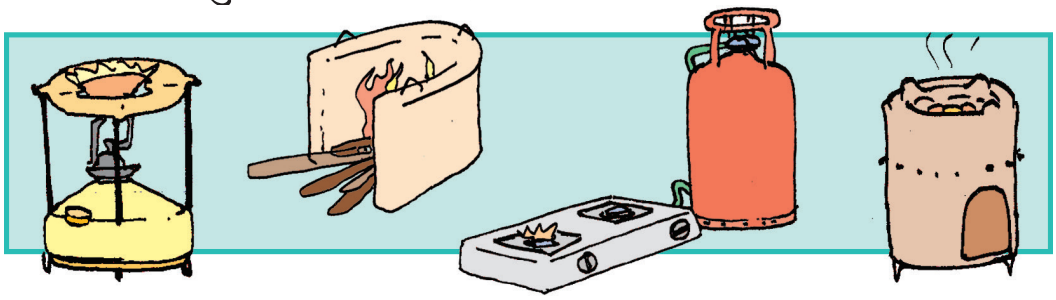

....

(क) इनमें कौन-कौन से ईंधन का इस्तेमाल किया जाता है?

.....

.....

(ख) तुम्हारे घर में खाना पकाने के लिए इनमें से किसका इस्तेमाल किया जाता है?

.....

.....

3. नीचे कहानी में आए कुछ शब्द लिखे हैं। कक्षा में चार-चार के समूह में एक-एक चीज़ के बारे में पता करो।

स्वतंत्रता	सत्याग्रह	खादी	चरखा

तुम इस काम में अपने दोस्तों से, बड़ों से, शब्दकोश या पुस्तकालय से सहायता ले सकते हो। जानकारी इकट्ठा करने के बाद कक्षा में इसके बारे में बताओ।

© NCERT not to be republished

आगे की कहानी

गाँधी जी ने धनी से कहा, "क्या तुम आश्रम में ही रहकर मेरे लिए बिन्नी की देखभाल करोगे?"

धनी ने गाँधी जी की बात मान ली।

4. जब गाँधी जी दांडी यात्रा से लौटे होंगे, तब आश्रम में क्या-क्या हुआ होगा? आगे की कहानी सोचकर लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

कहानी से

5. धनी ने गाँधी जी से सुबह के समय बात करना क्यों ठीक समझा होगा?

.....

.....

6. धनी बिन्नी की देखभाल कैसे करता था?

.....

.....

7. धनी को यह कैसे महसूस हुआ होगा कि आश्रम में कोई योजना बनायी जा रही है?

.....

.....

© NCERT not to be republished

कहानी और तुम

8. धनी यात्रा पर जाने के लिए उत्सुक क्यों था?

.....

.....

.....

- अगर तुम धनी की जगह होते तो क्या तुम यात्रा पर जाने की ज़िद करते? क्यों?

.....

.....

.....

9. गाँधी जी ने धनी को न जाने के लिए कैसे मनाया?

.....

.....

.....

- क्या तुम गाँधी जी के तर्क से सहमत हो? क्यों?

.....

.....

.....

ताकत के लिए

गाँधी जी ने कहा, "जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा, जिससे कि मेरी ताकत लौट आए।"

© NCERT not to be republished

10. बताओ, खूब सारी ताकत और अच्छी सेहत के लिए तुम क्या-क्या खाओगे-पिओगे?

चटपटी अंकुरित दाल	मीठा दूध	गरम समोसे
रसीला आम	करारे गोलगप्पे	गरम साग
कुरकुरी मक्के की रोटी	ठंडी आइसक्रीम	खुशबूदार दाल
रंग-बिरंगी टॉफ़ी	मसालेदार अचार	ठंडा शरबत

विशेषता के शब्द

11. अभी तुमने जिन खाने-पीने की चीज़ों के नाम पढ़े, उनकी विशेषता बता रहे हैं, ये शब्द—

चटपटी, मीठा, गरम, ठंडा, कुरकुरी आदि

नीचे लिखी चीज़ों की विशेषता बताने वाले शब्द सोचकर लिखो।

..... हलवा	..... पेड़
..... नमक	..... चींटी
..... पत्थर	..... कुर्ता
..... चश्मा	..... झंडा

चाँद की बिंदी

12. नीचे लिखे शब्दों में सही जगह पर अनुस्वार (ं) या चन्द्रबिंदु (ँ) लगाओ।

मा	बदर	ऊट	आख
पख	चाद	सतरा	गाठ
बाध	अकुर	नदन	साझ

© NCERT not to be republished

ऐसे थे बापू

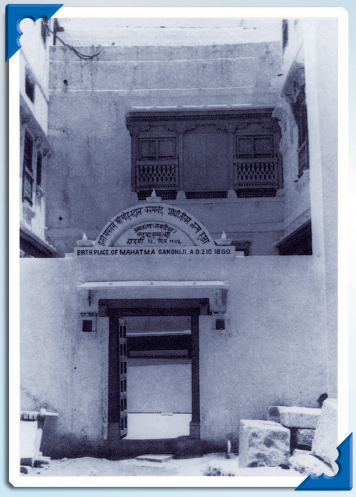

पोरबंदर जहाँ गाँधी जी का जन्म हुआ था।

प्राथमिक विद्यालय, राजकोट जहाँ गाँधी जी पढ़ते थे।

गाँधी जी, 7 साल की आयु में।

गाँधी जी और कस्तूरबा सुबह सैर करते हुए।

महात्मा गाँधी प्रार्थना सभा में।

© NCERT not to be republished

महात्मा गाँधी और रवींद्रनाथ टैगोर,
शांति निकेतन में (पश्चिम बंगाल)

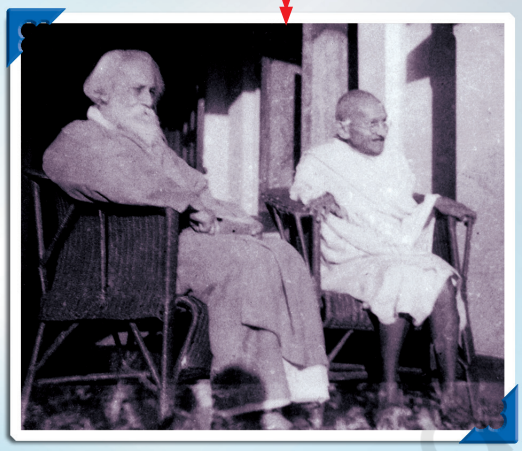

महात्मा गाँधी काम करते हुए

महात्मा
गाँधी
लिखते हुए

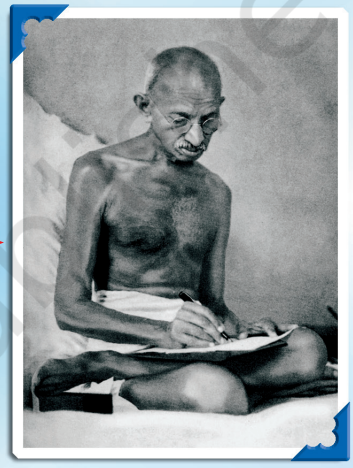

महात्मा गाँधी तुलसी पौधा लगाते हुए

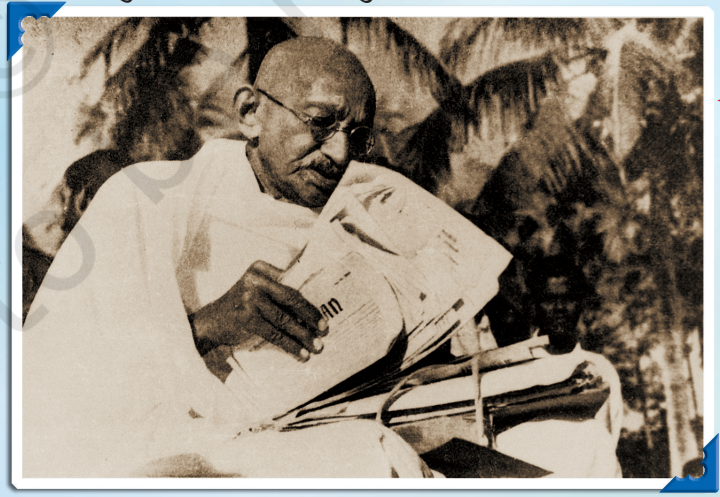

महात्मा गाँधी
पत्र पढ़ते हुए

© NCERT not to be republished

अध्याय-3

पानी रे पानी!

कहाँ से आता है हमारा पानी और फिर कहाँ चला जाता है हमारा पानी? हमने कभी इस बारे में कुछ सोचा है? सोचा तो नहीं होगा शायद, पर इस बारे में पढ़ा ज़रूर है। एक सुंदर-सा चित्र भी होता है, पाठ के साथ। सूरज, समुद्र, बादल, हवा, धरती, फिर बरसात की बूँदें और लो फिर बहती हुई एक नदी और उसके किनारे बसा तुम्हारा, हमारा गाँव या शहर। चित्र के दूसरे भाग में यही नदी अपने चारों तरफ का पानी लेकर उसी समुद्र में मिलती दिखती है। चित्र में कुछ तीर भी बने रहते हैं। समुद्र से उठी भाप बादल बनकर पानी में बदलती है और फिर इन तीरों के सहारे जल की यात्रा एक तरफ से शुरू होकर समुद्र में वापस मिल जाती है। जल-चक्र पूरा हो जाता है। यह तो हुई जल-चक्र की किताबी बात। पर अब तो हम सबके घरों में, स्कूल में, माता-पिता के दफ़्तरों में, कारखानों और खेतों में पानी का कुछ अजीब-सा चक्कर सामने आने लगा है।

नलों में अब पूरे समय पानी नहीं आता। नल खोलो तो उससे पानी के बदले सूँ-सूँ की आवाज़ आने लगती है। पानी आता भी है तो बेवक्त। कभी देर रात को तो कभी भोर सबेरे। मीठी नींद छोड़कर घर भर की बाल्टियाँ, बर्तन और घड़े भरते फिरो। पानी को लेकर कभी-कभी, कहीं-कहीं आपस में तू-तू, मैं-मैं भी होने लगती हैं।

रोज़-रोज़ के इन झगड़े-टंटों से बचने के लिए कई घरों में लोग नलों के पाइप में मोटर लगवा लेते हैं। इससे

© NCERT not to be republished

कई घरों का पानी खिंचकर एक ही घर में आ जाता है। यह तो अपने आस-पास का हक छीनने जैसा काम है। लेकिन मजबूरी मानकर इस काम को मोहल्ले में कोई एक घर करता है तो कई घर यही करने लगते हैं। पानी की कमी और बढ़ जाती है। शहरों में तो अब कई चीज़ों की तरह पानी भी बिकने लगा है। यह कमी गाँव-शहरों में ही नहीं, बल्कि हमारे प्रदेशों की राजधानियों में और दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और बंगलुरू जैसे बड़े शहरों में भी लोगों को भयानक कष्ट में डाल देती है। देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसी हालत बन जाती है।

यह तो हुई गर्मी के मौसम की बात। लेकिन बरसात के मौसम में क्या होता है? लो, सब तरफ पानी ही बहने लगता है। हमारे-तुम्हारे घर, स्कूल, सड़कों, रेल की पटरियों पर पानी भर जाता है। देश के कई भाग बाढ़ में डूब जाते हैं। यह बाढ़ न गाँवों को छोड़ती है और न मुंबई जैसे बड़े शहरों को। कुछ दिनों के लिए सब कुछ थम जाता है, सब कुछ बह जाता है।

ये हालात हमें बताते हैं कि पानी का बेहद कम हो जाना और पानी का बेहद ज़्यादा हो जाना, यानी अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि हम इन दोनों को ठीक से समझ सकें और सँभाल लें तो इन कई समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

© NCERT not to be republished

चलो, थोड़ी देर के लिए हम पानी के इस चक्कर को भूल जाएँ और याद करें अपनी गुल्लक को। जब भी हमें कोई पैसा देता है, हम खुश होकर दौड़कर, उसे झट-से अपनी गुल्लक में डाल देते हैं।

एक रुपया, दो रुपया, पाँच रुपया, कभी सिक्के, तो कभी छोटे-बड़े नोट— सब इसमें धीरे-धीरे जमा होते जाते हैं। फिर जब कभी हमें कुछ पैसों की ज़रूरत पड़ती है तो इस गुल्लक की बचत का उपयोग कर लेते हैं।

हमारी यह धरती भी इस तरह की खूब बड़ी गुल्लक है। मिट्टी की बनी इस विशाल गुल्लक में प्रकृति वर्षा के मौसम में खूब पानी बरसाती है। तब रुपयों से भी कई गुना कीमती इस वर्षा को हमें इस बड़ी गुल्लक में जमा कर लेना चाहिए। हमारे गाँव में, शहर में जो छोटे-बड़े तालाब, झील आदि हैं, वे धरती की गुल्लक में पानी भरने का काम करते हैं। इनमें जमा पानी ज़मीन के नीचे छिपे जल के भंडार में धीरे-धीरे रिसकर, छनकर जा मिलता है। इससे हमारा भूजल भंडार समृद्ध होता जाता है। पानी का यह खज़ाना हमें दिखता नहीं, लेकिन इसी खज़ाने से हम बरसात का मौसम बीत जाने के बाद पूरे साल भर तक अपने उपयोग के लिए घर में, खेतों में, पाठशाला में पानी निकाल सकते हैं।

लेकिन एक दौर ऐसा भी आया, जब हम लोग इस छिपे खज़ाने का महत्व भूल गए और ज़मीन के लालच में हमने अपने तालाबों को कचरे से

© NCERT not to be republished

पाटकर, भरकर समतल बना दिया। देखते ही देखते इन पर कहीं मकान तो कहीं बाज़ार, स्टेडियम और सिनेमा आदि खड़े हो गए।

इस बड़ी गलती की सज़ा अब हम सबको मिल रही है। गर्मी के दिनों में हमारे नल सूख जाते हैं और बरसात के दिनों में हमारी बस्तियाँ डूबने लगती हैं। इसलिए यदि हमें अकाल और बाढ़ से बचना है तो अपने आस-पास के जलस्रोतों की, तालाबों की और नदियों आदि की रखवाली अच्छे ढंग से करनी पड़ेगी। हम जल-चक्र स्रोतों को ठीक से समझें, जब बरसात हो तो उसे थाम लें, अपना भूजल भंडार सुरक्षित रखें, अपनी गुल्लक भरते रहें, तभी हमें ज़रूरत के समय पानी की कोई कमी नहीं आएगी। यदि हमने जल-चक्र का ठीक उपयोग नहीं किया तो हम पानी के चक्कर में फँसते चले जाएँगे।

नवीन शब्द

	शब्द		अर्थ
1.	बेवक्त	=	असमय
2.	भोर	=	दिन निकलने का समय/प्रात: काल/सबेरा
3.	अकाल	=	कमी पड़ना
4.	जलस्रोत	=	वह स्थान जहाँ से पानी की आपूर्ति होती है, जैसे— झील, तालाब आदि
5.	सुरक्षित	=	अच्छी तरह रखा हुआ

© NCERT not to be republished

हमारा पानी

1. इस लेख की पहली पंक्ति फिर से पढ़ो। अब बताओ कि इस पंक्ति में दो बार 'हमारा' शब्द क्यों लिखा गया है? अगर 'हमारा' शब्द न होता तो इस वाक्य के मतलब में क्या अंतर आता?

.....

.....

.....

.....

.....

चित्र

2. इस लेख में जल-चक्र के चित्र के बारे में लिखा है। उसे पढ़कर जल-चक्र का एक चित्र बनाओ।

© NCERT not to be republished

नारा

3. 'जल ही जीवन है।' यह छोटा-सा वाक्य जल यानी पानी के बारे में बहुत-सी बातें बता देता है। आप भी जल के बारे में दो-तीन अच्छे से नारे या स्लोगन बनाकर लिखिए।

.....

.....

.....

सिक्के के पहलू

4. एक सिक्का हाथ में लेकर उसके दोनों पहलू देखिए। बताइए आपने क्या-क्या देखा।

.....

.....

.....

घर के शब्द

कभी भोर-सबेरे।

कुछ लोग अपने घरों में सुबह को भोर या सवेरे बोलते हैं।

5. आप सुबह को अपने घर में क्या बोलते हैं?

.....

.....

6. कुछ ऐसे शब्द लिखिए जो आप सिर्फ़ अपने घर में बोलते हैं, स्कूल में नहीं बोलते।

.....

.....

© NCERT not to be republished

अंतर

7. सूखे और बाढ़ में अंतर बताइए।

सूखा	बाढ़

इ और ई

किताबी

8. इस शब्द में 'इ' की मात्रा भी है और 'ई' की भी। ऐसे ही और शब्द लिखिए जिनमें ये दोनों मात्राएँ हों।

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

जोड़ों के पास

बाल्टियाँ　　मक्खियाँ　　रस्सियाँ

9. इन शब्दों में इ की मात्रा पर ध्यान दो। यह मात्रा अक्षरों के जोड़े अपने अंदर घेर लेती है। है न? अब आप नीचे दिए गए शब्दों को इस तरह बदलो कि उनमें भी इ की मात्रा आ जाए।

पत्ती	बत्ती	बस्ती	नियुक्त	चक्की	भक्त
पत्तियाँ	.....	.....	.....	.....	.....
पत्तियों	.....	.....	.....	.....	.....

10. वर्ग पहेली में से क्रिया शब्द चुनकर लिखो।

म	रो	ना	ह	र
धो	ना	म	ल	ह
आ	प	क	ड़	ना
सी	ना	ह	रा	च
प	ढ़	ना	प	ना

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

शब्द-खेल

11. नीचे लिखे शब्द वर्ग पहेली में ढूँढ़ो और लिखो

रेल	बंदर	फल	कितने	पानी	तराजू	गोल
लंबा	बोल	मुनि	जाता	आता	भर	चार
पक	लात	पकड़ो	पेड़	चूहा	बाजा	पेड़
हाथी	पतंग	लड़की	ऊपर	घर	नाच	मछली

कि	रे	ल	चू	हा	थी	हा	फ	ल	ना
त	चु	प	तं	ग	ल	थ	रा	त	च
ने	न	पा	ऊ	प	र	नी	चे	प	ला
पे	मु	नी	ला	ढ़	भ	र	ना	क	ऊ
ड़	नि	बो	ल	बं	द	र	ल	ड़ो	गा
ब	द	गो	ल	द	ल	ड़	की	आ	या
घ	र	चा	र	लं	बा	जा	ता	ता	रा
र	वा	बं	ए	क	बा	द	ल	पे	ड़
बा	जा	द	क	प	पा	नी	ला	प	तां
म	छ	ली	र	ज	ला	लो	त	रा	जू

© NCERT not to be republished

12. क्रिया का सही रूप लिखकर वाक्य पूरे करो।

(क) बच्चे लुका-छिपी ……। (खेलना)

(ख) मीना आज स्कूल नहीं ……। (जाना)

(ग) अरुण रोज़ सुबह सैर करने ……। (जाना)

(घ) आरती ने पिताजी को चिट्ठी ……। (लिखना)

(ङ) भैया! आप जन्मदिन पर मुझे क्या ……। (देना)

13. टोकरी में से उचित सर्वनाम चुनकर खाली स्थान भरिए।

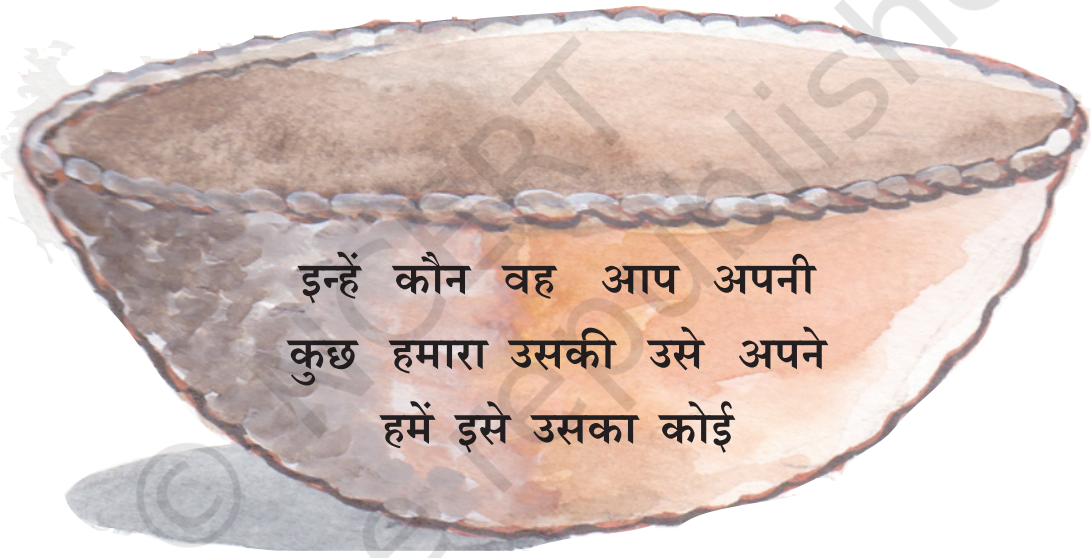

मुकेश चौथी कक्षा में पढ़ता था। …… बहुत शैतान था। वह पेंसिल कभी भी एक दिन से ज़्यादा नहीं चलाता था। …… मम्मी बहुत परेशान होती थीं। …… रोज़ एक नयी पेंसिल देतीं, लेकिन जब …… स्कूल से घर आता तो पेंसिल छोटी उँगली बराबर होती। एक दिन …… कटर मम्मी ने …… पास रख लिया। अब …… क्या करता?

© NCERT not to be republished

कहानी पूरी करो

एक था। उसके पास एक था। एक दिन एक उसका ले गया। को ढूँढ़ने निकला। सुबह का समय था। अपनी मल रहा था। को एक पेड़ पर एक दिखी। ने से पूछा, "क्या तुमने को देखा है?"

ने कहा, "सुबह-सुबह उस दुष्ट को क्यों पूछ रहे हो?" ने कहा, "वह मेरा लेकर भाग गया है।" ने कहा, "अभी तो उगा ही है, घर पर ही होगा।"

के घर की ओर चला। रास्ते में मिला। हाथी ने से पूछा, "क्या तुमने को देखा है, वह मेरा लेकर भाग गया है।" बोला, "वह तो में गया है। कह रहा था कि लाऊँगा।"

की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे मिली। अपनी मूँछ को चाट रही थी। ने से पूछा, "क्या तुमने को देखा है? वह मेरा लेकर भाग गया है" बोली, " अब तो मेरा है। मैनें को खा लिया है।" और दोनों को अपना कह रहे थे। दोनों झगड़े के हल के लिए के पास गए। ने और की बात ध्यान से सुनी। .....

.....

.....

© NCERT not to be republished

.....

.....

.....

14. ऊपर दी गई जगह में कहानी पूरी करो और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दो।

(क) उल्लू ने क्या फैसला किया होगा?

.....

.....

.....

(ख) क्या फैसला हाथी और बिल्ली ने मान लिया होगा?

.....

.....

.....

15. नीचे दी गई कहानी को आगे बढ़ाकर पूरी करो।

एक ..... पर बहुत सारी चिड़िया रहती थीं। वे दिन भर फल व पत्तियाँ खाती थीं। घोंसला बनाने के लिए भी वे ..... का इस्तेमाल करती थीं। एक दिन वहाँ एक नयी ..... उड़ती आयी। .....

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

अध्याय-4

सुनीता की पहिया कुर्सी

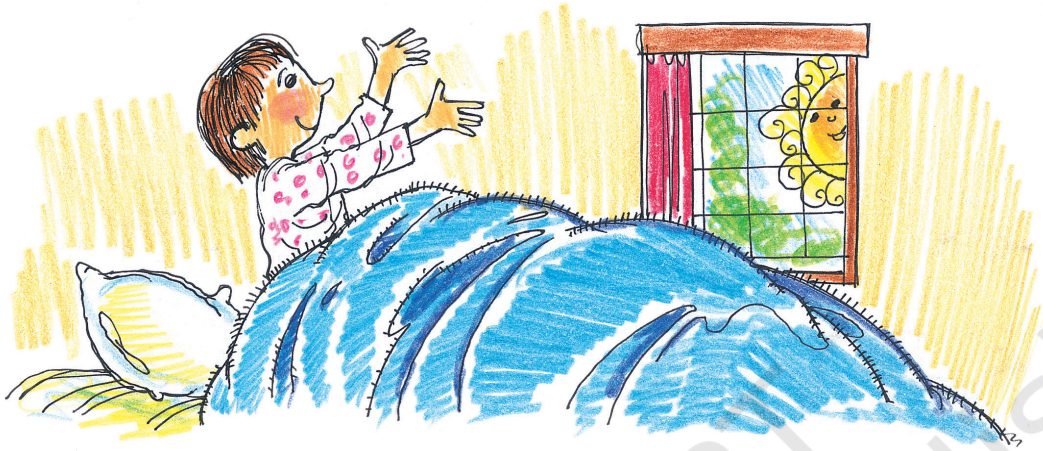

सुनीता सुबह सात बजे सोकर उठी। कुछ देर तो वह अपने बिस्तर पर ही बैठी रही। वह सोच रही थी कि आज उसे क्या-क्या काम करने हैं। उसे याद आया कि आज तो बाज़ार जाना है। सोचते ही उसकी आँखों में चमक आ गई। सुनीता आज पहली बार अकेले बाज़ार जाने वाली थी।

उसने अपनी टाँगों को हाथ से पकड़ कर खींचा और उन्हें पलंग से नीचे की ओर लटकाया। फिर पलंग का सहारा लेती हुई अपनी पहिया कुर्सी तक बढ़ी। सुनीता चलने-फिरने के लिए पहिया कुर्सी की मदद लेती है। आज वह सभी काम फुर्ती से निपटाना चाहती थी। हालाँकि कपड़े बदलना, जूते पहनना आदि उसके लिए कठिन काम हैं, पर अपने रोज़ाना के काम करने के लिए उसने स्वयं ही कई तरीके ढूँढ़ निकाले हैं।

आठ बजे तक सुनीता नहा-धोकर तैयार हो गई।

माँ ने मेज़ पर नाश्ता लगा दिया था। "माँ, अचार की बोतल पकड़ाना", सुनीता ने कहा।

"अलमारी में रखी है। ले लो", माँ ने रसोईघर से जवाब दिया।

© NCERT not to be republished

सुनीता खुद जाकर अचार ले आयी। नाश्ता करते-करते उसने पूछा, "माँ, बाज़ार से क्या-क्या लाना है?" "एक किलो चीनी लानी है। पर क्या तुम अकेले सँभाल लोगी?"

"पक्का" सुनीता ने मुस्कुराते हुए कहा।

सुनीता ने माँ से झोला और रुपए लिए। अपनी पहिया कुर्सी पर बैठकर वह बाज़ार की ओर चल दी।

सुनीता को सड़क की ज़िंदगी देखने में मज़ा आता है। चूँकि आज छुट्टी है, इसलिए हर जगह बच्चे खेलते हुए दिखायी दे रहे हैं। सुनीता थोड़ी देर रुक कर उन्हें रस्सी कूदते, गेंद खेलते देखती रही। वह थोड़ी उदास हो गई। वह भी उन बच्चों के साथ खेलना चाहती थी। खेल के मैदान में उसे एक लड़की दिखी, जिसकी माँ उसे वापस लेने के लिए आयी थी। दोनों एक-दूसरे को टुकुर-टुकुर देखने लगे।

फिर सुनीता को एक लड़का दिखा। उस बच्चे को बहुत सारे बच्चे "छोटू-छोटू" बुलाकर चिढ़ा रहे थे। उस लड़के का कद बाकी बच्चों से बहुत छोटा था। सुनीता को यह सब बिल्कुल अच्छा नहीं लगा।

रास्ते में कई लोग सुनीता को देखकर मुस्कुराए, जबकि वह उन्हें जानती तक

© NCERT not to be republished

नहीं थी। पहले तो वह मन ही मन खुश हुई परंतु फिर सोचने लगी, "ये सब लोग मेरी तरफ भला इस तरह क्यों देख रहे हैं?"

खेल के मैदान वाली छोटी लड़की सुनीता को दोबारा कपड़ों की दुकान के सामने खड़ी मिली। उसकी माँ कुछ कपड़े देख रही थी।

"तुम्हारे पास यह अजीब-सी चीज़ क्या है?" उस लड़की ने सुनीता से पूछा।

"यह तो बस एक...", सुनीता जवाब देने लगी परंतु उस लड़की की माँ ने गुस्से में आकर लड़की को सुनीता से दूर हटा दिया।

"इस तरह का सवाल नहीं पूछना चाहिए फ़रीदा! अच्छा नहीं लगता!" माँ ने कहा।

"मैं दूसरे बच्चों से अलग नहीं हूँ" सुनीता ने दुखी होकर कहा। उसे फ़रीदा की माँ का व्यवहार समझ में नहीं आया।

अंत में सुनीता बाज़ार पहुँच गई। दुकान में घुसने के लिए उसे सीढ़ियों पर चढ़ना था। उसके लिए यह कर पाना बहुत मुश्किल था। आस-पास के सब लोग जल्दी में थे। किसी ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया।

अचानक जिस लड़के को 'छोटू' कहकर चिढ़ाया जा रहा था, वह उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

"मैं अमित हूँ", उसने अपना परिचय दिया, "क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद करूँ?"

"मेरा नाम सुनीता है," सुनीता ने राहत की साँस ली और मुस्कुरा कर बोली, "पीछे के पैडिल को पैर से ज़रा दबाओगे?"

© NCERT not to be republished

"हाँ, हाँ, ज़रूर" कहते हुए अमित ने पहिया-कुर्सी को टेढ़ा करके उसके अगले पहियों को पहली सीढ़ी पर रखा। फिर उसने पिछले पहियों को भी ऊपर चढ़ाया। सुनीता ने अमित को धन्यवाद दिया और कहा, "अब मैं दुकान तक खुद पहुँच सकती हूँ।"

दुकान में पहुँचकर सुनीता ने एक किलो चीनी माँगी। दुकानदार उसे देखकर मुस्कुराया। चीनी की थैली पकड़ने के लिए उसने हाथ आगे बढ़ाया ही था कि दुकानदार ने थैली उसकी गोदी में रख दी। सुनीता ने गुस्से से कहा, "मैं भी दूसरों की तरह खुद अपने आप सामान ले सकती हूँ।"

उसे दुकानदार का व्यवहार बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। चीनी लेकर सुनीता और अमित बाहर निकले।

"लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हैं, जैसे कि मैं कोई अजीबोगरीब लड़की हूँ।" सुनीता ने कहा।

"शायद तुम्हारी पहिया कुर्सी के कारण ही वे ऐसा व्यवहार करते हैं।" अमित ने कहा।

"पर इस कुर्सी में भला ऐसी क्या खास बात है, मैं तो बचपन से ही इस पर बैठकर इसे चलाती हूँ", सुनीता ने कहा।

अमित ने पूछा, "पर तुम इस पर बैठती हो?"

© NCERT not to be republished

"मैं पैरों से चल ही नहीं सकती। इस पहिया कुर्सी के पहियों को घुमाकर ही मैं चल-फिर पाती हूँ, लेकिन फिर भी मैं दूसरे बच्चों से अलग नहीं हूँ। मैं वे सारे काम करती हूँ जो दूसरे बच्चे कर सकते हैं", सुनीता ने कहा।

अमित ने अपना सिर ना में हिलाया और कहा, "मैं भी वे सारे काम कर सकता हूँ जो दूसरे बच्चे कर सकते हैं। पर मैं भी दूसरे बच्चों से अलग हूँ। इसी तरह तुम भी अलग हो।"

सुनीता ने कहा, "नहीं! हम दोनों दूसरे बच्चों जैसे ही हैं।"

अमित ने दोबारा अपना सिर ना में हिलाया और कहा, "देखो, तुम पहिया कुर्सी पर बैठकर चलती हो। मेरा कद बहुत छोटा है। हम दोनों ही बाकी लोगों से कुछ अलग हैं।"

सुनीता कुछ सोचने लगी। उसने अपनी पहिया कुर्सी आगे की ओर खिसकाई। अमित भी उसके साथ-साथ चलने लगा।

सड़क पार करते समय सुनीता को फ़रीदा फिर नज़र आयी। इस बार फ़रीदा ने कोई सवाल नहीं पूछा। अमित झट से सुनीता की पहिया कुर्सी के पीछे चढ़ गया। फिर दोनों पहिया-कुर्सी पर सवार होकर तेज़ी से सड़क पर आगे बढ़े।

फ़रीदा भी उनके साथ-साथ दौड़ी। इस बार भी लोगों ने उन्हें घूरा, परंतु अब सुनीता को उनकी परवाह नहीं थी।

© NCERT not to be republished

सोचो ओर लिखो

1. अगर आपकी कक्षा में सुनीता जैसी कोई बच्ची पढ़ती हो तो आप उसके साथ कैसा व्यवहार करोगे और क्यों?

.....

.....

.....

.....

2. सुनीता को जितने भी लोग मिले, आप किस व्यक्ति के व्यक्तित्व से सबसे ज्यादा प्रभावित हुए और क्यों?

.....

.....

.....

.....

3. आपके अनुसार हम वो कौन-कौन से बदलाव कर सकते हैं जिससे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को कम कठिनाई का सामना करना पड़े?

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

4. आप खुद को बाकी लोगों से कैसे अलग समझते हैं? आप अपनी विशेषताएँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

5. आप विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना कैसे और किस प्रकार से करते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

.....

.....

.....

.....

6. अपने घर के कार्यों में आप कैसे अपना योगदान देते हैं? लिखिए।

.....

.....

.....

.....

शिक्षकों के लिए

पाँच से छह बच्चों का समूह बनाएँ और रोलप्ले के रूप में हर समूह में एक विशेष बच्चे की विशेषताएँ और उसके प्रति समाज का व्यवहार दर्शाएँ।

© NCERT not to be republished

पृष्ठक्रम

7. सुनीता की क्या दिनचर्या थी?

.....

.....

8. सुनीता सुबह कितने बजे उठती थी?

.....

.....

9. चीनी लेने बाज़ार में कौन गया था?

.....

.....

10. सुनीता की मदद किसने और क्यों की थी?

.....

.....

11. फ़रीदा को उसकी माँ ने गुस्से में आकर सुनीता से दूर क्यों हटा दिया?

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

12. यदि आप सुनीता की जगह होते और आपको अपने स्कूल की खेल प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए चुना जाता, तो आप क्या करते? इसके लिए अपने स्कूल के प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए।

दिनांक .....

सेवा में,

.....

.....

.....

विषय — .....

महोदय/महोदया,

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

धन्यवाद।

भवदीय

.....

.....

© NCERT not to be republished

आकलन

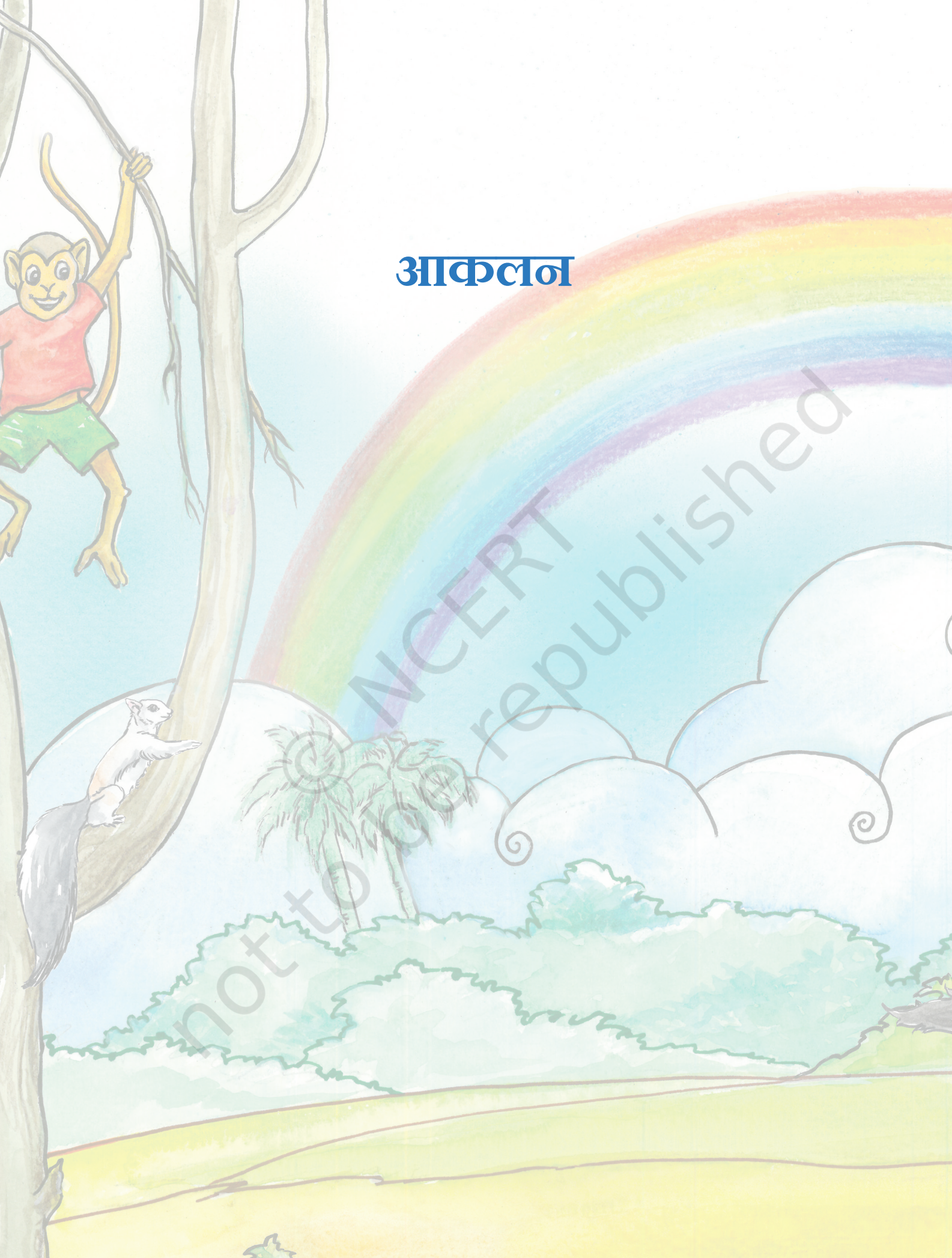

© NCERT not to be republished

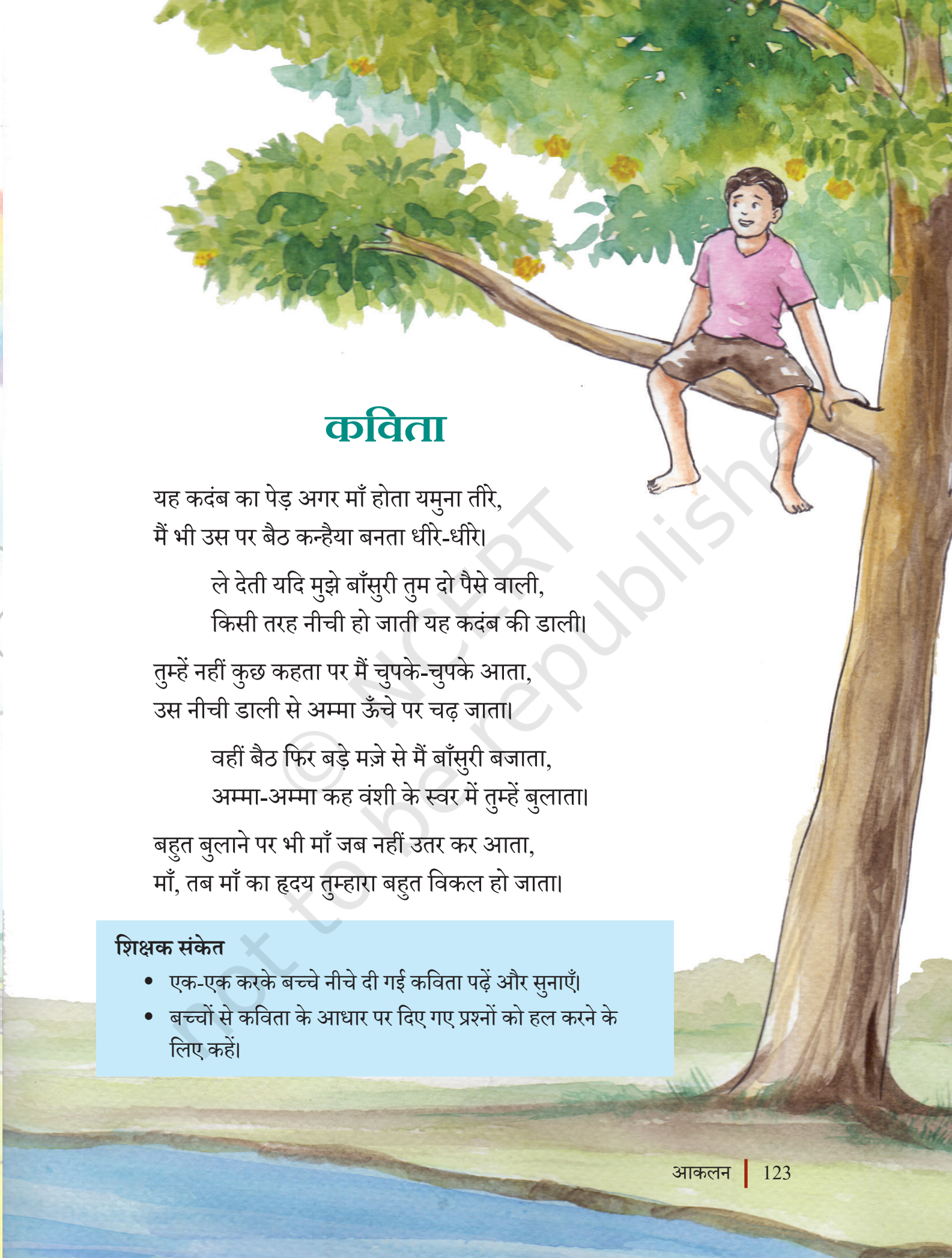

कविता

यह कदंब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे,
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।

ले देती यदि मुझे बाँसुरी तुम दो पैसे वाली,
किसी तरह नीची हो जाती यह कदंब की डाली।

तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं चुपके-चुपके आता,
उस नीची डाली से अम्मा ऊँचे पर चढ़ जाता।

वहीं बैठ फिर बड़े मज़े से मैं बाँसुरी बजाता,
अम्मा-अम्मा कह वंशी के स्वर में तुम्हें बुलाता।

बहुत बुलाने पर भी माँ जब नहीं उतर कर आता,
माँ, तब माँ का हृदय तुम्हारा बहुत विकल हो जाता।

शिक्षक संकेत

- एक-एक करके बच्चे नीचे दी गई कविता पढ़ें और सुनाएँ।
- बच्चों से कविता के आधार पर दिए गए प्रश्नों को हल करने के लिए कहें।

© NCERT not to be republished

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के सबसे सही उत्तरों पर घेरा बनाइए।

(क) पेड़ का नाम क्या है?

- पीपल
- कदंब
- नीम
- अशोक

(ख) कविता में एक नदी का नाम आया है। वह नाम क्या है?

- वंशी
- यमुना
- कन्हैया
- कदंब

(ग) 'यह कदंब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे', रेखांकित शब्द का अर्थ है—

- बीच में
- आस-पास
- किनारे
- ऊपर

(घ) 'विकल' का क्या अर्थ है?

- खुश
- बेचैन
- गरीब
- हैरान

(ङ) इनमें से कौन-सा शब्द संज्ञा नहीं है?

- मैं
- डाली
- अम्मा
- पेड़

© NCERT not to be republished

2. नीचे दिया गया पत्र पढ़िए।

मेरी प्यारी मौसी

सादर प्रणाम

आपने कहा था कि पहुँचते ही चिट्ठी लिखना। इसलिए जल्दी से लिखने बैठ गई।

मैं, अम्मा, मनिकुट्टी और अप्पू भैया आराम से पहुँच गए यहाँ। रेलगाड़ी में बहुत भीड़ थी। पहले तो हमें बैठने के लिए सीट भी नहीं मिली। बाद में मिली तो खिड़की के पास मिल गई। फिर तो कहना ही क्या था! रेलगाड़ी की खिड़की से कितना कुछ दिखता है। हमने समुद्र देखा इसी खिड़की से। मैं बता ही नहीं सकती मौसी कि कितना अच्छा लगा हमें। कुछ-कुछ बुरा भी लग रहा था, यह सोचकर कि हम समुद्र में खेल नहीं सकते। पर देखना भी कितना अच्छा था। अच्छा, अब बस करती हूँ। सबको घर में नमस्ते कहना।

एम. गीतांजलि

अब नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) यह पत्र किसे लिखा गया है?

.....

(ख) पत्र किसने लिखा है?

.....

(ग) 'फिर तो कहना ही क्या था!' पत्र के संदर्भ में इस वाक्य से किस भाव का पता लगता है?

.....

© NCERT not to be republished

(घ) लेखिका को बुरा क्यों लग रहा था?

.....

.....

(ङ) पत्र में आए तीन संज्ञा शब्द लिखो।

.....

.....

(च) आपने भी रेलगाड़ी या बस द्वारा यात्रा की होगी, उसे आधार बनाकर अपने मित्र को पत्र लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

© NCERT not to be republished

3. चित्र देखिए और सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए।

(क) यह एक ..... आदमी है। (बूढ़ा/बूढ़ी)

(ख) यह चारपाई पर ..... है। (खड़ा/बैठा)

(ग) इसके ..... पर पगड़ी है। (सिर/पैर)

(घ) यह आदमी सामने ..... रहा है। (सोच/देख)

(ङ) चारपाई ..... आस-पास घने पेड़ हैं। (के/पर)

4.नीचे दिए गए शब्द किन दो शब्दों के मेल से बने हैं, लिखो।

(क) महोत्सव महा + उत्सव

(ख) सूर्योदय .....

(ग) विद्यालय .....

© NCERT not to be republished

5. नीचे दिए गए रेखांकित वाक्यांशों के लिए दूसरे शब्दों का प्रयोग कीजिए।

(क) तरह-तरह के पक्षी उस पर डेरा डाले रहते थे।

.....

(ख) माँ कोई बात व्यंग्य में कहें, तो वे उबल पड़ते हैं।

.....

(ग) आखिरकार, उनकी सहनशक्ति चूक गई।

.....

(घ) यह देखते ही मेरे हाथ ठिठक गए।

.....

6. आप अपने मोहल्ले में किसी नाटक का आयोजन करने जा रही/रहे हो। लोगों को इसकी सूचना देने के लिए एक नोटिस/सूचना-पत्र बनाओ। सूचना में इन बिंदुओं का ध्यान रखो।

(क) नाटक का नाम

(ख) नाटक का समय

(ग) रचनाकार का नाम

(घ) स्थान, जहाँ नाटक खेला जाना है।

© NCERT not to be republished

7. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

(क) नौ दो ग्यारह होना

.....

.....

(ख) आँखों का तारा होना

.....

.....

8. नीचे लिखे शब्दों के दो-दो अर्थ हैं। दोनो अर्थों में शब्द का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाओ।

(क) उत्तर
- जवाब .....
- एक दिशा .....

(ख) भाग
- हिस्सा .....
- दौड़ने की क्रिया .....

(ग) मत
- विचार .....
- नहीं .....

© NCERT not to be republished

(घ) टाँग
- शरीर का एक अंग ....
  ....
- लटकाने की क्रिया ....
  ....

(ङ) पूर्व
- पहले ....
  ....
- एक दिशा ....
  ....

9. कोष्ठक में दिए गए निर्देश के अनुसार वाक्य बदल कर लिखो।

(क) यह फ़िल्म बड़ों और .... सभी को पसंद आएगी।
(रेखांकित का विलोम)

(ख) अपनी आवश्यकता को सीमित किया जा सकता है।
(रेखांकित का बहुवचन)

....

(ग) शुभा मुद्‌गल एक प्रसिद्ध गायिका हैं और शांतनु प्रसिद्ध .... हैं। (रेखांकित का पुल्लिंग)

(घ) आज का दिन बहुत अच्छा है। कल का दिन भी अच्छा ....। (रेखांकित का भूतकाल)

(ङ) पी.टी. उषा एक प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं। .... उड़न परी के नाम से भी जानी जाती हैं। (सर्वनाम)

© NCERT not to be republished

10. नीचे दिए गए कैलेंडर को देखो और प्रश्नों के सही उत्तर दो।

जनवरी 2011						
रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार
					1 नववर्ष	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14 लोहड़ी	15 मकर संक्रांति	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26 गणतंत्र दिवस	27	28	29	30 शहीद दिवस
31						

(क) जनवरी माह, 2011 की पहली तारीख को कौन-सा दिन था?

.....

(ख) 30 जनवरी किस रूप में मनायी जाती है?

.....

© NCERT not to be republished

(ग) सन 2011 के जनवरी माह में कितने रविवार थे?

.....

(घ) लोहड़ी किस दिन मनायी गई?

.....

(ङ) मकर संक्रांति किस दिन के बाद मनायी जाती है?

.....

(च) इस माह का अंतिम शुक्रवार किस तारीख को था?

.....

© NCERT not to be republished

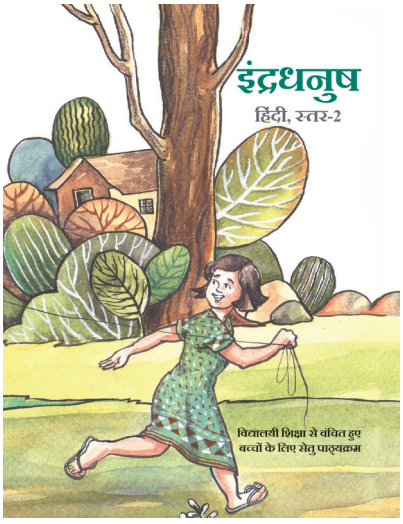

₹175.00 / पृष्ठ 128
कोड —23087

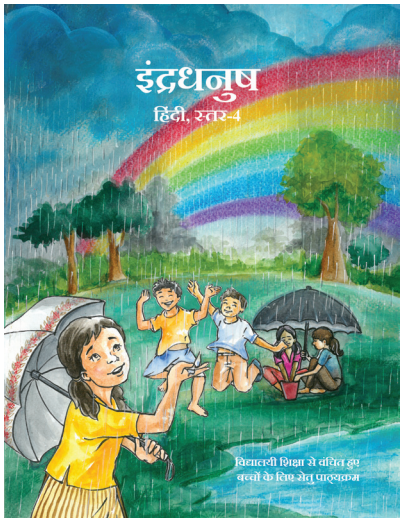

₹220.00 / पृष्ठ 168
कोड —23094

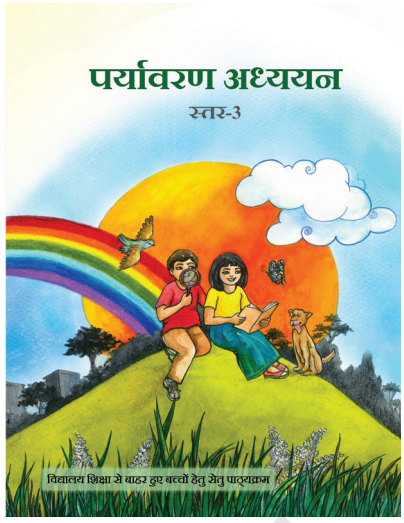

₹220.00 / पृष्ठ 164
कोड —23092

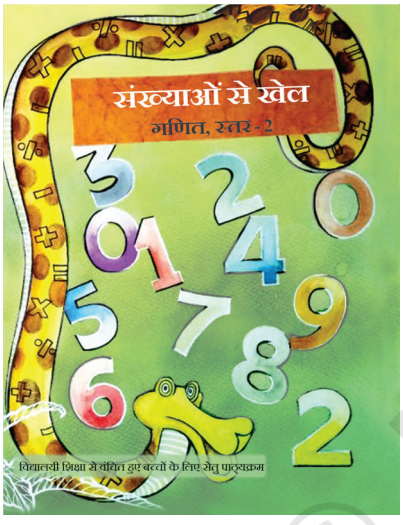

₹240.00 / पृष्ठ 182
कोड —23088

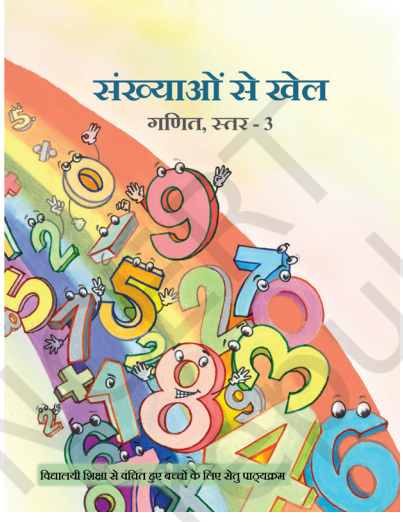

₹250.00 / पृष्ठ 190
कोड —23091

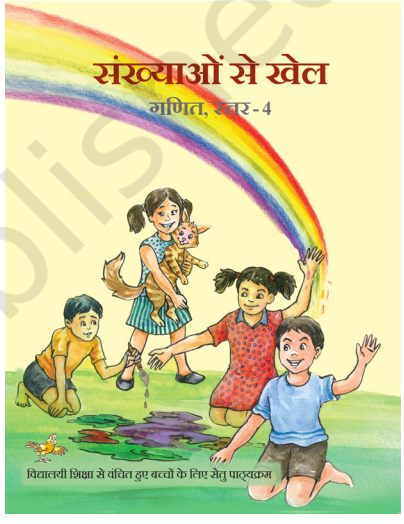

₹225.00 / पृष्ठ 170
कोड —23095

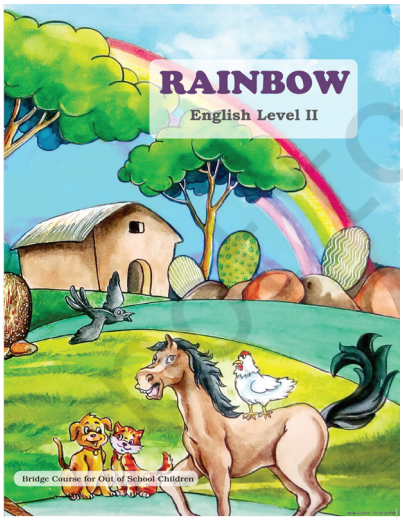

₹245.00 / pp. 186
Code —23086

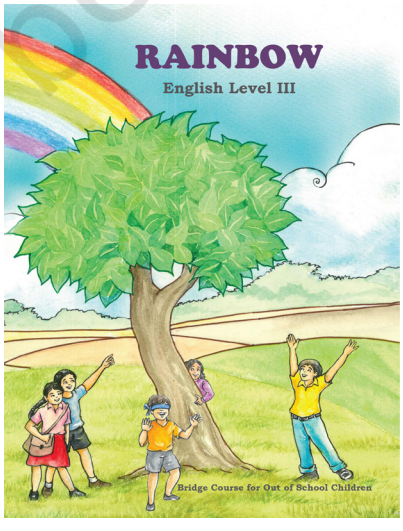

₹155.00 / pp. 106
Code —23089

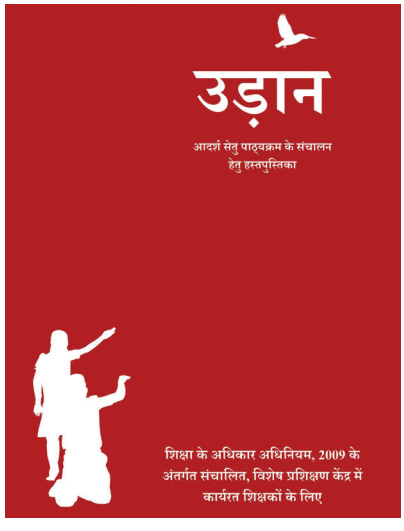

₹200.00 / पृष्ठ 254
कोड —23096

© NCERT not to be republished

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।

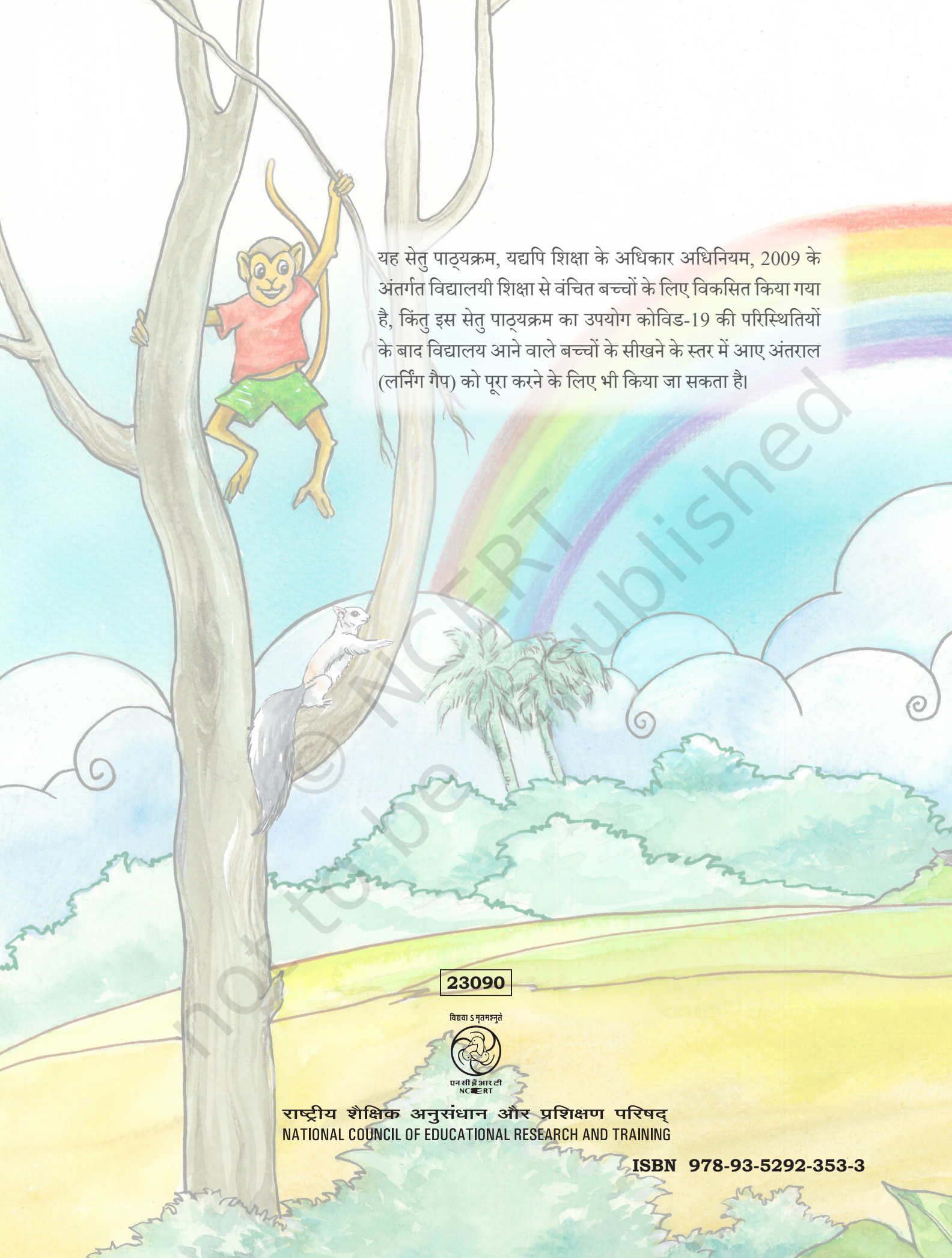

यह सेतु पाठ्यक्रम, यद्यपि शिक्षा के अधिकार अधिनियम, 2009 के अंतर्गत विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों के लिए विकसित किया गया है, किंतु इस सेतु पाठ्यक्रम का उपयोग कोविड-19 की परिस्थितियों के बाद विद्यालय आने वाले बच्चों के सीखने के स्तर में आए अंतराल (लर्निंग गैप) को पूरा करने के लिए भी किया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

23090

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-353-3